Pearls of Ramayana

रामायण के मोती

प्रधान सम्पादक: ओमप्रकाश गुप्ता

Chief Editor: Omprakash Gupta

श्री राम चरित भवन

Shri Ram Charit Bhavan

रामायण के मोती

Pearls of Ramayana

जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।
बंदउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि।।

सहायक सम्पादक Associate Editors

प्रभुदयाल मिश्र Prabhudayal Mishra
मधु चतुर्वेदी Madhu Chaturvedi
रजत अग्रवाल Rajat Agrawal
राम मल्लिक Ram Mallik
सी. कामेश्वरी C. Kameswari
सुभाष शर्मा Subhash Sharma

प्रबंध सम्पादक Managing Editor

शिवप्रकाश अग्रवाल Shivprakash Agrawal

प्रधान सम्पादक Chief Editor

ओमप्रकाश गुप्ता Omprakash Gupta

प्रकाशक
श्री राम चरित भवन
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.
Publisher
Shri Ram Charit Bhavan
Houston, USA

प्रथम संस्करण 2021
First Edition 2021

ISBN: 978-1-7362088-1-6

पुस्तक में निहित विषयवस्तु, तथ्य, विचार अथवा विश्लेषण के लिए उसके लेखक पूर्ण रूप से उत्तरदायी हैं। इसके समस्त अधिकार भी लेखकों के पास सुरक्षित हैं। प्रकाशक अथवा संपादक मंडल की विषयवस्तु के प्रति सहमति और उत्तरदायित्व नहीं है। पुस्तक या उसके किसी भी अंश का पुनर्प्रस्तुतिकरण किसी भी माध्यम से स्वीकार्य नहीं होगा। चाहे यांत्रिक माध्यम हो या इलैक्ट्रॉनिक; जानकारी का संचयन लिखित आज्ञा लिए बिना नहीं किया जाना चाहिए। केवल एक समीक्षक को समीक्षा में आंशिक उदधृत करने की छूट रहेगी।

The contents, facts, views, and analysis in this work are entirely the responsibility of the authors and they reserve all rights. Neither the editorial board nor the publisher is responsible of contents by the authors. No part of this book may be reproduced in any form on by an electronic or mechanical means, including information storage and retrieval systems, without permission in writing, except by a reviewer who may quote brief passages in a review.

प्रकाशन सहयोगी Publishing Sponsors
राम-सरस्वती मल्लिक Ram and Saraswati Mallik
कपिल जोशी Kapil Joshi
संजीव शंकर दुबे Sanjiva Shankar Dubey
विनीता मिश्रा Vinita Mishra

॥ जय सिया राम ॥

हरि अनंत हरि कथा अनंता। कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता।। (मानस 1.140. C5)

गोस्वामी तुलसीदास जी ने बालकांड के आरंभ में ही हमें बताया कि परमात्मा अनंत हैं, उनकी कथाएँ भी अनंत हैं; संत जन उन कथाओं को विविध प्रकार से कहते हैं, सुनते हैं। लगभग 500 वर्ष पूर्व कही गई यह बात आज भी उतनी ही सार्थक, उचित और प्रासंगिक है, जितनी वह तब थी। भगवान राम की कथा विविध प्रकार से हजारों वर्षों से कही जा रही है। महर्षि वाल्मीकि ने सर्वप्रथम राम कथा को काव्य रूप में लिखा जो रामायण के नाम से हजारों सालों बाद भी बड़े आदर से पढ़ी जाती है। चूँकि रामायण विश्व की प्रथम काव्य रचना थी, इसके रचयिता वाल्मीकि ऋषि विश्व के आदिकवि बने और रामायण आदिकाव्य।

रामायण से प्रेरित होकर अनगिनत लेखकों और कवियों ने अपनी-अपनी मति के अनुसार विविध भाषाओं में भगवान राम की कथा का वर्णन किया है। जनभाषा अवधी में लिखी गोस्वामी तुलसीदास कृत 'श्री रामचरितमानस' पहले भारत में, फिर समस्त विश्व में अत्यधिक प्रचलित हुई। आज भी विश्व के कोने-कोने में श्री रामचरितमानस का अध्ययन व पाठ होता है।

महर्षि वाल्मीकि और गोस्वामी तुलसीदास व अन्य सैंकड़ों संतों से प्रेरित होकर भगवान राम की कथा को जानने, समझने और उसका प्रचार-प्रसार के लिए 2008 में ह्यूस्टन, अमेरिका में 'श्री राम चरित भवन' संस्था ने जन्म लिया। संस्था की विविध गतिविधियों में एक थी 'श्री राम चरित मंथन', जिसने शनै: शनै: वार्षिक गोष्ठी का रूप लिया। श्री राम चरित भवन ने रामायण में शोध-कार्य को बढ़ावा देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन आरंभ किया। पहला अधिवेशन बैंगलोर में 2015 में हुआ। इसके बाद दो अधिवेशन जयपुर और अहमदाबाद में हुए। अगला अधिवेशन कोरोना-काल के कारण अनलाइन स्वरूप में अप्रैल 2021 में होने जा रहा है।

इन अधिवेशनों में देश-विदेश के अनेक विद्वगण ने श्री राम के चरित्र तथा राम-कथा पर अपने-अपने विश्लेषणात्मक विचार प्रस्तुत किए। रामकथा की अंतर्कथाओं का शोधात्मक दृष्टिकोण व आध्यात्मिक अवधारणा भी प्रस्तुत की गई। गणमान्य विचारकों के सर्वथा नवीन विचारों को रामप्रेमियों व श्रद्धालुओं द्वारा अत्यधिक सराहना मिली। इन अधिवेशनों की अपार सफलता से यह भाव जागृत हुआ कि इन में प्रस्तुत किए गए उत्कृष्ट विचारों का एक पुस्तक रूप में संकलन हो जिससे अन्य सुधीजन भी इससे लाभान्वित हो सकें। फलस्वरूप, इस पुस्तक की रचना हुई, जो आप के करकमलों में है। रामायण के मोती में 28 आलेख हैं, जिनका चयन सम्पादक मण्डल के सदस्य व कई अन्य विद्वान साथियों ने बड़ी सावधानी और विवेक के साथ

किया है। इन में 16 हिन्दी में और 12 अंग्रेजी में हैं। ये लेख 5 देशों (भारत, यूनाइटेड किंगडम, यू.ए.ई., मलेशिया और यू.एस.ए.) में बसे रामायण प्रेमियों द्वारा लिखे गए हैं। इससे यह बात तो सिद्ध होती है कि राम और रामायण मात्र भारत के नहीं अपितु विश्वव्यापी हैं।

अनेक दिव्य आत्माओं के प्रोत्साहन और समर्थन के बिना 'रामायण के मोती' का गठन संभव नहीं था, इस प्रक्रिया में उन सबका मैं बड़ा ऋणी हुआ। उन सब लेखकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस संग्रह के लिए अपनी-अपनी रचनाएँ भेजीं, और उन से क्षमाप्रार्थी हूँ जिनकी रचनाएँ हम सम्मिलित न कर सके। सब से अधिक ऋणी तो अपने संपादक मित्रों का हूँ जिन के कारण यह संकलन संभव हुआ। आदरणीय श्री प्रभु दयाल मिश्र, डॉ मधु चतुर्वेदी, डॉ रजत अग्रवाल, श्री राम मल्लिक, डॉ सी. कामेश्वरी, डॉ सुभाष शर्मा, आप सब के घोर व अथक परिश्रम के परिणाम से ही यह 'रामायण के मोती' संभव हुआ है। आप के योगदान को सराहने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। भगवान श्री रामचंद्र जी आप सब पर सदैव अनुकंपा बनाएँ रखें, यही मेरी हार्दिक प्रार्थना है।

अंत में, अपने साकेतवासी माता-पिता और सभी गुरुओं के चरण कमलों को सादर प्रणाम करता हूँ जिनके आशीर्वाद के बिना मेरे जीवन में कुछ भी संभव नहीं। यद्यपि पूरा प्रयास रहा है कि पुस्तक में त्रुटियाँ न रहें, तथापि जो भी त्रुटियाँ रह गईं हों उनके लिए मैं अकेला दोषी हूँ, अत: क्षमाप्रार्थी हूँ। 'रामायण के मोती' के विषय में आपके विचारों की प्रतीक्षा रहेगी। जय सिया राम।

सादर,
ओमप्रकाश गुप्ता
प्रधान सम्पादक
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.
रामनवमी 2021

अनुक्रमणिका

राम और राजधर्म 1
रामलक्ष्मण गुप्त

मानस के तुलसी और जन मानस के गांधी का रामराज्य 5
मधु चतुर्वेदी

सीता का परित्याग: मर्यादा की पराकाष्ठा 11
विनीता मिश्रा

राम चरित के विकास में नारियों का योगदान 17
सरस्वती मल्लिक

हनुमानजी की व्यक्ति पहचानने की कला 27
आदित्य शुक्ल

त्यागहु तम अभिमान 33
अलका प्रमोद

विश्व में रामकथा की पताका 39
राजेश श्रीवास्तव

हरि अनंत हरिकथा अनंता 46
शैल अग्रवाल

रामराज्य की पूर्व पीठिका भरत-राज्य 55
प्रभुदयाल मिश्र

रावण का लक्ष्मण को नीति-ज्ञान 60
मंगलेश मुजमेर 'मंगल'

महात्मा गाँधी एवं रामायण 63
सी. कामेश्वरी, सपना सिंह

"हनुमान चालीसा" का विश्लेषणात्मक अध्ययन 68
राजीव रंजन

रामायण में वर्णित नदियाँ 73
सी. कामेश्वरी, के. मीना रानी

मानस की रामगीता और भगवद्गीता का तुलनात्मक विवेचन 82
सरस्वती मल्लिक

अग्र से समग्र तक 87
आरती 'लोकेश'

होइहि सोइ जो राम रचि राखा 92
Vinay Sharma, Rajat Agrawal

Ramcharitmanas: A Book of Knowledge for Managers 98
Sanjiva Shankar Dubey

Ram Rajya and Gandhi's Vision of India 101
Ram Mohan Lal Mallik

Rāmakathā and Concept of Rāmarājya 107
Vijaya Sati

Ramayana and Conservation of Nature 111
Kapil Kumar Joshi

Glory of Lord Hanuman 121
Ram Mohan Lal Mallik

Father's Order verses Brother's Desire 127
Atul Kumar Gupta

Ram Rajya Vision: An Analytical Perspective 133
Subhash Sharma

Achieving Sustainability through Gandhi's RamRajya 141
Rajat Agrawal, Vinay Sharma

Eight Kingdoms for Eight Princes 146
Saroj Bala

Relevance of Ramayana in Modern Times 155
Vijay Kumar Mehta

Mahatma and Rama – The Global Icons 160
K. Meena Rani

Jatayu and His Lessons on Selfless Service 165
Balakrishnan Muniapan

राम और राजधर्म

रामलक्ष्मण गुप्त

प्रो. रामलक्ष्मण गुप्त शिक्षा, अध्यात्म एवं संस्कृति के क्षेत्र में एक सुपरिचित नाम है। एक अंग्रेजी प्राध्यापक के रूप में अपनी जीवन वृत्ति प्रारम्भ करने वाले कालांतर में उद्योग-प्रबंधन से जुडने वाले श्री गुप्त तुलसी मानस संस्थान के अध्यक्ष एवं संस्थान की द्विमासिक पत्रिका तुलसी सौरभ के संपादक हैं। संस्थान के माध्यम से उन्होंने अनेक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पुस्तकों का प्रकाशन किया है। सांस्कृतिक विषयों में उनकी गहरी रुचि है और संस्कृति के पुष्पन, पल्लवन एवं संरक्षण में वे विशेष रूप से प्रयासरत रहते हैं।

जन सामान्य के मन में एक राजा की जो छबि सामान्यत: उभरती रही है वह तो एक वैभव सम्पन्न, बिलासिता में आकंठलिप्त, ऐश्वर्य, प्रवल शक्ति, एकाधिकारपूर्ण प्रभुत्व आदि के स्वामी के रूप में रही है।

राम राज्य के आदि प्रणेता राम तो इससे सर्वथा भिन्न हैं। राम एक ऐसे तपोमूर्ति राजा हैं जिनके लिए प्रजा-हित सर्वोपरि है। वह तो प्रजा के लिए ही जीते हैं ऑर उनके कर्म का आधार परोपकार है, सेवा है। ‘राजा राम’ का अर्थ है कल्याणकारी एवं रक्षक राम, जन-सेवक राम, आर्तजन की पीड़ा हरनेवाले राम। राम कहते भी हैं:

परहित बस जिनके मन माहीं । तिन्ह कहुँ जग दुर्लभ क्छु नाहीं ॥

शुक्राचार्य अपने ग्रंथ ‘नीतिसार’ में कहते हैं कि “न राम सद्दशो राजा पृथिव्यां नीतिवान् भूत्” ‘राम के समान राजा पृथ्वी पर न कोई हुआ है ऑर न कभी होना संभव ही है।’ यह भी लिखा है: “नदीषु गंगा नृपतौ च राम:” यानी नदियों में गंगा और राजाओं में राम सद्दश कोई दूसरा इस पृथ्वी पर आज तक नहीं हुआ।

राम जिन सिद्धांतों का पालन करते हैं, जिनपर चलते हैं वे उनके द्वारा प्रतिपादित कोई नए सिद्धान्त नहीं हैं। वह ‘श्रुति पथ पालक धर्म धुरंधर’ हैं, शास्त्रों ने जो पथ निर्धारित किया है वही राम को स्वीकार्य पथ है। वस्तुत: रामराज्य का प्रमुख साधक तत्व है—राजा का आचरण। राम अपने आचरण के द्वारा ही उन आदर्शों के बीज बोते हैं जो ‘रामराज्य’ के विशाल वृक्ष का रूप धारण करता है। राज्य का रूप निर्धारण राजा के व्यक्तित्व पर निर्भर करता है। उसका आदर्श वैयत्तिक व्यवहार ही समाज का उन्नायक होता है।राम जिन आदर्शों पर चलने और उनपर आचरण करने के लिए दूसरों को निर्देशित करते हैं वे उनपर दृढ़ता से स्वयं भी आचरण करते हैं। यही कारण है कि जब आदि कवि वाल्मीकि ने अपने महाकाव्य रामायण में राम के द्वारा कैकेयी को यह कहलवाया कि 'राम: द्विर्नाभिभाषते' तो उनका मन्तव्य स्पष्ट था कि राम 'मनसा वाचा कर्मणा' सदैव एकरूप हैं। जब हम 'राम और राजधर्म' विषय को लेकर चर्चा करते हैं तो इस सत्य का साक्षात्कार हमें हो जाता है।

राम चरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास ने स्थान-स्थान पर स्वयं राम के द्वारा राज धर्म का सुस्पस्ट रूप प्रस्तुत कराया है। मानस के अयोध्या काण्ड का प्रसंग हैं। कैकेयी द्वारा राजा दशरथ से दो वरदान मांगने पर राम वनवास जाने से पूर्व माता कौशल्या से विदा लेने हेतु पहुंचे हैं।सीता भी साथ जा रहीं हैं। भाई लक्ष्मण को जब यह पता चलता है तो वह भी साथ चलने के लिए कृतसंकल्प हैं। राम के सामने विकट परिस्थिति है।दो भाई- भरत और शत्रुघ्न अयोध्या में नहीं हैं, वे ननसाल में हैं। राजा दशरथ अपने जीवन की सबसे भयावह परिस्थिति में हैं, वे एक प्रकार से मूर्छाबस्था में हैं।ऐसी स्थिति में राम सोचते हैं कि यदि लक्ष्मण भी वन जाते हैं तो अयोध्या को, प्रजा को यानी राज्य-व्यबस्था को कौन सम्हालेगा। वे लक्ष्मण को राज धर्म समझाते हुए कहते हैं कि भाई! तुम्हें अयोध्या में रहकर सारी राज्य व्यबस्था सम्हालनी चाहिए क्योंकि 'जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। नृप सो अबसि नरक अधिकारी।।' इसे राजधर्म का प्रथम सिद्धान्त कह सकते हैं। यदि प्रजा दुखी है तो राजा अपने कर्तव्य से विमुख है, वह पापी है, उसे तो अपने पाप का फल भोगने हेतु नरक जाना पड़ेगा। यह अर्द्धाली राजधर्म की प्रारम्भिक व्याख्या कही जा सकती है। राजा का सबसे बड़ा धर्म यही है कि उसके राज्य की प्रजा को कोई कष्ट न हो विशेषकर उसके स्वयं के आचरण से। राम प्रजा के लिए चिंतित हैं, वे चाहते हैं कि लक्ष्मण अयोध्या में ही रहकर प्रजा की देखभाल करें, अन्यथा राज्य व्यवस्था के सुचारुरूप से संचालन न होने पर जन-जन दुखी होंगे और इस सबके लिए वे स्वयं ही उत्तरदायी होंगे।

राम धरम धुरंधर हैं। कह सकते हैं कि राम का राजधर्म ‘रामधर्म’ ही है। भरत का यह कथन: ‘चाहिअ धरमसील नरनाहू’ राजधर्म के सत्य का ही उदघाटन है। और वाल्मीकि कहते हैं: ‘रामो विग्रहवान् धर्म: साधु: सत्यपराक्रम:’ यही कारण है कि राम नीतिवान हैं,उनमें चारों नीतियों-साम,दाम,दण्ड,भेद के प्रयोग की अद्भुत क्षमता है। राम ने अंगद से जानना चाहा था कि वह रावण के चार मुकुट कैसे प्राप्त कर सके तो अंगद ने कहा:

सुनु सर्वज्ञ प्रनत सुखकारी। मुकुट न होहिं भूप गुन चारी।।
साम दाम अरु दंड बिभेदा। नृप उर बसहिं नाथ कह बेदा।।

नीति धर्म के चरन सुहाए। अस जिय जानि नाथ पहिं आए।।

राम प्रजा के प्रति अपने कर्तव्य का कभी भी विस्मरण नहीं करते। वन जाते हुए भी सुमंत्र के द्वारा भरत को संदेश भेजते हैं:

कहब सँदेश भरत के आएँ। नीति न तजिअ राजपाद पाएँ।।
पालेहु प्रजहि करम मन बानी। सेएहु मातु सकल सम जानी।।

मनसा, वाचा, कर्मणा प्रजा के पालन की जो बात भरत को कहलवाई वही सब स्वयं अपने आचरण में धारण कर प्रजा की सेवा की।

अयोध्याकाण्ड के चित्रकूट प्रसंग में गोस्वामी तुलसीदास ने जिस सूक्ष्मतर रूप में मात्र दो दोहों में राम के श्री मुख से भरत को जो कुछ व्याख्यायित कराया है उसे राजधर्म का सार कह सकते हैं। वे दोहे हैं-

सेवक कर पद नयन से मुख सो साहिबु होइ।
तुलसी प्रीति कि नीति सुनि सुकबि सराहहिं सोइ॥ आयो॰306

मुखिआ मुखु सो चाहिए खान पान कहुं एक।
पालइ पोषइ सकल अँग तुलसी सहित बिबेक॥ आयो. 315

राजधर्म सरबसु एतनोई । जिमि मन माहँ मनोरथ गोई॥ आयो॰ 316-1

दोहा संख्या 306 में मुख को साहब (मुख्य पदाधिकारी) की संज्ञा दी गई है तथा हाथों, पैरों व नेत्रों को सेवक बताया गया है। शरीर के इन अंगों में कितना अद्भुत आपसी सहयोग होता है यह हम सब प्रत्यक्ष प्रतिदिन अनुभव करते हैं। नेत्र देखते हैं और हाथ-पैर सारे कार्य पूरा करते हैं। राज्य के भी सात अंग माने गए हैं:

स्वाम्यमात्यश्च राष्ट्रं च दुर्गं कोशो बलं सुहृत।
परस्परोकारीदं सप्तांगं राज्यमुच्यते ॥

स्वामी (सिर), आमात्य (नैत्र), मित्र (कान), कोश (मुख), राष्ट्र (पैर), दुर्ग (भुजाएँ), सेना (मन) किसी भी राज्य के सुचारु संचालन के लिए इन सातो अंगों को स्वयं स्वस्थ रहना अत्यावश्यक है।

शरीर में मुख की ग्रहण और वितरण की अद्भुत क्षमता है। राम मुख को राजा की भूमिका में देखते हैं; मुख जो कुछ ग्रहण करता है उसके द्वारा सभी अंगों का समान रूप से बिना भेद भाव के विवेकपूर्ण पालन-पोषण किया जाता है। राजा को भी इसी तरह अपनी प्रजा का पालन-पोषण करना चाहिए। राजा करादि प्रजा से ग्रहण करता है तथा उस सबको प्रजा के हित में ही विवेकपूर्ण तरीके से लगा देता है।यहाँ विवेक शब्द बहुत महत्वपूर्ण है। राजा को यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि कहाँ किस बस्तु की कब कितनी आवश्यकता है। जैसे शरीर के विभिन्न अंगों को भिन्न भिन्न मात्रा में भिन्न भिन्न प्रकार की खाद्य सामग्री की जरूरत होती है उसी प्रकार प्रजा के विभिन्न बार्गों को अलग अलग प्रकार की बस्तुओं की जरूरत होती है।

तुलसीदासजी ने दोहवली में एक दोहा लिखा है जिसमें भाग्य से प्राप्त श्रेष्ठ राजा की कल्पना सूर्य के रूप में की गई है:

बरषत हरषत लोग सब करषत लखै न कोइ।
तुलसी प्रजा सुभाग ते भूप भानु सो होइ॥ दो॰ 508

सूर्य जब जलासयों से जल खीचता है, जल ग्रहण करता है तो जलासयों तक को भी पता नहीं चलता कि कब उनसे जल लेलिया गया । पर जब वही जल बादल बरसातें हैं तब सभी को

हर्ष होता है। जब कोई राजा करादि का प्रजा से इस तरह संचय करता है कि प्रजाजनों को कोई कष्ट नहीं होता और उसी कर राशि को प्रजाजनों के हितार्थ उदारता के साथ व्यय करता है तो सभी को हर्ष होता है। राजा ऐसा ही होना चाहिए। हाँ, ऐसा राजा मिलता भाग्य से ही है।

राम ने अपने भाइयों, लक्ष्मण तथा भरत को जो कुछ कहा उसे उन्होने राजा राम के रूप में अपने आचरण में जिस दक्षता और विवेक के साथ प्रकट किया वह युगों-युगों से लोगों के लिए आदर्श बना हुआ है। जिस रामराज्य का वर्णन तुलसीदास ने किया है वह विश्वभर के लिए आदर्श है।

राम राज बैठें त्रैलोका। हरषित भए गए सब सोका।।
बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप बिषमता खोई।।

जिसके सिंहासन पर बैठने से सभी के शोक विदा ले लें, आपसी वैरभाव समाप्त होजाय और जिसके प्रताप से सामाजिक विषमता मिट जाय ऐसा राजा तो बड़े भाग्य से ही मिलता है।'

राम ने जिस राजधर्म के संबंध में लक्ष्मण तथा भरत को उपदेश दिया उसे राम ने स्वयं राजगद्दी पर आसीन होने पर अपने आचरण में ऐसे त्याग और समर्पण के साथ प्रकट किया कि रामराज्य सम्पूर्ण विश्व के लिए अनुकरणीय बन गया। राम चरित मानस के उत्तर कांड में तुलसीदास ने जिस रामराज्य का वर्णन किया है उसमें सब नर-नारी परस्पर प्रेम करते हैं, स्वधर्म का पालन करते हैं और कर्तव्य परायण हैं। राम के पुण्यप्रताप से सब ओर सुख संपन्नता है।

रामराज्य राजतंत्र होते हुए भी प्रजातन्त्र के गुणों से परिपूर्ण है। राम के लिए राज्यसत्ता निरंकुश नहीं है। राज्यसत्ता के ऊपर उसकी नियंत्रक एवं नियामक लोकसत्ता होती है। राम लोकचेतना के प्रतीक हैं। लोकमत राम के लिए सदैव सर्वोपरि था। वे लोगों से कहते हैं कि 'मैं कुछ अनीति करूँ तो आप लोग निर्भय होकर मुझे रोक सकते हैं:

जो अनीति कछु भाषों भाई। तो मोहि बरजेउ भय बिसराई।।

गोस्वामी तुलसीदासजी ने लिखा है और मुनि वसिष्ठ से स्पष्ट कहलवाया है कि नीति, प्रेम, परमार्थ और स्वार्थको राम के समान यथार्थ रूप में कोई नहीं जानता। वे नीति के परमज्ञाता हैं चाहे वह राजनीति हो या धर्मनीति।

नीति प्रीति परमारथ स्वारथु। कोउ न राम सन जान जथारथु।।

मानस के तुलसी और जन मानस के गांधी का रामराज्य

मधु चतुर्वेदी

मान्यता प्राप्त स्वतन्त्र पत्रकार, लेखिका, सौ से अधिक सामयिक लेख, व्यंग्य लेख, कविता विविध पत्रिकाओं में प्रकाशित। आकाशवाणी लखनऊ, आकाशवाणी गांतोक, दूरदर्शन लखनऊ एवं गोरखपुर से नियमित वार्ताएँ। दूरदर्शन गोरखपुर, बंगलौर, सिंगापूर इंडोनेशिया, कोलम्बो में काव्य पाठ। काव्य संग्रह 'सीधी–सीधी, आड़ी तिरछी, कुछ ऊपर की' हिदी वांग्मय निधि से प्रकाशित 'लखनऊ छावनी का इतिहास', बाल कलरव कविता संग्रह, दो बाल कहानी संग्रह, एवं बाल कविता संग्रह का सम्पादन।

"त्वदंध्री मूल ये नराः। भजंति हीन मत्सरा: ।।
पतंतिनो भवार्णवे। वितर्क वीचि संकुले ।।
विविक्त वासिना सदा। भजंति मुक्तये सदा ।।
निरस्य इंद्रियादिकं। प्रयाति ते गतिं स्वकं ।।"

जो मत्सर रहित होकर आपके चरण कमलों का सेवन करते हैं, वे तर्क-वितर्क, संदेह के समुद्र में नहीं गिरते। एकान्तवासी मुक्ति के लिये इन्द्रियादी का निग्रह करके, वे प्रसन्नता पूर्वक स्वकीय गति [आत्म रूप] प्राप्त होते हैं।

अरण्यकाण्ड में गोस्वामी तुलसीदास जी की यह स्तुति जननायक महात्मा गांधी की साधना बन जाती है और उनकी त्याग की यह क्रमवार यात्रा उन्हें व्यक्ति से उठाकर महात्मा बना देती है।

आज से ५,००० पूर्व उत्तरभारत की नगरी अयोध्या में इक्ष्वाकु वंश के प्रतापी राम का जन्म एक राजकुमार के रूप में हुआ, वो राम की कथा महर्षि वाल्मीकि की रामायण से चलकर गोस्वामी तुलसीदास के रामचरित मानस तक उन मर्यादा पुरुषोत्तम राम की कथा बन गई, जिनका 'रामराज्य' एक अच्छी व्यवस्था, जाति-धर्म, ऊँच-नीच, गरीब-अमीर के भेदभाव से रहित समाज का पर्याय बन गया। वहाँ केवल राज्य कर्मचारियों के लिये नियम-कानून या आचरण की व्यवस्था नहीं थी, बल्कि व्यक्ति के साथ व्यक्ति की, परिवार में हर रिश्ते मर्यादा-अनुशासन और उनके उल्लंघन के दुष्परिणामों पर चेतावनी और दंड के विधान की व्यवस्था थी, वहाँ दण्ड केवल व्यवस्था से नहीं था आत्मबल का निर्माण इस तरह हुआ है कि दंड के रूप में प्रायश्चित भी है, पश्चाताप भी है।

हमारे व्यवहार की भाषा में राम नाम रच बस गया। 'निर्बल के बल राम' में भरोसा है, 'राम बाण' में शक्ति का आकलन है, प्राणी मात्र की अंतिम यात्रा के साथ 'राम नाम सत्य है' के

नाम में मुक्ति के लिये सिर्फ सत्य के अनुसरण को ही अंतिम आधार माना है। जनमानस के महात्मा की अंतिम साँस हे राम ! हे राम ! के साथ ही निकलती है।

राम चरित मानस को अपने ही समय की जीवन यात्रा के साथ समझने का प्रयास करते हैं तो बचपन से उसे एक भक्ति ग्रन्थ के तौर पर देखा, घर के पूजाघर में कभी सुन्दरकाण्ड का पाठ है तो कभी सास्वर हनुमान भगवान हमारे जीवन में अनजाने ही उतरते चले गए। मानस ग्रन्थ पहले आया, राम का चरित हमारे जीवन में बाद में आया। ऐसा क्यों हो रहा था, तुलसी की राम के प्रति दास्य भक्ति तो समझ आती है, लेकिन वो जनमानस की कथा कैसे बन गई, ये रामचरित मानस को बड़े होकर पढ़ने के बाद ही जाना। राम कथा को लेकर एक सीधे सादे सन्त ने जन के मानस की हर चिन्ता को इतने भीतर तक छू लिया कि मानो वो हर व्यक्ति की कथा बन गई। तुलसी के सामने आततायी मुग़ल थे, उनके विरुद्ध जनमानस को संबल देने के लिये न सेना थी न हथियार, उनके अत्याचारों के विरुद्ध रामचरित मानस के द्वारा जनमानस के आत्मबल को टूटने से रोकना था। उन्होंने मानस के अन्दर एक आन्दोलन खड़ा कर दिया।

कमोबेश जनमानस के हाथ थामने वाले महात्मा गांधी के जादू को जितना पढ़ा और जाना, पाँच सौ साल के अंतराल में दोनों के सामने परिस्थितियाँ लगभग एक सी थीं, महात्मा गांधी के सामने ब्रिटिश हुकूमत से त्रस्त अपना जनमानस था। यही कारण था कि गांधी के लिये रामचरित मानस संबल बन गई। दक्षिण अफ्रीका में जो जंग उन्होंने प्रारम्भ की, वो भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन की जमीं पर और पुख्ता हुई। महात्मा ने भी इस जंग के लिये हथियार नहीं, अपने जनमानस के आत्मबल को उठाया। दोनों हुकूमत का वापस जाना, जनमानस के आत्मबल की सफलता थी, दोनों अलग-अलग अर्थों में लोकनायक थे।

महात्मा गांधी की राम के प्रति और रामचरित मानस के प्रति अटूट आस्था थी। अपनी पुस्तक 'सत्य के प्रयोग' में उन्होंने लिखा "जिस चीज का मेरे मन पर गहरा प्रभाव पड़ा, वह रामायण का प्रभाव है। रामायण श्रवण, रामायण के प्रति मेरे प्रेम की बुनियाद है। आज मैं तुलसीदास के मानस को भक्तिमार्ग का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ मानता हूँ, अतएव आत्मार्थी के लिये रामनाम और राम कृपा ही अंतिम साधन है, इस वस्तु का साक्षात्कार मैंने हिन्दुस्तान में ही किया है।"

मानस के तुलसी 'सो मम कौन कुटिल खल कामी, जिन तन दियो ताहि बिसरायो ऐसो निमक हरामी' जैसी विनम्रता का भाव महात्मा गांधी की जीवन शैली बन गया। जब आप हरेक को अपने से बेहतर मानोगे तो किसी में दोष नहीं दिखेगा।

मानस की चौपाई -

'बंचक भगत कहाई राम के। किंकर कंचन कोह काम के॥
तिन्ह मह प्रथम रेक जग मोरी। धींग धरम ध्वज धंधक धोरी॥"

भक्त के नाम पर ठग, लोभ-क्रोध और काम के गुलाम, धींगा-धींगी करने वाले, दम्भी, कपट के धंधों का बोझ ढोने वाले लोगों में सबसे पहले मेरी गिनती है।

तुलसी की इस विनम्रता ने ही शायद आन्दोलन के लिये 'सविनय अवज्ञा' जैसे विचार दिए। महात्मा के सामने मानस के राम आदर्श बन कर आये, जिन्होंने उन्हें न्याय पर चलना और प्राणी मात्र से प्रेम करना सिखाया। मानस का प्रभाव ही था कि जो जननायक, जनमानस को जिस ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ खड़े होने के लिये उन्हें तैयार कर रहे थे, वे उन अंग्रेजों के भी मित्र बनकर रहे। उन्होंने बैरभाव उनके प्रति भी नहीं रखा। दक्षिण अफ्रिका में अंग्रेजों के साथ बैठ कर अपने भारतीय मजदूरों और गिरमिटिया लोगों के न्याय के लिये लड़ाई लड़ी। महात्मा को ये समझ मानस में मिली थी, जहां लोकनायक तुलसी उन्हें देवताओं से पूर्व, खल चरित्रों की वंदना करते दिखाई देते हैं। उनकी लड़ाई बुराई से थी, बुरों से नहीं।

"देव–दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्व।
बन्दऊ किंनर रजनीचर कृपा करहु अब सर्व ।।"
"ऐसे अधम मनुज खल कृतजुग त्रेता नाहिं।
द्वापर कछुक बृंद बहु होइहहिं कलिजुग माहिं ।।"
"सुनहूँ तात माया कृत गुण अरु दोष अनेक।
गुन्य: उभय न देखिअहिं देखिय सो अबिबेक ।।"

मानो तुलसी उन्हें समझाते हैं, ऐसे खल पुरुष तो हर युग में होते रहे हैं और कलियुग में तो वे सबसे अधिक होंगे। विवेकी को उनके गुणों-अवगुणों के मीन मेख से अपने को बचाना ही श्रेयस्कर है।

महात्मा अपनी पुस्तक में लिखते हैं "मनुष्य और उसका काम ये दो भिन्न वस्तुएँ हैं। अच्छे काम के प्रति आदर और बुरे के प्रति तिरस्कार होना ही चाहिए, परन्तु भले-बुरे काम करने वालों के प्रति सदा आदर अथवा दया होनी चाहिये। यह चीज समझने में सरल है पर इसके अनुसार आचरण कम से कम होता है। इसी कारण संसार में विष फैलता रहता है।"

सत्य के शोध के मूल रूप में ऐसी अहिंसा है, जब तक ये अहिंसा हाथ में नहीं आती, तब तक सत्य मिल नहीं सकता। व्यवस्था या पद्धति के विरुद्ध झगड़ना शोभा देता है, पर व्यवस्थापक के विरुद्ध झगडा करना तो अपने विरुद्ध झगड़ने के सामान है, क्योंकि हम सब एक ही कूँची से रंगे गये हैं। एक ही ब्रह्म की संतान हैं। व्यवस्थापक का अनादर या तिरस्कार करने से उन शक्तियों का अनादर होता है। ऐसा होने पर संसार को हानि पहुँचती है।"

जननायक महात्मा को कहीं ढूढना है तो लोकनायक तुलसी में ढूँढा जा सकता है। सत्य-अहिंसा और परोपकार पर विश्वास और काम, क्रोध, लोभ, मद, दम्भ, अहंकार पर विजय के लिये उन पर मानस का प्रभाव देखा जा सकता है।

"परम धर्म श्रुति बिदित अहिंसा। पर निंदा सम अघ न गरीसा ।।
काम वात कफ़ लोभ अपारा। क्रोध पित्त नित छाती जारा ।।
अहंकार अति दुखद डमरुआ। दम्भ कपट मद मान न हरुआ ।।
परहित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अघमाई ।।"

सत्य के प्रयोग में उन्होंने लिखा है, जनता की सेवा करने की मेरी प्रबल इच्छा ने ग़रीबों के साथ मेरे सम्बन्ध को अनायास ही जोड़ दिया है। महात्मा ऐसे सैकड़ों प्रसंगों की चर्चा करते हैं, जिसमें मानव सेवा को वे सर्वोपरि रखते हैं।

एक प्रसंग की यहाँ चर्चा करना चाहूंगी, सेवाग्राम में महात्मा को आश्रमवासियों ने खबर दी कि, मवाद से भरा एक कुष्ठ रोगी बाहर आकर बैठा है, सिर्फ आपसे मिलने की जिद कर रहा है। महात्मा तुरंत आये, हैरान हो गए। 'अरे आप तो साबरमती से अपने घर गए थे ? ये सब क्या हुआ ?' बोले, 'घर वालों ने निकाल दिया है, समाज अपनाने को तैयार नहीं है, मैं आपके सानिध्य में मरना चाहता हूँ' महात्मा ने उनके लिये कुटिया बनवाई। अपने हाथों से उनके घाव धोते, इलाज करते रहे, जब तक वे ठीक नहीं हो गए और लोग भी उनके प्रभाव में स्वेच्छा से सेवा कार्य में लग गए, वे ठीक हो गए। ठीक होकर बच्चों को संस्कृत पढ़ाने लगे। वे संस्कृत विद्वान परचुरे शास्त्री थे। समाज को शिक्षित करने का या एक अच्छा शिक्षक बनाने का ये उनका अपना तरीका था। गांधी जी के लिये अंग्रेजों से लड़ाई से अधिक महत्वपूर्ण लड़ने वाले का चरित्र-आचरण और आत्मबल था।

राम की भक्ति में आसन्न डूबे हुए लोक नायक तुलसी कितने बड़े चिन्तक-विचारक थे। जनमानस के चारित्रिक आत्मबल को बढाने के लिये अपनी राम कथा में उन्होंने गुरुओं का समाज और राज्य के प्रति दायित्व, गुरु-शिष्य के संबंधों की व्याख्या को कितने स्थलों पर बार-बार दोहराया। वो उनकी चिन्ता थी, कहीं गुरुओं को फटकारा है, तो कहीं शिष्यों को, तो कहीं माता-पिता को।

"गुर सिष बधिर अंध का लेखा। एक न सुनई एक न देखा।"

[ऐसे समाज में, जहाँ शिष्य और गुरु में बहरे-अंधे का भाव है, शिष्य उपदेश सुनता नहीं और गुरु के पास दृष्टि नहीं है, चिंतनीय है]

"हरई सिष्य धन सोक न करइ। सो गुर घोर नरक महुं परई॥
मातु पिता बाल्कन्हीं बोलावहिं। उदर भरै सोई धर्म सिखावहि॥"

लोकनायक तुलसी की चिन्ता थी कि यदि गुरु धन का लोभी है, माँ-बाप बच्चों को सिर्फ अपना पेट पालना औए धन कमाने को ही धर्म मानना सिखाते हैं, ऎसी शिक्षा से चरित्र निर्माण या समाज कल्याण कैसे हो सकता है।

कभी-कभी तो लगता है, भक्त कहे जाने वाले तुलसी के लिये राम तो एक बहाना है।

वही चिन्ता जननायक महात्मा की थी। जननायक महात्मा सिलसिलेवार अपने जनमानस के अन्दर आत्मबल को तैयार कर रहे थे उनके लिये बच्चों की शिक्षा गंभीर चिन्ता थी।

"मेरी कल्पना यह थी कि साधारण शिक्षकों के हाथ में बच्चों को कभी नहीं छोड़ना चाहिये। शिक्षक को अक्षर ज्ञान चाहे थोड़ा हो, पर उसमें चरित्र बल तो होना ही चाहिए" यही चिन्ता उनकी माता-पिता के प्रति भी थी। इसका पालन उन्होंने अपनी स्वयं की संतान के साथ करके

दृष्टांत प्रस्तुत किया। अपने प्रयोगों में यदि असफलता मिली तो उसे सत्यता से स्वीकारा भी, जहाँ संभव हुआ, उन्हें सुधारा भी। जितना भी समय निकाल पाते, बच्चों को पढ़ाते थे। जो काम उनसे या उनके अभिभावकों से कराना चाहते थे, खुद करते थे।

छात्र जीवन में ब्रह्मचर्य पालन को वे संस्कारों में डालना चाहते थे। किसी दूसरे से कुछ भी अपेक्षा करने से पहले वो प्रयोग स्वयं पर करना चाहते था। एक पत्नीव्रती महात्मा खुद लिखते हैं कि स्वयं का पत्नी के साथ इन्द्रिय सुख में अतिवादिता होने के कारण ब्रह्मचर्य व्रत लेना एक दुष्कर कार्य था। मानस के प्रभाव ने संभवत: उनके उन कमजोर क्षणों में मार्ग दिखाया।

मानवीय कमजोरियों के ऊपर मानस के तुलसी की पंक्तियाँ कितने सुन्दर-सहज ढंग से जनमानस के अन्तर्तम में पैठ जाती हैं।

"कीट मनोरथ दास सरीरा। जेहि न लाग घुन को अस धीरा।
सुत बित लोक ईषना तीनी। केहि कै मति इन्ह कृत न मलीनी॥"

मनोरथ कीड़ा है, शरीर लकड़ी है, ऐसा धैर्यवान कौन है जिसके शरीर को कीड़ा न लगा हो। पुत्र की, धन की और लोक प्रतिष्ठा, इन तीन प्रबल इच्छाओं ने किसकी बुद्धि को मलिन नहीं किया।

अरण्य काण्ड में नारद मुनि और राम के बीच के संवाद पर तुलसी की चौपाई -

"षट विकार जित अनघ अकामा। अचल अकिंचन सूचि सुख धामा॥"
"अमित बोध अनीह मितभोगी। सत्य सार कवि कोबिद जोगी॥"

षट विकार - काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर] को जीत कर पाप रहित, कामना रहित, निश्छल, स्थिर बुद्धि, सर्व त्यागी, बाहर-भीतर से पवित्र, सुखके धाम असीम ज्ञानवान, इच्छा रहित, मिताहारी सत्य निष्ठ, योगी बनना महात्मा को अनिवार्य लगने लगता है।

"गुनागार संसार दुखाहित बिगत सदेह। तजि मम चरण सरोज प्रिय तिन्ह कहुं देह न गेह॥"

गुणों के घर, संसार के दुखों से अप्रभावित और संदेह से सर्वथा छूटे हुए, उनको न देह ही प्रिय होती है न घर ही। महात्मा के ब्रह्मचर्य व्रत को बल मिलता है, परिवार में समाज का भाव रखने की दृष्टि भी मिलती है। उन्हें अपने सारे उत्तर मिल जाते हैं।

लोकनायक तुलसी ने [रावण-सूर्पनखा प्रसंग में] चार पंक्तियों में जिस राजधर्म के मर्म को उस काल में समझाया था -

"करसी पान सोवासी दिन राति, सुध नहिं तव सर पर आराती॥
राज नीति बिनु धन बिनु धर्मा, हरहिं समर्पे बिनु सत्कर्मा॥
विदया बिनु बिबेक उपजाए, श्रम फल किएँ अरु पाएँ॥
संग ते जती, कुमंत्र ते राजा, मान ते ज्ञान, पान ते लाजा॥"

[नीति के बिना राज्य, धर्म के बिना धन, भगवान को समर्पण के बिना सत्कर्म, विवेक के बिना विदया, सारे श्रम व्यर्थ ही हो जाते हैं। विषयों के संग से संन्यासी, बुरी सलाह से राजा अभिमान या अहंकार से ज्ञान और मदिरा-पान से लज्जा ही भोगनी पड़ती है।]

ऐसी फटकार, ऐसी चेतावनी या गुरुपूर्ण सलाह, एक लोकनायक ही दे सकता है। नेतृत्व को तैयार करने की कोशिशों में मानस की पंक्तियाँ ही उनका संबल बन जाती हैं।

एक बैरिस्टर होकर वे जब कहते हैं "मैं शुद्ध न्याय के सिवा न तो कुछ मांगता हूँ और न कुछ चाहता हूँ, शुद्ध राजनिष्ठा के मूल सत्य पर मेरा स्वाभाविक प्रेम था" तो लगता है तुलसी के राम ही बोल रहे हैं।

"धन्य सो भूप नीति जो करई। धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई॥
सम शीतल नहिं त्यागहि नीती। सरल सुभाऊ सबहिं सन प्रीती॥"

सत्याग्रह की सफलता पर जब हितैषियों द्वारा ही प्रश्न उठाए जाते थे तो मानस की पंक्तियाँ उन्हें और दृढ़ता से अपनी बात कहने की ताकत देती।

गांधी जी ने लिखा है "सत्याग्रही तो ठगे जाने के लिये ही जन्म लेता है न ? अतएव भले ही साहब मुझे ठगें, क्या मैंने हजार बार नहीं कहा है कि अंत में ठगने वाला ही ठगा जाता है। ये उनका आत्मबल था। मानस का ही प्रभाव था कि कानून के दुष्कर व्यवसाय में वे ये बात इतनी दृढ़ता से कह सके और अपने आचरण में पालन करते रहे, किन्हीं परिस्थितियों में न्याय का साथ नहीं छोड़ा, बापू कहते हैं "मेरा अनुभव मुझे बतलाता है कि प्रतिपक्षी को न्याय देकर हम जल्दी न्याय पा जाते हैं।"

महात्मा गांधी के सम्मुख अपने जनमानस के लिये जिस रामराज्य की कल्पना थी, हम अपनी बात मानस की उस चौपाई से समाप्त करना चाहेंगे-

"मुखिया मुख सो चाहिये खानपान कहुं एक। पालई पोषई सकल अंग तुलसी सहित बिबेक।"

मुखिया अपने आचरण में मुख जैसा होना चाहिए, जो खाता अकेला है, पोषण सारे अंगों का करता है। जो कुछ खाए, उससे सबका पोषण करे, जो कुछ हासिल करे वह सबके पास सामान रूप से पहुँच जाए, परिवार, समाज, राष्ट्र और मुखिया के तौर पर सब अंगों का पोषक बन जाए तो जीवन कितना आसान हो जाए।

महात्मा शायद उस रामराज्य की परिकल्पना को साकार करने के लिये संघर्ष कर रहे थे जिसे तुलसी ने मानस में वर्णित किया था।

"बरनाश्रम निज-निज धर्म निरत बेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखहिं नहिं भय सोकन रोग॥
दैहिक, दैविक, भौतिक तापा। रामराज नहिं काहुहि ब्यापा।
सब नर करहिं परस्पर प्रीति। चलहिं स्व धर्म निरत श्रुति नीति॥"

ऐसे ही रामराज्य की स्थापना तो जनमानस के महात्मा का भी स्वप्न था।

सीता का परित्याग: मर्यादा की पराकाष्ठा

विनीता मिश्रा

विज्ञान स्नातक, कवि एवं स्वतंत्र लेखन, रामचरित मानस का अध्ययन एवं राम साहित्य का पठन-पाठन एवं चिंतन। काव्य संग्रह: 'मन की लय'। अध्यात्मिक कविता संग्रह प्रकाशन के लिए तैयार। अध्यात्मिक वक्ता। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। प्रधान संपादक(उत्तर प्रदेश): स्पर्श राष्ट्रीय मासिक पत्रिका।

जब भी मर्यादा पुरुषोत्तम की बात उठती है एक ही नाम ध्यान आता है – राम। फिर भी राम पर प्रश्न उठाये जाते हैं। कभी सोचा है क्यों? प्रश्न उठ ही इसलिए रहे हैं कि हमारे पास एक व्यक्तित्व है राम का; जो मर्यादा पुरुषोत्तम है और हमें अवसर दे रहा है प्रश्न करने का। यदि वह न होता तो आज ये विशेषण ही हमारे पास न होता और हम किसके ऊपर प्रश्न कर रहे होते? आप स्वयं को भाग्यशाली जानिए कि आज आपके पास एक ऐसा चरित है जिससे आप ये प्रश्न पूछ पा रहे हैं। पर मुझे लगता है जिस बिंदु पर आधुनिक समाज राम पर प्रश्न चिन्ह लगा रहा है वही उसकी मर्यादा पालन की पराकाष्ठा है।

ऐसे ही नहीं राम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहते हैं, मर्यादा में रहकर जीवन जीना सर्वथा कठिन कार्य है। ये राम के जीवन चरित्र से देखने को मिलता है। पग - पग जीवन आपको आजमाता है और न केवल आपको दुःख सहने होते हैं, कष्ट उठाने पड़ते हैं अपितु अपनों को कष्ट देना भी पड़ता है। यहाँ तक कि अनंत काल तक आप पर प्रश्न उठाये जा सकते हैं, इसके बावजूद भी आप मर्यादा का पालन करते हैं या स्वयं की छवि और न्याय-अन्याय का विचार करते हैं?

अत्यंत कठिन होता है चली आ रही मर्यादाओं को निभाना और नए सामाजिक मूल्यों को निश्चित करना और समाज में उन्हें प्रतिष्ठापित करना; जो सर्वमान्य हों, सब को स्वीकार्य हों। राम ने आने वाले समय के लिए चली आ रही परम्पराओं का निर्वहन भी किया, मर्यादा का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया व अपनी प्रजा को संतुष्ट भी किया।

इतिहास के गर्भ में जाकर देखें तो ज्ञात होगा कि कोई भी निर्धारित संविधान उस समय की देश- काल- परिस्थिति के अनुसार ही अपने तत्कालीन स्वरूप को प्राप्त करता है। ये यकायक बनाए हुए नियम व्यवस्था नहीं होते और उनका पालन करना ही तत्कालीन लोगों का धर्म होता है। इस संविधान को नकारना उतना ही अनुचित है जितना आज के समय में आज के संविधान को नकार पाना। आज भी हमारे संविधान में ऐसी कई बातें होंगी जो लोगों को अनुचित लग सकती हैं फिर भी सब को उनका पालन करना सब के लिए अपेक्षित होता है। राम ने अपना सम्पूर्ण जीवन मर्यादा में व्यतीत किया।

राम एक अति संवेदनशील व्यक्ति थे जिसका बोध होने पर ही विश्वामित्र ने उन्हें सीता के लिए उपयुक्त माना और उन्हें मिथिला ले जाने का निर्णय लिया। इस निर्णय से पहले उन्हें राम

की स्त्रियों के प्रति संवेदनशीलता भी परखनी थी, जिसमें राम उत्तीर्ण हुए और विश्वामित्र ने अपने निर्णय को निश्चय में बदला। ये संवेदनशील राम जब बिना पद का एक स्वतंत्र व्यक्ति है, शिष्य है, राजकुमार है परन्तु उसकी प्रतिक्रिया पर कोई राजनैतिक दबाव नहीं है तो अहल्या के साथ अपनी संवेदना प्रकट करता है परन्तु जब वो राजा बनता है तो राजधर्म की मर्यादा के सम्मुख उसे अपनी संवेदना को नियंत्रित करना पड़ता है, पतिधर्म एवं राजधर्म में से उसे एक को वरीयता देनी है; व्यक्ति बिंदु है और राज्य - प्रजा एक सिन्धु। सिन्धु के समक्ष बिंदु गौड़ है, नगण्य है अतः उसे सही दिशा चुननी पड़ती है कि एक राजा की संवेदना किस ओर सही है? अपने रिश्ते के प्रति या अपनी प्रजा के प्रति? तब वह राज धर्म की मर्यादा को निज संवेदना से ऊपर स्थान देता है और अपने राज धर्म का पालन करता है। एक राजा का कर्तव्य निज सुख को कभी प्राथमिकता नहीं देता, एक व्यक्ति के प्रेम की अपेक्षा राष्ट्र का हित, सुख, सुरक्षा एवं जन संतोष ही सर्वोपरि है। तमाम विचार विमर्श एवं अंतर्द्वंद का सामना करते हुए राम ने जब ये निर्णय लिया होगा तो उनके हृदय में अपनी प्रजा के लिए कितना स्नेह और जिम्मेदारी का भाव रहा होगा कि उन्होंने निज सुख को त्याग कर यह निर्णय लिया और आगे चलकर राजा की प्रजा के प्रति इसी निष्ठा ने रामराज्य जैसे विशेषण को जन्म दिया।

जब वह पुत्र है, एक स्वतंत्र व्यक्ति है तो संवेदना ऊपर है और जब वह राजा है तो मर्यादा पालन। जो वह अहल्या के साथ कर सका वह सीता के साथ नहीं कर पाया। मूर्तिवत अहल्या को तो प्राणवान किया किन्तु जीवित सीता को मूर्तिमान कर यज्ञ किया पर मन में सीता के अतिरिक्त किसी को नहीं बिठाया। लोग कहते हैं कि शंकर का प्रेम सती के प्रति अद्भुत था। राम शंकर सा स्वतंत्र कहाँ है? वह मर्यादा से बंधा है स्वतंत्र होता तो वह भी दक्ष – यज्ञ की भांति सब तहस - नहस कर डालता पर वह तो प्रजा पालक है किसे तहस- नहस करे? ये एक स्वतंत्र साधारण नागरिक और राजा की मर्यादा से बंधे व्यक्ति का भेद है। जब पद पर नहीं हैं तब कितने आत्मनिर्भर हैं निर्णय लेने के लिए; पद पर कितने दीन! इतने दीन कि अपने दुःख को प्रकट कर दुर्बल राजा की भी छवि नहीं बना सकते। वनवासी राम विरह में रुदन कर सकता है पर राजा राम नहीं। वो नित अग्निपरीक्षा से गुजरते हैं पर कुछ कर नहीं सकते। राम जैसा स्नेहिल व्यक्ति जो लक्ष्मण के शक्ति लगने पर फूट- फूट कर रोया हो वह अपने नवजात तक को न देख सका, न उनके बढ़ने का सुख देख सका, उसकी पीड़ा अनिर्वचनीय है। दशरथ जैसा वात्सल्य उसकी नियति में नहीं; जहां तुलसी दास जी लिख सके : ठुमक चलत रामचंद्र बाजत पैजनियाँ.......पर राम के हिस्से में आयीं:

सुनो वैदेही! तेरी रातों से बढ़कर, मेरी रातें सूनी हैं।
तेरी बाँहों में लव और कुश, मेरी बाँहें सूनी हैं।

तो क्यों न इस विचार को अब राजा दशरथ और राजा राम के भी तुलनात्मक दृष्टिकोण से देख लिया जाय और अब हम जिन बिन्दुओं पर चर्चा करेंगे वे हैं: पुत्र धर्म एवं राज धर्म। यदि हम इन दोनों बिन्दुओं पर विचार करें तो पायेंगे कि राम पर सर्वाधिक प्रश्न चिन्ह अपने राज

धर्म के पालन में सीता के परित्याग को लेकर लगते हैं और निश्चित रूप से सम्पूर्ण जीवन में उनके लिए भी इस राज धर्म पालन में यह कठिनतम चरण रहा होगा!

राजा दशरथ ने जब राम को वनवास दिया उस समय की परिस्थितियाँ क्या थी? राम के राज्याभिषेक की तैयारियां हो रहीं थीं, ऐसे में कैकेयी; दशरथ की प्रिय रानी ने अपने दो वचनों के वरदान स्वरूप में राम को चौदह वर्षों का वनवास मांग लिया। चौदह वर्ष ही क्यों? वह आजीवन भी कह सकतीं थीं; क्योंकि तत्कालीन संविधान के अनुसार यदि अपेक्षित उत्तराधिकारी बारह वर्ष से अधिक समय राज्य से बाहर गुजारता है अर्थात राज-काज विहीन जीवन बिताता है और राज्य सम्बंधित जिम्मेदारियां नहीं उठाता तो वह अपने राजा बनाने की योग्यता गंवाता हुआ स्वयं के राजा बनाने का अधिकार खो देता है। इस परिस्थिति में सदा राम की प्रशंसा होती आई है और राजा दशरथ को वचन निभाने के लिए सराहा गया है। परन्तु हमने कभी भी राम के साथ अन्याय, कैकेयी द्वारा राजा दशरथ का भावनात्मक शोषण, राज्य का अहित या प्रजा के साथ अन्याय की अधिक आलोचना नहीं की। जबकि राजा दशरथ किसी राज धर्म का पालन तो नहीं कर रहे थे अपितु अपनी प्रिय रानी को दिए वचन पालन हेतु उन्होंने न केवल राज धर्म की अवहेलना की बल्कि अपने ज्येष्ठ एवं अति योग्य पुत्र के साथ अन्याय भी किया। उनके इस वचन पालन में राम की ही मुख्य भूमिका रही बल्कि राम ही के कारण उनके वचन का पालन हो सका और गोस्वामी जी लिख सके: “रघुकुल रीति सदा चली आई प्राण जाए पर वचन न जाई।”

जो आज भी रघुवंशियों की वचनबद्धता को दर्शाती है। ये अनुचित कार्य या अन्याय एक स्त्री के द्वारा पुरुष का और एक पुरुष के द्वारा पुरुष का था अतः ये आधुनिक सभ्यता के परिवेश में सामान्यतः लिया गया और एक आदर्श के रूप में स्थापित हुआ।

वहीं दूसरी और अधिक जटिल परिस्थिति है: जब राम राजा बने तो मात्र प्रजा के (अपनी प्रिय रानी नहीं) असंतोष के कारण अपनी प्राणप्रिया पत्नी को वनवास दिया और राज धर्म का पालन किया जिससे राज्य एवं प्रजा के साथ अन्याय न होने पाए तो आज इसलिए आलोचना के पात्र हैं क्योंकि ये पुरुष द्वारा स्त्री के साथ अन्याय का विषय है। जबकि तत्कालीन व्यवस्था में शायद स्त्री- पुरुष भेद भाव इस रूप में न रहा हो जैसा कि कालांतर में दृष्टि गोचर होता है। सबसे बढ़कर राजपद पर आरूढ़ किया गये व्यक्ति अपनी योग्यताएं सिद्ध करने के उपरांत सभी गुणों से परिपूर्ण पाए जाने पर ही राज पद को प्राप्त होता था क्रमशः अपनी मर्यादाओं को निभाते हुए राज धर्म का पालन ही सबसे कठिन है। राजा होने पश्चात् यदि व्यक्ति स्वयं या परिवार का हित देखे तो(जिसकी हम आज भी सर्वथा निंदा करते हैं, परिवारवाद या भाई भतीजा वाद के रूप में) तो कदापि एक राज्य या उसकी प्रजा का अभिभावक होने कि योग्यता नहीं रखता।

अब आते हैं सीता के अपने संस्कारों और विचारों पर, राजा जनक विदेह राज किस प्रकार के शासक थे सब जानते हैं, सीता जनक के यहाँ से संस्कार लायीं थीं कि राजा, प्रजा का सेवक होता है, व्यवस्था कारक होता है स्वामी नहीं और स्वामी को तुष्ट करना सेवक का धर्म

होता है। राजा होकर स्वयं के बारे में सोचना, परिवार व प्रियजनों के बारे में सोचना निश्चय ही राजधर्म तो नहीं है आज भी नहीं है, राजा होने पश्चात् यदि व्यक्ति स्वयं या परिवार का हित देखे तो(जिसकी हम आज भी सर्वथा निंदा करते हैं, परिवार वाद या भाई भतीजा वाद के रूप में) तो कदापि एक राज्य या उसकी प्रजा का अभिभावक होने की योग्यता नहीं रखता। मानस में तुलसी दास जी भरत के मुख से कहलाते हैं: सब ते सेवकु धरम कठोरा।

दूसरों के लिए सोचना इसी भावना का प्रसार करता है जो किसी भी समाज की सामाजिक व्यवस्था का आधारभूत सिद्धांत होता है अन्यथा स्वार्थी लोलुप समाज की क्या दशा होती है हम आज देख ही रहे हैं। राजपद के लिए सब कुछ लूट लेने वाले बहुत मिलते हैं , राजपद के लिए सर्वस्व लुटाने वाला: केवल राम। जो तुलसी यह कहता है: ''परहित सरिस धरम नहीं भाई'' उसका राम परहित के लिए स्वहित कभी सोच सकता है? परन्तु ये भावना आज के आत्मकेंद्रित सोच वाले व्यक्तियों को कहां समझ आएगी? आपको नहीं लगता जो ये प्रश्न उठाते हैं वे स्वयं ही इस शंका को धुल धूसरित कर देते हैं ये प्रकट कर के कि उनकी सोच कितनी सामंती है जो वे यह कहते हैं कि एक धोबी के कहने पर! अरे! राम ने तो ये सोचा ही नहीं कि वह धोबी है या क्या है? वह उनके लिए मात्र उनकी प्रजा का प्रतिनिधि है; तो ये है राम की विचारधारा और ये है रामराज्य की आधारशिला। जहां कोई आरक्षण देने की आवश्यकता नहीं है किसी को सामान अधिकार देने के लिए।

राम के जीवन चरित्र को देखने से एक और भी पहलू सामने आता है और वह ये कि महलों में पले- बढ़े राम ने साधारण जन की वास्तविक परिस्थितियाँ अपने युवाकाल में विश्वामित्र के साथ और फिर अपने वनवास काल में अनुभव कीं। उनका बोध वे अपनी संतान को जन्म के साथ ही कराना चाहते रहे हों। जैसे कि हम जानते हैं राम और सीता एक ऐसे दम्पत्ति हैं जिनकी विचार - शैली, कार्य – शैली, जीवन के उद्देश्य सभी समान हैं जहां कोई मतभेद नहीं। दोनों ही करुणा के सागर कहलाते हैं, उनकी दीन-हीन, सुविधारहित जीवन यापन करने वालों के साथ ये करुणा की पराकाष्ठा ही तो है कि उस दम्पत्ति की ये इच्छा हुई कि वे उनकी संतान का प्रसव ऐसे वातावरण में हो जहाँ राज्य के अधिकान्शतः बच्चे जन्मते हैं और उनकी शिक्षा -दीक्षा, शस्त्र – शास्त्र विद्या के साथ - साथ संगीत आदि ललित कलाओं का ज्ञान भी उत्कृष्ट हो जो वाल्मीकि आश्रम से उचित अन्यत्र नहीं संभव था। राम के जीवन में यदि विश्वामित्र नहीं आते और उन्हें चौदह वर्षों का वनवास नहीं मिलता तो क्या वो उन लोगों की जीवन शैली , कष्ट, संघर्ष कभी जान पाते! वो अपनी संतान को वह कैसे जन - जन से जोड़ें? क्या किसी विश्वामित्र की प्रतीक्षा करें या स्वयं ही इसकी व्यवस्था करें? ये विमर्श अवश्य ही सीता के साथ हुआ होगा किन्तु कार्यान्वित हो गया प्रजा के असंतोष के रूप में। यहाँ पर मैं धोबी शब्द का प्रयोग नहीं कर रही हूँ जिसका कारण मैं पहले ही स्पष्ट कर चुकी हूँ। सीता पूर्णतः एक सक्षम व्यक्तित्व थीं जो वन में रह कर सभी विद्याओं में अपनी संतान को निपुण बनाने में वाल्मीकि जी के संरक्षण में पूर्ण अभिभावक की भूमिका निभा सकतीं थी। राम यूँ भी राज-काज की व्यस्तता में अत्यधिक डूबे थे; सीता की भूमिका इस पूरे प्रकरण में वही रही जो राम

के लिए विश्वामित्र की थी। ये उस दम्पति का एक साझा निर्णय भी हो सकता है, जिस प्रकार रावन द्वारा सीता हरण की योजना को पूर्व निर्धारित करने में राम ने पहले ही सीता को अवगत कराया जिसका भान लक्ष्मण तक को न था यहाँ भी लोकोपचार का सहारा लेकर ये निर्णय भी पति-पत्नी का साझा ही रहा हो जिसकी भनक भी किसी को न हुई हो; यही एक सफल दाम्पत्य है जो किसी दूसरे के द्वारा संचालित या प्रभावित न हो। उनके इस निर्णय को आगे के कुछ क्षेपककारों ने शायद परित्याग या निष्काशन का रूप दे दिया हो।

कुछ यह भी कह सकते हैं कि सीता को वन भेजने के स्थान पर उन्हें स्वयं भी सीता के साथ वनगमन कर लेना चाहिए, उस समाज को उन्हें भी त्याग देना चाहिए जिसने सीता के चरित्र पर प्रश्न उठाये। किन्तु वह अयोध्या जिसने राम को राजा के रूप में देखने की 14 वर्षों तक प्रतीक्षा की थी; उसे फिर से आश्रयहीन कर राम अपना राजपद त्याग अपनी प्रिया के साथ वन गमन कर जाते तो ये सर्वथा अनुचित होता और यदि राम ने यह निर्णय लिया होता तो निश्चय ही राम मर्यादा पुरुषोत्तम नहीं कहलाते वह भी कहीं दशरथ की भांति पत्नी प्रेम में विवश राजा के रूप में ही याद किये जाते, एक कर्तव्यच्युत राजा कहलाते और मर्यादा पुरुषोत्तम का स्थान भारत के गौरव में रिक्त ही रहता और लोग इस तरह के प्रश्न किस पर उठा रहे होते! राजा-रानी की प्रेम कथाओं से इतिहास भरा हुआ है उसमें एक किस्सा और जुड़ गया होता!

ऐसा भी नहीं कि राम ने इस ओर विचार नहीं किया किन्तु अपने पहले वनगमन में राम अपने भाइयों का आचरण देख चुके थे तब तो 14 वर्ष पश्चात् लौटने की आशा थी अब अगर सिंहासन और राजधर्म त्याग, अयोध्या छोड़ते तो क्या कोई भाई अयोध्या की शासन व्यवस्था संभालने के लिए सिंहासनारूढ़ होता? कभी नहीं; सब पीछे-पीछे वन को ही चल पड़ते इसलिए पुनः यही कहूँगी कि राष्ट्र और समाज में व्याप्त पुरानी मान्यताओं के कारण समाज में स्त्री की स्थिति को बेहतर करने के लिए ये उस दम्पत्ति का साझा निर्णय था और न केवल राम ने अपितु सीता ने भी वाल्मीकि आश्रम में रहते हुए अपने पुत्रों को सम्पूर्ण जानकारी देते हुए स्त्रियों की स्थिति में सुधार का कार्य बाल्यकाल से आरम्भ कर दिया और वन में रहकर भी राज सुधार के कार्य में राम का सहयोग किया। कोई भी परंपरा या मान्यता समाज में धीरे- धीरे ही व्याप्त होती है और अपनी अच्छाई के साथ धीरे – धीरे विकृत कर दी जाती है; ये वही प्रयास है जो आज भी अपने समाज में स्त्री अधिकार, सुरक्षा, समानता के रूप में आज भी दृष्टिगोचर है। देश काल परिस्थिति के अनुसार हर परम्परा, मान्यता अपना संशोधन चाहती है।

इस आलेख में कुछ बातें आपस में ही विरोधाभास सा प्रकट करती लगेंगी परन्तु ये अलग-अलग तरह से उठने वाले प्रश्नों के निराकरण के लिए है। अब हम निहायत ही साधारण लोगों द्वारा उठाये जाने वाले तरीके पर बात करेंगे और यहीं राम की मर्यादा और प्रेम की पराकाष्ठा के दर्शन होते हैं। जिस प्रजा में अपनी महारानी को लेकर शंका उत्पन्न हो गयी थी और जिसका प्रतिनिधि एक सामान्य जन को दिखाया गया; धीरे – धीरे ये शंकाएं सीता तक पहुंचतीं और वे स्वयं पता नहीं क्या निर्णय लेकर राम से कौन सा वचन मांग लेतीं उस अपमान की स्थिति से सीता को बचा ले गए। स्वयं पर सीता परित्याग का कलंक ले लिया और सीता को महान बना

गए। ऐसी मर्यादा जो अंततः संवेदना को मर्यादा से ऊपर उठा ही ले गयी। यही है राम के प्रेम की पराकाष्ठा और मर्यादा की भी। जाते- जाते सीता जाने कौन सा वचन मांग लें और रघुकुल वंशी फिर से दोराहे पर खड़ा हो जाए अतः सीता को अनजाने ही वन भेज दिया और स्वयं के लिए एकांतवास चुन कर राज- काज में स्वयं को झोंक दिया। सीता के साथ ही राम भी वन चला गया अयोध्या में रह गया केवल राजाराम। जो नित अग्निपरीक्षा देता है, वनवासी राम तो विरह में रुदन कर सकता है परन्तु राजाराम नहीं।

जितने कटीले, पथरीले वन के रास्ते होते हैं उतने ही कठिन और कंटक भरे राजनीति के पथ होते हैं और उससे भी अधिक कठिन होते हैं दांपत्य जीवन के पथ। निस्संदेह राम – सीता एक सम्पूर्ण दम्पत्ति हैं; जिनके अपने जीवन और उत्तरदायित्वों के प्रति विचार एक हैं, उद्देश्य एक हैं, विधि एक हैं। प्रजा का पालन और सेवा ये संस्कार तो सीता अपने पिता से पहले ही लेकर आयीं थीं और ये संस्कार, संकल्प बन गए जब राम राजा हुए और इस कंटक पथ की यात्रा तो दोनों को एक बार फिर से करनी ही थी।

रामायण की रचना का तो आधार ही विरह था:- क्रौंच वध से उपजी विरह वेदना छंद रूप में प्रस्फुटित हुई और बारम्बार ये विरह वेदना प्रकट होती रही यहाँ तक कि इस कथा का सुखांत भी विरह वेदना के साथ ही हुआ और ऐसा वियोग हुआ राम और सीता का कि युगों-युगों के लिए अनश्वर, अमर संयोग हो गया:- सीताराम जय जय सीताराम।

ये राम कौन है, कैसा है क्या कभी दोबारा भी आएगा ऐसा आदर्श उपस्थित करने कि काल के आगे भी उसकी चर्चा होती रहे! निष्कर्ष स्वरूप हम देखते हैं राम के मर्यादा पुरुषोत्तम होने की जितनी उनकी प्रशंसा की जाये निस्संदेह सीता भी उतनी ही प्रशंसा की पात्र हैं। मैं अपनी इस कविता के साथ इस लेख को समाप्त करती हूँ:-

सबने बल देखा था मेरा, दुर्बलता कोई न देख सका।
मैं छुपा रहा तुम चलीं गईं, मैं वो क्षण भी न देख सका।
मैं कह पता तो कहता, मैं सह पता तो कहता।
तुम सबला थीं मैं निर्बल था, तुमसे तो मैं दुर्बल था।
तुम निर्जन में भी सबल रहीं, मैं महलों में भी निर्बल था।
ये प्रेम ही शक्ति बनता है और दुर्बल भी वो करता है।
मैं धनुष उठा तो सकता था, पर नयन न तुमसे मिला सका।
समय चला चलता ही गया, संताप मेरा न मिटा सका।
हर पुकार बस मन में रह गयी, स्वर तुम तक पहुंचा न सका।
जो मैंने तुमसे कहा नहीं! क्या ऐसा ही था कहा नहीं?
यदि कह पाता, क्या कहता मैं? अपराधी सा बस रहता मैं!
मैं स्वयं, स्वयं से बचा गया, हा! तुमने मुझे क्षमा किया!!
मैं आज भी ये दुःख सहता हूँ, तेरे नाम के पीछे छुपता हूँ।
जब तक न तेरा नाम जुड़े आधा- अधूरा लगता हूँ।
यह भी तो त्याग तुम्हारा है, तुमसे ही प्रेम हमारा है।
तुम बल थीं मेरा सदा रहीं, चाहे पास रहीं या जुदा रहीं।

राम चरित के विकास में नारियों का योगदान

सरस्वती मल्लिक

श्रीमती सरस्वती मल्लिक रामचरितमानस के अध्ययन एवं लेखन में विशेष रूचि रखती हैं। RamQuest अंग्रेज़ी पत्रिका एवं अन्य पत्रिकाओं में इनके लेख प्रकाशित हुए हैं। वे वार्षिक रामचरित मंथन में कई बार वक्ता रह चुकी हैं एवं मानस से सम्बन्धित विभिन्न कार्यक्रम में भाग लेती हैं।

सारांश

श्री राम के चरित्र के विकास में नारियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उनकी तीन माताओं के अतिरिक्त अनेकों नारियों ने इसमें योगदान दिया। सबसे बड़ी भूमिका माता सती और पार्वती की है। सती ने राम जिज्ञासा में अपने पति शिव से परित्याग का दु:ख पाया और प्राण त्याग दिया। फिर पार्वती रूप में अपने पति शिवजी को रामकथा उपदेश की प्रेरणा दे रामचरित को उजागर किया। सीता जी ने प्रथम मिलन में ही रामको पुरुषोत्तम बना दिया और राम-महिमा के लिये अपार कष्ट सहे। ऋषि-पत्नी अहिल्या ने पतितपावन नाम दिया। शवरी ने राम को सुग्रीव और हनुमानजी से मिलाकर रामचरित को बढाया और राम के नवधा भक्ति उपदेश से विश्व का कल्याण किया। शत्रु पत्नी तारा और मन्दोदरी ने राम के स्वरूप को पहचाना और प्रकाशित किया। खलनायिका राक्षसी तारका और शूर्पणखा ने भी राम चरित के विकास में योगदान दिया।

भूमिका

मर्यादा पुरुषोत्म भगवान राम ने भक्तों के उद्धार और दुष्टों के संहारके लिये इस धरती पर अवतार लिया और तरह तरह की लीलाएँ की। इस राम चरित के विकास में नारियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। इन नारियों में उनकी माता रानी कौशल्या और सौतेली मातायें कैकेयी और सुमित्रा, सनातन संगिनी और लक्ष्मी अवतार माता सीता के योगदान के अतिरिक्त अनेकों नारियों ने अपनी भूमिका निभाई। ये सब समाज और देश के विभिन्न वर्गों से थीं। इन अन्य नारियों में प्रमुख नाम हैं - आदि शक्ति माता सती और पार्वती, महर्षि गौतम की पत्नी अहल्या, आदिवासी भक्त शबरी, बालि की पत्नी तारा और रावनकी पत्नी मंदोदरी। राक्षसी तारका, त्रिजटा और शूर्पणखा की भूमिका भी उल्लेखनीय है। यह भी उल्लेखनीय है कि रामकथा की चार नारियाँ, अहल्या, सीता, तारा, और मंदोदरी प्रात:स्मरणीय पंचकन्या में सम्मिलित हैं।

अहल्या द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा।
पंचकन्याः स्मरेन्नित्यं महापातकनाशिन्याः ॥

अहल्या, द्रौपदी, सीता, तारा और मंदोदरी इन पंचकन्याओं का प्रतिदिन स्मरण करना चाहिए, ये महा पापों का नाश करने वाली हैं। (नोट: एक अन्य रूप में इस श्लोक में सीता की जगह कुन्ती लिखा मिलता है।)

माता सती और पार्वती

गोस्वामी तुलसीदास के रामचरितमानस की रामकथा में भगवान शिवकी अर्धांगिनी आदिशक्ति और पार्वती की महत्वपूर्ण भूमिका वर्णित है। माता सती ने राम की जिज्ञासा में पति को खोने पर प्राण त्याग दिया। फिर पार्वती के रूप में पति शिवजी से रामकथा का प्रकास विश्व कल्याण के लिये कराया। आदिशक्ति का, राम का महाविष्णु के रूप में महिमामंडन रामचरित के विकास में बहुत बड़ा योगदान है। रावण द्वारा माता सीता के अपहरण के बाद राम और लक्ष्मण उनकी खोज में वन-वन घूम रहे थे। भगवान शिव माता सती के साथ महर्षि अगस्त्य के आश्रम गये। वहाँ राम जी को देखकर शिवजी ने मन हीं मन प्रणाम किया। यह देखकर सती माता को आश्चर्य हुआ। वे सीता का रूप धरकर रामजी के पास गई। रामजी ने उनके वास्तविक स्वरूप को जान लिया और नाम लेकर प्रणाम किया और शिवजी का कुशल पूछा। सती इसपर लज्जित होकर शिवजी के पास वापस आई और इसको छुपाकर शिवजी से झूठ बोली। शिवजी सब समझ गये। उन्होनें सती के सीता का रूप लेने से दु:खी होकर उनका त्याग कर दिया। सती ने अपने पिता दक्ष के यज्ञ में प्राण त्याग दिया फिर पार्वती के रूप में जन्म लेकर शिवजी की पत्नी बनी। उन्होनें शिवजी से रामजी के बारे में बातचीत की। तुलसीदासजी ने इसका बहुत अच्छा वर्णन किया है।

मैं बन दीखि राम प्रभुताई। अति भय बिकल न तुम्हहि सुनाई॥
तदपि मलिन मन बोधु न आवा। सो फलु भली भाँति हम पावा॥

मैं ने (पिछले जन्म में) वन में श्री रामचन्द्रजी की प्रभुता देखी थी, परन्तु अत्यन्त भयभीत होने के कारण मैं ने वह बात आपको सुनाई नहीं। तो भी, मेरे मलिन मन को बोध न हुआ। उसका फल भी मैं ने अच्छी तरह पा लिया॥

अजहूँ कछु संसउ मन मोरें। करहु कृपा बिनवउँ कर जोरें॥
प्रभु तब मोहि बहु भाँति प्रबोधा। नाथ सो समुझि करहु जनि क्रोधा।

अब भी मेरे मन में कुछ संदेह है। आप कृपा कीजिए, मैं हाथ जोड़कर विनती करती हूँ। हे प्रभो! आप ने उस समय मुझे बहुत तरह से समझाया था (फिर भी मेरा संदेह नहीं गया), हे नाथ ! यह सोचकर मुझ पर क्रोध न कीजिए॥

बंदउँ पद धरि धरनि सिरु बिनय करउँ कर जोरि।
बरनहु रघुबर बिसद जसु श्रुति सिद्धांत निचोरि॥

मैं पृथ्वी पर सिर टेककर आप के चरणों की वंदना करती हूँ और हाथ जोड़कर विनती करती हूँ। आप वेदों के सिद्धांत को निचोड़कर श्री रघुनाथजी का निर्मल यश वर्णन कीजिए॥

अति आरति पूछउँ सुरराया। रघुपति कथा कहहु करि दाया॥
प्रथम सो कारन कहहु बिचारी। निर्गुन ब्रह्म सगुन बपु धारी॥

हे देवताओं के स्वामी ! मैं बहुत ही आर्तभाव (दीनता) से पूछती हूँ, आप मुझ पर दया कर के श्री रघुनाथजी की कथा कहिए। पहले तो वह कारण विचारकर बतलाइए, जिससे निर्गुण ब्रह्म सगुण रूप धारण करता है॥

पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा। बालचरित पुनि कहहु उदारा॥
कहहु जथा जानकी बिबाहीं। राज तजा सो दूषन काहीं॥

फिर हे प्रभु ! श्री रामचन्द्रजी के अवतार (जन्म) की कथा कहिए तथा उन का उदार बाल चरित्र कहिए। फिर जिस प्रकार उन्होंने श्री जानकी जी से विवाह किया, वह कथा कहिए और फिर यह बतलाइए कि उन्होंने जो राज्य छोड़ा, सो किस दोष से॥

बन बसि कीन्हे चरित अपारा। कहहु नाथ जिमि रावन मारा॥
राज बैठि कीन्हीं बहु लीला। सकल कहहु संकर सुखसीला॥

हे नाथ ! फिर उन्होंने वन में रहकर जो अपार चरित्र किए तथा जिस तरह रावण को मारा, वह कहिए। हे सुखस्वरूप शंकर ! फिर आप उन सारी लीलाओं को कहिए जो उन्होंने राज्य (सिंहासन) पर बैठकर की थीं॥

बहुरि कहहु करुनायतन कीन्ह जो अचरज राम।
प्रजा सहित रघुबंसमनि किमि गवने निज धाम॥

हे कृपाधाम ! फिर वह अद्भुत चरित्र कहिए जो श्री रामचन्द्रजी ने किया - वे रघुकुल शिरोमणि प्रजा सहित किस प्रकार अपने धाम को गए।

हे प्रभु ! फिर आप उस तत्त्व को समझाकर कहिए, जिसकी अनुभूति में ज्ञानी मुनिगण सदा मग्न रहते हैं और फिर भक्ति, ज्ञान, विज्ञान और वैराग्य का विभाग सहित वर्णन कीजिए॥

औरउ राम रहस्य अनेका। कहहु नाथ अति बिमल बिबेका॥
जो प्रभु मैं पूछा नहिं होई। सोउ दयाल राखहु जनि गोई॥

(इसके सिवा) श्री रामचन्द्रजी के और भी जो अनेक रहस्य (छिपे हुए भाव अथवा चरित्र) हैं, उनको कहिए। हे नाथ! आपका ज्ञान अत्यन्त निर्मल है। हे प्रभो ! जो बात मैंने न भी पूछी हो, हे दयालु ! उसे भी आप छिपा न रखिएगा॥

शिवजी ने पार्वतीजी के प्रश्नों के उत्तर में सम्पूर्ण रामकथा सुनाई। इसी पर तुलसीदास जी ने रामचरितमानस की रचना की।

माता सीता

माता सीता भगवान राम की सनातन संगिनी है। राम जी से मिथिला नरेश की पुष्पवाटिका में प्रथम वार मिलन में दोनों स्नेह में बँध गये। फिर धनुर्यज्ञ और विवाह के पश्चात राम एक

राजकुमार से मर्यादा पुरुषोत्तम विख्यात हो गये। सीताजी ने उन्हें करुणानिधान नाम भी दिया। यह रामचरित के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान है। राम जी की समस्त नर लीला में सहयोगिनी रही और अनेको कष्ट प्रसन्नता पूर्वक सहन किया। रावण द्वारा अपहृत होकर लंका में निवास किया। बाद में भी कितनी यातना और परीक्षाओं का सामना किया। परन्तु सर्वदा रामजी की मर्यादा बढ़ाई। लंका में यातना के बीच भी हनुमानजी के प्रस्ताव को ठुकरा दिया और उनके साथ लंका से बाहर नहीं आई। इस से रामजी की अप्रतिष्ठा होती। सीता माता ने अपना समस्त जीवन रामचरित के विकास में समर्पित कर दिया। हनुमान जी जब रामजी के साथ थे उन्होनें हनुमान जी को कोई आशीर्वाद नहीं दिया। जब वे माता सीताके पास गए तो माँ ने आशीर्वादों की बौछार कर दी। राम जी भी अपनी नरलीला में सीताजी के वियोग में दुःखी होकर भटकते हुये खग-मृग से उनका पता पूछते हैं

हे खग मृग हे मधुकर श्रेणी। तुम्ह देखी सीता मृगनैनी॥

हे पक्षियों ! हे पशुओं ! हे भौरों की पंक्तियों ! तुम ने कहीं मृग नयनी सीता को देखा है ?

तुलसीदास जी कहते हैं -

जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुनानिधान की॥
ताके जुग पद कमल मनावउँ। जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ॥

राजा जनक की पुत्री, जगत की माता और करुणा निधान श्री रामचन्द्रजी की प्रियतमा श्री जानकी जी के दोनों चरण कमलों को मैं मनाता हूँ, जिनकी कृपा से निर्मल बुद्धि पाऊँ॥

गिरा अरथ जल बीचि सम कहिअत भिन्न न भिन्न।
बंदउँ सीता राम पद जिन्हहि परम प्रिय खिन्न॥1

जो वाणी और उसके अर्थ तथा जल और जलकी लहर के समान कहने में अलग-अलग हैं, परन्तु वास्तव में अभिन्न (एक) हैं, उन श्री सीतारामजी के चरणों की मैं वंदना करता हूँ, जिन्हें दीन-दुःखी बहुत ही प्रिय हैं॥

तुलसीदासजी ने सीता और राम के मिलन का हीं सुंदर वर्णन किया है।

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि। कहत लखन सन रामु हृदयँ गुनि॥
मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही। मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्ही॥

कंकण (हाथों के कड़े), करधनी और पायजेब के शब्द सुनकर श्री रामचन्द्र जी हृदय में विचार कर लक्ष्मणसे कहते हैं - (यह ध्वनि ऐसी आ रही है) मानो कामदेव ने विश्व को जीतने का संकल्प करके डंके पर चोट मारी है॥

ऐसा कहकर श्री रामजी ने फिर कर उस ओर देखा। श्री सीता जी के मुख रूपी चन्द्रमा (को निहारने) के लिए उनके नेत्र चकोर बन गए। सुंदर नेत्र स्थिर हो गए (टकटकी लग गई)। मानो निमि (जनकजी के पूर्वज) ने (जिन का सब की पलकों में निवास माना गया है, लड़की-दामाद

के मिलन-प्रसंग को देखना उचित नहीं, इस भाव से) सकुचाकर पलकें छोड़ दीं, (पलकों में रहना छोड़ दिया, जिससे पलकों का गिरना रुक गया) ॥

सीता जी की शोभा देखकर श्री राम जी ने बड़ा सुख पाया। हृदय में वे उसकी सराहना करते हैं, किन्तु मुख से वचन नहीं निकलते। (वह शोभा ऐसी अनुपम है) मानो ब्रह्मा ने अपनी सारी निपुणता को मूर्तिमान कर संसार को प्रकट करके दिखा दिया हो ॥

(इस प्रकार) हृदय में सीता जी की शोभा का वर्णन कर के और अपनी दशा को विचारकर प्रभु श्री रामचन्द्र जी पवित्र मन से अपने छोटे भाई लक्ष्मण से समयानुकूल वचन बोले ॥

तात जनकतनया यह सोई। धनुषजग्य जेहि कारन होई ॥
पूजन गौरि सखीं लै आईं। करत प्रकासु फिरइ फुलवाईं ॥

हे तात ! यह वही जनक जी की कन्या है, जिस के लिए धनुष यज्ञ हो रहा है। सखियाँ इसे गौरी पूजन के लिए ले आई हैं। यह फुलवाड़ी में प्रकाश करती हुई फिर रही है।

करत बतकही अनुज सन मन सिय रूप लोभान।
मुख सरोज मकरंद छबि करइ मधुप इव पान ॥

यों श्री राम जी छोटे भाई से बातें कर रहे हैं, पर मन सीता जी के रूप में लुभाया हुआ उनके मुख रूपी कमल के छबि रूप मकरंद रस को भौंरे की तरह पी रहा है ॥

चितवति चकित चहूँ दिसि सीता। कहँ गए नृप किसोर मनु चिंता ॥
जहँ बिलोक मृग सावक नैनी। जनु तहँ बरिस कमल सित श्रेनी ॥

सीता जी चकित होकर चारों ओर देख रही हैं। मन इस बात की चिन्ता कर रहा है कि राजकुमार कहाँ चले गए। बाल मृगनयनी (मृग के छौने की सी आँख वाली) सीता जी जहाँ दृष्टि डालती हैं, वहाँ मानो श्वेत कमलों की कतार बरस जाती है ॥

लता ओट तब सखिन्ह लखाए। स्यामल गौर किसोर सुहाए ॥
देखि रूप लोचन ललचाने। हरषे जनु निज निधि पहिचाने ॥

लोचन मग रामहि उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी ॥
जब सिय सखिन्ह प्रेमबस जानी। कहि न सकहिं कछु मन सकुचानी ॥

नेत्रों के रास्ते श्री रामजी को हृदय में लाकर चतुरशिरोमणि जानकी जी ने पलकों के किवाड़ लगा दिए (अर्थात नेत्र मूँदकर उनका ध्यान करने लगीं)। जब सखियों ने सीता जी को प्रेम के वश जाना, तब वे मन में सकुचा गईं, कुछ कह नहीं सकती थीं ॥

सीता जी शान्ति की साक्षात प्रतिमूर्ति हैं। राम जी उन्हें पाकर सीताराम बने और असंख्य जीवों ने जयसियाराम के जप से शान्ति और सुख प्राप्त किया।

अहिल्या

पंच कन्याओं में माता अहिल्या का भी नाम शामिल हैं। अहल्या, द्रोपदी, सीता, तारा, मंदोदरी ये हैं पंच कन्याएं। इनका स्मरण करने से हर तरह के पापों का नाश होता है। हिन्दू परम्पराओं में पंच कन्याओं का नाम आदर से लिया जाता है। ब्रह्मा जी की मानस पुत्री अहल्या अति सुंदर थी। इनका विवाह गौतम ऋषि के साथ हुआ था। एक बार इन्द्र गौतम ऋषि का रुप लेकर अहल्या के पास चला गया और उन से संसर्ग करने की चेष्टा की। अहिल्या इंद्र को पहचान न सकी। इसी दौरान गौतम ऋषि भी वहां पहुंच गए। उन्हें वहां देखकर इंद्र लज्जित हुआ और उसे उन के श्राप का भी शिकार होना पड़ा। गौतम ऋषि ने अहिल्या को भी श्राप दे दिया। अहिल्या पाषाण बन गईं। इसके बाद गौतम ऋषि हिमालय में साधना करने के लिए चले गए। कालांतर में जब भगवान राम वहां आए तो उन्होंने माता अहिल्या का उद्धार किया और फिर उन्हें उसी रूप में सामने खड़ा कर दिया। अहल्या के सारे पाप धुल गए और राम जी का नाम 'पतितपावन' विख्यात हो गया। उनके चरण धूलि की महिमा सुदूर देश में केवट तक पहुँच गई। रामचरित के विकास में यह महत्त्वपूर्ण योगदान है।

तुलसीदासजी ने मानस में इसका बहुत सुंदर वर्णन किया है।

ऋषि विश्वामित्र, राम जी से कहते हैं -

गौतम नारि श्राप बस उपल देह धरि धीर।
चरन कमल रज चाहति कृपा करहु रघुबीर॥

गौतम मुनि की स्त्री अहल्या शाप वश पत्थर की देह धारण किए बड़े धीरज से आप के चरण कमलों की धूलि चाहती है। हे रघुवीर ! इस पर कृपा कीजिए॥

परसत पद पावन सोकनसावन प्रगट भई तपपुंज सही।
देखत रघुनायक जन सुखदायक सनमुख होइ कर जोरि रही॥
अति प्रेम अधीरा पुलक शरीरा मुख नहिं आवइ बचन कही।
अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगल नयन जलधार बही॥1॥

श्री रामजी के पवित्र और शोक को नाश करने वाले चरणों का स्पर्श पाते ही सचमुच वह तपोमूर्ति अहल्या प्रकट हो गई। भक्तों को सुख देने वाले श्री रघुनाथ जी को देखकर वह हाथ जोड़ कर सामने खड़ी रह गई। अत्यन्त प्रेम के कारण वह अधीर हो गई। उसका शरीर पुलकित हो उठा, मुख से वचन कहने में नहीं आते थे। वह अत्यन्त बड़भागिनी अहल्या प्रभु के चरणों से लिपट गई और उसके दोनों नेत्रों से जल (प्रेम और आनंद के आँसुओं) की धारा बहने लगी॥

मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना।
देखेउँ भरि लोचन हरि भव मोचन इहइ लाभ संकर जाना॥

बिनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न मागउँ बर आना।

पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना ॥

मुनि ने जो मुझे शाप दिया, सो बहुत ही अच्छा किया। मैं उसे अत्यन्त अनुग्रह (करके) मानती हूँ कि जिसके कारण मैं ने संसार से छुड़ाने वाले श्री हरि (आप) को नेत्र भरकर देखा। इसी (आपके दर्शन) को शंकरजी सबसे बड़ा लाभ समझते हैं। हे प्रभो ! मैं बुद्धि की बड़ी भोली हूँ, मेरी एक विनती है। हे नाथ ! मैं और कोई वर नहीं माँगती, केवल यही चाहती हूँ कि मेरा मन रूपी भौंरा आपके चरण-कमल की रज के प्रेमरूपी रसका सदा पान करता रहे ॥3॥

जेहिं पद सुरसरिता परम पुनीता प्रगट भई सिव सीस धरी।
सोई पद पंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरेउ कृपाल हरी ॥
एहि भाँति सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरन परी।
जो अति मन भावा सो बरु पावा गै पति लोक अनंद भरी ॥4॥

जिन चरणों से परम पवित्र देव नदी गंगाजी प्रकट हुईं, जिन्हें शिव जी ने सिर पर धारण किया और जिन चरण कमलों को ब्रह्मा जी पूजते हैं, कृपालु हरि (आप) ने उन्हीं को मेरे सिर पर रखा। इस प्रकार (स्तुति करती हुई) बार-बार भगवान के चरणों में गिरकर, जो मन को बहुत ही अच्छा लगा, उस वरको पाकर गौतमकी स्त्री अहल्या आनंदमें भरी हुई पति लोक को चली गई ॥

शबरी

शबरी एक भीलनी थी। उसका स्थान प्रमुख राम भक्तों में है। वनवास के समय राम-लक्ष्मण ने शबरी का आतिथ्य स्वीकार किया था और उसके द्वारा प्रेम पूर्वक दिए हुए कन्दमूल फ़ल खाये। कुछ लोग जूठे बेरो का वर्णन करते हैं। परंतु वाल्मीकि, अध्यात्म रामायण तथा मानस में इसका उल्लेख नहीं है। भक्तमाल में जूठे फलों का खाना कहा है। शबरी के प्रेम और भक्ति से प्रसन्न होकर राम जी ने उसे परमधाम जाने का वरदान दिया। भगवान ने शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश दिया। राम जी ने कहा कि वे केवल भक्ति का नाता मानते हैं जाति, पाँति, कुल और धर्म को नहीं। भगवान का नाम भक्तवत्सल विख्यात हुआ। भगवान ने अपने उपदेश में भक्ति के नौ साधनों का विवरण दिया। वे हैं १. सत्संग, २. भगवान के कथा प्रसंग में रति, ३. गुरु पंकज सेवा, ४. भगवान का गुणगान, ५. भगवान के मंत्र का जाप, इन्द्रिय दमन शील होना और बहुत कर्मों से वैराग्य होना, ७. जगत् भर को एक समान राम मय देखना और संतों को मुझ से अधिक समझना, ८. जथा लाभ, संतोष और स्वप्न में भी पर दोष नहीं देखना, ९. सरल स्वभाव और सब से छलहीन। अन्त में भगवान कहते हैं कि इन नौ में से जिनके मन में एक भी भक्ति रहती है वह भगवान के अतिशय प्रिय है। यहाँ पर उल्लेखनीय है कि नवधा भक्ति का यह उपदेश प्रसिद्ध श्रवणादिक नवधा भक्ति (श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्। अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ॥) से भिन्न है।

शबरी ने रामजी को पंपा सरोवर के पास जाकर बालि के भाई सुग्रीव से मिलने और मित्रता करने को कहा। वहाँ पर हनुमानजी से भेंट हुई और सुग्रीव से मित्रता हो गई। इसने राम कथा की दिशा बदल दी और रावन के विनाश और सीता माता को मुक्त कराने में सहायता की। शबरी जी सामाजिक और राजनयिक बिषयों भी बहुत चतुर थीं। उन्होनें राम जी को सुग्रीव के

पास भेजा जब कि बालि ष्किंधा का राजा था। बालि रावन का मित्र था और रामजी की सहायता कभी नहीं करता था। सुग्रीव बालि का शत्रु था और पीड़ित भी। वह आभार के साथ रावन के विरुद्ध सहायता करता था|

त्रिजटा

त्रिजटा राम भक्त बिभीषण जी की पुत्री है। वह राबण की भ्रातृजा है। राक्षसी उसका वंशगुण है और रामभक्ति उसका पैतृक गुण। लंका की अशोक वाटिका में सीता जी के पहरे पर अथवा सहचरी के रूप में रावण द्वारा जिस स्त्री-दल की नियुक्ति होती है, त्रिजटा उस में से एक है और राम की महिमा का वखान कर रामचरित में योगदान दिया है। अपने सम्पूर्ण चरित्र में सीता के लिये इसने परामर्शदात्री एवं प्राण रक्षिका का काम किया है। यही कारण है कि विरहाकुला और त्रासिता सीता ने त्रिज़टा के सम्बोधन में माता शब्द का प्रयोग किया है|

त्रिजटा सन बोलीं कर जोरी। मातु बिपति संगिनि तें मोरी॥

तारा

तारा वानर राज बालि की पत्नी है। तारा की बुद्धिमता, प्रत्युत्पन्नमतित्वता, साहस तथा अपने पति के प्रति कर्तव्यनिष्ठा को सभी पौराणिक ग्रन्थों में सराहा गया है। तारा को हिन्दू धर्म ने पंचकन्याओं में से एक माना है। हालांकि तारा की मुख्य भूमिका में रामायण में केवल तीन ही जगह दर्शाया गया है, लेकिन उसके चरित्र ने रामायण कथा को समझने वालों के मन में एक अमिट छाप छोड़ दी है। जिन तीन जगह तारा का चरित्र मुख्य भूमिका में है, वे इस प्रकार हैं :-

- सुग्रीव-बालि के द्वितीय द्वंद्व से पहले तारा की बालि को चेतावनी
- बालि के वध के पश्चात् तारा का विलाप
- सुग्रीव की पत्नी बनने के पश्चात् क्रोधित लक्ष्मण को शान्त करना

मंदोदरी

मंदोदरी रामायण के पात्र, पंचकन्याओं में से एक हैं जिन्हें चिर-कुमारी कहा गया है। मंदोदरी मय दानव की पुत्री थी। उसका विवाह लंकापति रावण के साथ हुआ था और मेघनाथ की माता थी। अतिकाय व अक्षयकुमार इसके अन्य पुत्र थे। रावण को सदा यह अच्छी सलाह देती थी। उसे पता था कि राम भगवान हैं। इनसे मित्रता कर सीता जी को वापस करने की सलाह बार-बार देती थी।

रामचरित के विकाश में दुष्टपात्रों का योगदान

भगवान का अवतार संत जनों की रक्षा, दुष्ट जनों का संहार और पतितों के उद्धार के लिये होता है। इन उद्देश्यों की पूर्ति में दुष्ट पात्रों के सहयोग का रामचरित के विकास में बड़ा योगदान है। इस संदर्भ में ताड़का और शूर्पणखा का विवरण आवश्यक है।

रामचरितमानस में तुलसीदास लिखते हैं -

जब-जब होई धरम की हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी ॥
तब-तब प्रभु धरि विविध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा. ॥

जब-जब धर्म का ह्रास होता है और अभिमानी राक्षस प्रवृत्ति के लोग बढ़ने लगते हैं तब-तब कृपानिधान प्रभु भांति-भांति के दिव्य शरीर धारण कर सज्जनों की पीड़ा हरते हैं |

भगवद्गीता में भगवान कहते हैं -

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे ॥4.8॥

साधु पुरुषों के रक्षण, दुष्कृत्य करने वालों के नाश, तथा धर्म संस्थापना के लिये, मैं प्रत्येक युग में प्रगट होता हूँ ॥

ताड़का

ताड़का रामायण की एक दुष्ट पात्र थी। यह सुकेतु यक्षकी पुत्री थी यह अयोध्या के समीप स्थित सुंदर वन में अपने पति और दो पुत्रों, सुबाहु और मारीचके साथ रहती थी। उसके शरीर में हजार हाथियों का बल था। उसके प्रकोप से सुंदर वन का नाम ताड़का वन पड़ गया था। उसी वन में विश्वामित्र सहित अनेक ऋषि-मुनि भी रहते थे। उनके जप, तप और यज्ञ में ये राक्षस गण हमेशा बाधाएँ खड़ी करते थे। विश्वामित्र राजा दशरथ से अनुरोध कर राम और लक्ष्मण को अपने साथ सुंदर वन लाए। राम ने ताड़का का और विश्वामित्र के यज्ञ की पूर्णाहूति के दिन सुबाहु का भी वध कर दिया। मारीच उनके बाण से आहत होकर दूर दक्षिण में समुद्र तट पर जा गिरा। ताड़का का वध दुष्टों के संहार का राम जी का पहला प्रकरण था। इसके बाद वे राजकुमार छात्र से "रघुवीर" नाम से विख्यात हुये। अध्यात्म रामायण में कहा गया है कि ताड़का एक यक्षिणी थी और शाप से राक्षसी बन गई थी। राम जी ने इसका उद्धार किया और वह फिर यक्षिणी बनकर अपने लोक चली गई।

शूर्पणखा

शूर्पणखा रामायण की एक दुष्ट पात्र थी। वह रावण की बहन थी। सूपे जैसी नाखूनों की स्वामिनी होने के कारण उसका नाम शूर्पणखा पड़ा। वाल्मीकि रामायण के अनुसार, जब राम और लक्ष्मण ने उस से विवाह करने की उसकी याचना को अस्वीकार कर दिया तब वह क्रोधित होकर सीता पर आक्रमण करने के लिये झपटी। इस पर लक्ष्मण ने उसके नाक-कान काट दिये। अपमानित होकर विलाप करती हुई वह अपने भाई रावण के पास गयी और रावण ने इस अपमान का बदला लेने की प्रतिज्ञा की। रावण सीता को चुरा ले गया। राम-रावण युद्ध हुआ। अन्ततः राम ने रावणका वध किया।

आदरणीय मानस प्रेमी जन, आपने देखा कि इन नारियों ने रामचरित के विकास में कितना योगदान दिया और राम जी की गरिमा बढाने में सहायक बनीं। कहा जाता है कि सब सफल

ब्यक्ति के पीछे नारी का हाथ होता है। वास्तव में व्यक्ति, समाज और देश के विकास में नारियों का योगदान आवश्यक है। हमारे ऋषियों ने कहा है -

`यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:' । जहॉं नारियों का सम्मान होता है, वहीं देवता रहते हैं।

संदर्भ

रामचरितमानस - गोस्वामी तुलसीदास
अध्यात्म रामायण

हनुमानजी की व्यक्ति पहचानने की कला

आदित्य शुक्ल

डॉ आदित्य शुक्ल एक प्रतिष्ठित वैज्ञानिक, प्रभावी वक्ता, प्रगतिशील चिंतक, सुमधुर कवि एवं श्रीरामचरितमानस के अध्येता व प्रवक्ता हैं। रसायन शास्त्र में पी एच डी, ऑपरेशन मैनेजमेंट में एम.बी. ए. तथा हिंदी साहित्य में एम. ए. की शिक्षा प्राप्त हैं। डॉ आदित्य शुक्ल श्रीरामचरितमानस के प्रसंगों में निहित मानवीय सबंधों के मनोविज्ञान को समझने एवं उसे गीत, कविता तथा व्याख्यान के रुप में सटीक प्रस्तुत करने में दक्ष हैं।

अपने परिवार, समाज, कार्यालय, व्यवसाय व अन्य क्षेत्रों में हमें नियमित रुप से विभिन्न प्रकार के लोगों से मिलना और उनसे व्यवहार करना पड़ता है। लोगों की सार्थक पहचान तथा तदनुरूप उनसे उचित व्यवहार भी जीवन में सफलता को निर्धारित करता है। यदि व्यक्तित्व के संदर्भ में इस विषय पर सूक्ष्म रूप से विचार करें तो तीन बातें महत्वपूर्ण हैं:

1. व्यक्ति की सही पहचान
2. व्यक्ति की समय पर पहचान
3. व्यक्ति को पहचानने के पश्चात उनसे समुचित व्यवहार

इन तीनों मापदंडों पर शत-प्रतिशत खरे उतरने वाले बिरले लोग होते हैं। बहुत से लोगों को तो व्यक्ति की सही पहचान ही नहीं होती। कुछ लोग होते हैं, जिन्हें व्यक्ति की पहचान तो होती है, मगर समय निकल जाने के बाद। इसके लिये उन्हें या तो दुर्जनों के साथ कटु अनुभव से गुजरना पड़ता है या फिर श्रेष्ठ व्यक्तियों से बिछड़ना पड़ता है। दोनों ही स्थितियों में नुकसान पहले ही हो चुका होता है। तीसरी स्थिति तो इन दो स्थितियों से भी ज्यादा पीड़ादायक है, जब व्यक्ति में औरों को समय पर ही परख लेने की क्षमता तो होती है, मगर वे उनसे उचित व्यवहार करना नहीं जानते।

सामान्यतः यह भी देखा गया है कि श्रेष्ठ व्यक्ति को श्रेष्ठ की तथा दुष्ट व्यक्ति को दुष्ट की पहचान करने की क्षमता होती है। किन्तु आदर्श स्थिति में किसी व्यक्ति में श्रेष्ठ व दुष्ट व्यक्ति, दोनों को समान रूप से पहचान करने का कौशल होना चाहिए। यही विशेषता हनुमानजी के व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण गुण है।

हम इस संदर्भ में सुंदरकाण्ड में वर्णित हनुमानजी की लंका यात्रा के दौरान घटने वाली घटनाओं पर चिंतन करते हैं। जब हनुमान जी लंका की ओर प्रस्थान करते हैं तो सीताजी से मिलने से पहले उनकी भेंट अन्य पांच लोग क्रमशः मैनाक, सुरसा, समुद्र की निशिचरी, लंकिनी और विभीषण से होती है।

इन पाँचों से हनुमान जी का कोई पूर्व परिचय नहीं था। वे उन्हें लंका जाते समय मार्ग में ही मिलते हैं। हनुमानजी उन पाँचों की न केवल तुरन्त और सही पहचानते करते हैं बल्कि उन सबके साथ समुचित एवं अलग-अलग व्यवहार करते हैं। 'मैनाक' को प्रणाम करते हैं, 'सुरसा' को माँ कहते हुए और उनके साथ कौतूहल करते हैं, समुद्र में रहने वाली 'निशिचरी' के साथ बिना किसी वार्तालाप के सीधे उसका वध करते हैं, 'लंकिनी' पर मुष्टिका प्रहार करते हैं और 'विभीषण' से गले मिलकर मित्रता करते हैं। जीवन में सफलता पाने के लिये हनुमानजी के इस अनोखे एवं रोचक व्यवहार के मर्म को समझना नितांत आवश्यक है। इन पांचों घटनाओं पर एक एक करके विचार करते हैं।

1. हनुमानजी की मैनाक से भेंट

जब हनुमानजी लंका की ओर प्रस्थान करते हुए समुद्र के ऊपर से जाते हैं तब उनकी पहली मुलाकात 'मैनाक' से होती है। हनुमानजी की थकावट दूर करने के लिये समुद्र मैनाक को हनुमानजी की सेवा में भेजते हैं।

जलनिधि रघुपति दूत बिचारी। तैं मैनाक होहि श्रम हारी।।

मानस में वर्णन आता है कि 'मैनाक' सोने का एक पर्वत है। यहाँ कितना सुंदर संकेत है कि जब आप बड़े लक्ष्य के लिये समर्पित होकर कर्म करना प्रारम्भ करते हैं तब रास्ते में अनेक प्रकार के सुख-सुविधा व प्रलोभन पहले ही मिलना शुरू हो जाता है। कई लोग तो इन्हीं प्रलोभनों में उलझकर लक्ष्य से भटक जाते हैं। इसमें यह आवश्यक नहीं कि प्रलोभन हमेशा कोई गलत व्यक्ति द्वारा या गलत भावना से दिया जाता है। कई बार यह कार्य परिवार के सदस्य, कोई शुभचिंतक या आपसे कृतज्ञ लोग भी आपको सुविधा पहुंचाने के लिये कर सकते हैं। वस्तुतः मैनाक भी अपनी कृतज्ञता के कारण ही हनुमानजी के सम्मुख प्रस्तुत होते हैं। हनुमानजी यह तुरन्त समझ जाते हैं और मैनाक द्वारा प्रस्तुत सेवा का तिरस्कार नहीं करते अपितु संकेत रूप में उसे हाथों से छूकर स्वीकार करते हैं और साथ ही प्रणाम करते हुए कहते हैं कि हे मैनाक, मैं श्रीरामचंद्रजी के कार्य सम्पन्न किये बिना विश्राम नहीं कर सकता।

हनुमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम। राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम।।

इस प्रकार हनुमान जी मैनाक की पहचान एक शुभचिंतक के रूप में करते हुए उसके द्वारा प्रस्तुत सेवा का सम्मान करते हैं किंतु उसमें उलझे बिना ही अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो जाते हैं।

2. हनुमानजी की सुरसा से भेंट

जब हनुमान जी मैनाक से विदा लेकर आगे बढ़ते हैं तो उन्हें 'सुरसा' मिलती है। 'सुरसा' का परिचय सुन्दकाण्ड में तुलसीदास जी सर्पों की माता के रूप में कराते हैं।

जात पवनसुत देवन्ह देखा। जानैं कहुँ बल बुद्धि बिसेषा।।

सुरसा नाम अहिन्ह कै माता। पठइन्हि आइ कही तेहिं बाता।।

इसके पश्चात सुरसा जो बात हनुमानजी से कहती है वह समझाना विशेष महत्व की है। वह हनुमानजी से कहती है कि "आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा" अर्थात् आज देवताओं ने मुझे भोजन दिया है। यह सुनते हनुमानजी समझ जाते हैं कि सुरसा संस्कारवान एवं ईश्वर के प्रति कृतज्ञ है। यदि वह मुझे खाना भी चाहती है तो वह उसका स्वभाविक गुण है। क्योंकि सर्पिणी अपने स्वभाववश स्वयं के बच्चों को खा जाती है। सुरसा के मुँह से देवताओं के प्रति कृतज्ञता के शब्द सुनकर हनुमानजी उसे 'माई' अर्थात माँ शब्द से सम्बोधित करते हैं। साथ ही कहते हैं हे माँ अभी मैं अपने प्रभु श्री रामजी की सेवा में हूँ। मैं इस कार्य को पूर्ण करके लौट आऊँ और सीताजी की खबर प्रभु श्रीराम को सुना दूँ, उसके पश्चात मैं स्वयं आकर तुम्हारा आहार बन जाऊंगा। हे माता! मैं सत्य कहता हूँ, अभी मुझे जाने दो।

राम काजु करि फिरि मैं आवौं। सीता कइ सुधि प्रभुहि सुनावौं
तब तव बदन पैठिहउँ आई।सत्य कहउँ मोहि जान दे माई।।

इस तरह से हनुमानजी न केवल सुरसा की पहचान करते हैं अपितु अपने बल और बुद्धि के समुचित प्रयोग से उसे प्रभावित भी करते हैं। फलस्वरूप जो सुरसा कुछ देर पहले हनुमान जी को खा जाने की बात कह रही थी, अब वही प्रसन्न होकर हनुमानजी को आशीष देती हैं।

राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान।आसिष देइ गई सो हरषि चलेउ हनुमान।।

अब सुरसा से आशीर्वाद प्राप्त कर हनुमानजी हर्षित होकर आगे की यात्रा प्रारंभ करते हैं।

3. हनुमानजी की निशिचरी से भेंट

सुरसा के बाद हनुमानजी की जिससे भेंट होती है वह समुद्र में रहने वाली एक राक्षसी है। जिसका नाम भी ज्ञात नहीं है। तुलसीदास जी उसे केवल निशिचरी के नाम से संबोधित करते हैं। वह निशिचरी आकाश में उड़ने वाले जीव-जंतुओं को जल में उनकी परछाईं देखकर ही पकड़ लेती थी। जिससे वे जंतु उड़ नहीं सकते थे और जल में गिर पड़ते थे। इस प्रकार वह सदा आकाश में उड़ने वाले जीव-जंतुओं को अपना शिकार एवं भोजन बनाया करती थी। उस निशिचरी ने हनुमानजी से भी वही छल करना चाहा। परन्तु हनुमानजी तुरंत उसकी कपट को पहचान लेते हैं तथा बिना कोई समय गवाएं उस राक्षसी का वध करके समुद्र पार करते हैं।

सोइ छल हनूमान् कहँ कीन्हा। तासु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हा।।
ताहि मारि मारुतसुत बीरा। बारिधि पार गयउ मतिधीरा।।

इस प्रसंग में छुपे तथ्य पर विचार करने से हमें ज्ञात होता है कि हमारे जीवन में भी निशिचरी के समान कई लोग होते हैं। जिनका नाम भी हम नहीं जानते। वे हमारे परछाई अर्थात नाम, यश, प्रतिभा, सम्मान, अवसर, इत्यादि को छलपूर्वक ग्रसना चाहते हैं और किसी भी माध्यम से अपना शिकार बनाना चाहते हैं। इस निशिचरी को मनुष्य के भीतर पाये जाने वाले मनोविकारों

के प्रतीक के रूप में भी समझ सकते हैं। जो हमारी सफलता के लिये सबसे ज्यादा घातक है। सुन्दकाण्ड का यह प्रसंग हमें यह सूत्र देता है कि हम अपने व्यक्तित्व में छुपे अनाम व अंजान विकारों का बुद्धि पूर्वक पहचानकर, उनका बलपूर्वक दमन करें। इसके पश्चात ही सफलता की राह में आगे बढ़ा जा सकता है।

4. हनुमानजी की लंकिनी से भेंट

जब हनुमानजी मच्छर के समान सूक्ष्म रूप धरकर लंका में प्रवेश करने का प्रयास करते हैं उस समय उनकी भेंट 'लंकिनी' नाम की एक राक्षसी से होती है। लंका की द्वारचारिका लंकिनी सूक्ष्म दृष्टि वाली है। वह हनुमानजी को अतिलघु रूप में अंधेरे में भी देख लेती हैं और कहती है कि तुम मेरा निरादर करके या मुझसे बचकर यहाँ से नहीं जा सकते।

मसक समान रूप कपि धरी। लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी।।
नाम लंकिनी एक निसिचरी। सो कह चलेसि मोहि निंदरी।।

लंकिनी इससे आगे हनुमानजी से कहती है कि अरे मूर्ख! तूने मेरा भेद नहीं जाना है। जितने चोर हैं, वे सब मेरे आहार हैं। इतना सुनते ही हनुमान्जी उस पर मुष्टिका प्रहार करते हैं, जिससे वह खून की उलटी करती हुई पृथ्वी पर गिर पड़ती है। हनुमानजी के मुष्टिका प्रहार से ही लंकिनी को समझ में आ जाता है कि ये मच्छर के सामान रूप वाले पुरुष कोई साधारण व्यक्ति नहीं है। फिर वह अपने को संभालकर उठी और डर के मारे हाथ जोड़कर विनती करने लगती है।

जानेहि नहीं मरमु सठ मोरा। मोर अहार जहाँ लगि चोरा।।
मुठिका एक महा कपि हनी। रुधिर बमत धरनीं ढनमनी।।
पुनि संभारि उठी सो लंका। जोरि पानि कर बिनय ससंका।।

इस प्रसंग को हम आज के सन्दर्भ में समझें तो लंकिनी एक प्रतिभावान प्रहरी है जो एक विशेष जिम्मेदारी के साथ लंका के प्रवेश द्वार में पहरा करती है। हनुमानजी से पहले ही सम्बोधन में वह 'मूर्ख' शब्द का प्रयोग करती है। उसके इस सम्बोधन से हनुमानजी भलीभांति जान जाते हैं कि लंकनी में संस्कार एवं व्यक्ति को पहचानने की सही समझ नहीं है। यहाँ लंकिनी की बातों में एक बड़ा विरोधाभास भी है। वह कहती है कि जो चोर है वह मेरे आहार हैं। वस्तुतः चोर तो रावण है जो सीताजी को चुराकर लंका ले आया है। यह बात लंकिनी भी जानती है मगर "वह असली चोर रावण को अपना आहार बनाने की जगह चोर को पकड़ने की चेष्ठा रखने वाले हनुमानजी को अपना आहार बनाने का प्रयास करती है।" अर्थात 'लंकिनी' जो कह रही है और उसकी जो जिम्मेदारी है वह उसके विपरीत कार्य करते हुए प्राप्त शक्तियों का दुरुपयोग कर रही थी। हनुमानजी मुष्टिका से प्रहार कर उसे सही कर्तव्यों का ज्ञान कराते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि जो लंकिनी पहले हनुमानजी को आहार समझ रही थी, अब वही उनके सहायक बनकर लंका में प्रवेश करने तथा सब कार्य सम्पन्न करने की प्रेरणा देती हैं।

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदयँ राखि कोसलपुर राजा।।

5. हनुमानजी की विभीषण से भेंट

इस प्रसंग के अंतिम क्रम में हनुमानजी की भेंट विभीषण से होती है। जब हनुमानजी सीताजी की खोज में लंका के भीतर विचरण करते रहते हैं, तब उनकी दृष्टि एक ऐसे घर पर पड़ती है जहां श्रीराम के आयुध धनुष-बाण के चिन्ह अंकित थे। इसके साथ ही हनुमानजी उस घर में तुलसी के पौधों के समूह को देखकर प्रसन्न हो जाते हैं ।

रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ।
नव तुलसिका बृंद तहँ देखि हरष कपिराई॥

विभीषण के घर के परिदृश्य को बाहर से ही देखकर हनुमानजी जान जाते हैं कि यह किसी सज्जन का घर है। किंतु हनुमानजी मन में विचार करते हैं कि लंका एक मायावी नगरी है., यहां राक्षसों का ही वास है। इसलिये किसी पर सहज विश्वास करना ठीक नहीं है । हनुमानजी मन में यह विचार करते रहते हैं। उसी समय विभीषण जग जाते हैं।

लंका निसिचर निकर निवासा। इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा॥
मन महुँ तरक करैं कपि लागा।तेहीं समय बिभीषनु जागा॥

जैसे ही विभीषण जागते हैं, हनुमानजी दूर से उनके क्रियाकलापों पर नज़र रखते हैं। कुछ देर बाद विभीषण के मुख से श्रीराम नाम का सुमिरन सुनते ही हनुमानजी जान जाते हैं कि ये अवश्य ही सज्जन व्यक्ति है और यह जानकर उनका हृदय हर्ष से भर जाता है।

राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा। हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा॥

लोगों को पहचानने का हनुमानजी का यह विशिष्ट तरीका है। विभीषण के घर में मंगल प्रतीक चिन्हों को देखने के बाद भी हनुमान जी के मन में संशय बना रहता है। किन्तु जब वे विभीषण के मुख से श्रीराम नाम का सुमिरन सुनते हैं तो उन्हें विश्वास हो जाता है कि विभीषण संत पुरुष हैं। क्योंकि हनुमानजी जानते हैं कि श्रीराम का नाम माया से परे है। श्रीराम के नाम का सुमिरन करने वाला व्यक्ति राक्षस नहीं हो सकता। हनुमानजी तय करते हैं कि मैं इस संतपुरुष से हठ पूर्वक परिचय करूँगा। क्योंकि उन्हें पता था कि साधु से मिलने से लाभ हो न हो, हानि कभी नहीं होती।

एहि सन हठि करिहउँ पहिचानी। साधु ते होइ न कारज हानी॥

और इस तरह हनुमानजी विभीषण का विचारपूर्वक पहचान कर मित्रता करते हैं। इस भेंट की भी अपनी एक विशेषता है। इससे पहले हनुमानजी की मैनाक, सुरसा, राक्षसी व लंकिनी से भेंट हुई थी। मगर वे सब के सब स्वयं आगे आकर हनुमानजी से मिले थे। इसके विपरीत विभीषण से मिलने के क्रम में हनुमानजी स्वयं आगे बढ़कर उनसे मिलते हैं और मित्रता करते हैं। और यही मित्रता आगे चलकर न केवल सीताजी की खोज में हनुमानजी की मदद करतें हैं बल्कि श्रीराम द्वारा रावण वध करने में भी सहायक होते हैं।

उपसंहार

हम सब भी अपने परिवार, समाज, कार्यालय, व्यवसाय एवं कर्म क्षेत्र में ऐसे ही पाँच प्रकार के लोगों से मिलते हैं। इसमें से पहले प्रकार के लोग 'मैनाक' जैसे होते हैं, जो हमारे हितैषी व शुभचिंतक बनकर, हमारे समक्ष सुख-सुविधा मुहैया कराकर या कई प्रकार के प्रलोभन देकर हमें बड़े लक्ष्य के प्रति समर्पित होने से अनजाने ही रुकावट बनते हैं।

दूसरे प्रकार के लोग 'सुरसा' के समान होते हैं जो साधन सम्पन्न एवं संस्कारी तो होते हैं। मगर अपने स्वभाव एवं अहंकार के कारण या तो हमारी परीक्षा लेते हैं या हमको नुकसान पहुंचाने की चेष्ठा करते हैं।

तीसरे प्रकार के लोग समुद्र की निसिचरि जैसे होते हैं। जिनका नाम, परिचय व उद्देश्य का ज्ञान हमें नहीं रहता मगर वे हमारी छाया अर्थात यश, वैभव, प्रसिद्धि, इत्यादि को देखकर आपको ग्रसने की योजना बनाते रहते हैं। हम इसे स्वयं के भीतर उपस्थित मनोविकार मान सकते हैं।

चौथे प्रकार के लोग 'लंकिनी' जैसे होते हैं। जो समाज में किसी विशेष जिम्मेदारी की तहत होते हैं। मगर वे समाज से प्राप्त शक्ति एवं संसाधन का दुरुपयोग कर हमें नुकसान पहुंचाना चाहते हैं। इनकी आंखे इतनी पैनी होती है कि ये हमारी छोटी से छोटी गतिविधियों को भी पहचान लेते हैं और हमको आगे बढ़ने से रोकने का प्रयास करते हैं।

पांचवा व अंतिम प्रकार के लोग 'विभीषण' जैसे होते हैं। जो समाज में धर्म, न्याय, सत्कर्म तथा पुरुषार्थ के पक्षधर होने कारण समाज में उपेक्षित होते हैं।

हम अपने कर्म क्षेत्र में बल और बुद्धि के समुचित प्रयोग करते हुए इन पांच प्रकार लोगों की यथाशीघ्र पहचान तथा सबसे यथायोग्य व्यवहार करने की कला हनुमानजी के चरित्र से सीखकर अपना मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

त्यागहु तम अभिमान
अलका प्रमोद

18 जुलाई को लखनऊ, भारत में जन्म। वनस्पति विज्ञान में स्नातकोत्तर। 24 कृतियाँ प्रकाशित, 2 प्रकाशनाधीन। 20 कृतियों के संपादन से सम्बद्ध। देश-विदेश से विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन व प्रसारण। कृतियों पर छात्रों द्वारा शोध। उर्दू, असमिया में रचनाओं का अनुवाद। पाठ्यक्रम में बालकहानी सम्मिलित। कहानी का नाट्य मंचन। पूर्व में 'जनसंदेश' में स्तम्भ लेखन। 45सम्मान/पुरस्कार प्राप्त।

'राम चरित मानस' धर्म ग्रंथ ही नहीं मानव समाज के लिये समाजनीति, राजनीति, अर्थनीति और धर्मनीति का शिक्षण है जो एक उत्कर्ष समाज निर्माण का सद्मार्ग दिखाता है। यह उसकी सोई हुई चेतना को जाग्रत करता नीति शास्त्र है जिसमें मानव के व्यवहारिक जीवन की सम्पूर्ण नीतियों का वर्णन है। राम चरित मानस आस्था का पर्याय तो है ही सामाजिक और व्यवहारिक नीतियों के रत्नों से परिपूर्ण वह सागर है जो चिन्तन मनन योग्य हैं। यह संभवतः एक मात्र ग्रन्थ है जिसमें मानव समाज की प्रत्येक काल- परिस्थिति में अनुकरणीय व्यवहार की व्याख्या की गयी है। कहना न होगा कि सम्पूर्ण मानस नीति के विभिन्न पक्षों की पाठशाला है जो हमारी संस्कृति का दर्पण तो है ही साथ ही समाज को संस्कारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रामायण में वर्णित घटनाएं दुष्प्रवृत्ति के प्रति चेताती है।

यद्यपि कवि श्रेष्ठ तुलसीदास ने काम, क्रोध, मद, अभिमान, लोभ, मोह, क्षोभ, राग, कपट सभी दुर्गुणों से दूर रहने का संदेश दिया परन्तु अभिमान को मानव प्रकृति के लिये सर्वाधिक निकृष्ट श्रेणी में मान कर कवि ने सम्पूर्ण मानस में बार-बार अहंकार के प्रति मानव को चेताने का प्रयास किया है। आदि से अंत तक विविध प्रसंगो के माध्यम से राम चरित मानस में अभिमान को त्यागने का विशेष संदेश है। सम्पूर्ण राम गाथा में जिसने भी अहंकार किया, वह चाहे कितना भी सामर्थ्यवान हो अंततः उसका नाश ही हुआ है। चाहे वह बालि हो, मेघनाथ हो या रावण जिसने भी अहंकार किया वह नष्ट हो गया। रावण का दंभ ही तो पूरे लंका कांड का कारण बना।

मानस में बाल कांड से ले कर उत्तर कांड तक विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से अहंकार को निकृष्ट मानव दुर्गुण सिद्ध किया गया है। बाल कांड में स्वयं भगवान शंकर ने विष्णु के रामावतार के संदर्भ में चर्चा करते हुए कहा कि-

बोले बिहसि महेस तब ज्ञानी मूढ़ न कोइ। जेहि जस रघुपति करहिं जब सो तस तेहि छन होइ।।

अर्थात न कोई ज्ञानी, न ही कोई मूर्ख, श्री रघुनाथ जब जिसको जैसा करते हैं वह उसी क्षण वैसा ही हो जाता है। अतः कभी अहंकार नहीं करना चाहिये जो करते हैं, समाज में आगे नहीं बढ़ पाते।

सम्पूर्ण रामायण में बार-बार प्रत्येक विवेकशील व्यक्ति ने अहंकार त्यागने का आग्रह किया है। अयोध्या कांड में जब पिता दशरथ से माता कैकेयी ने भरत के लिये राजगद्दी और राम के वन गमन का वरदान माँगा तब राजा को अपने वचन की रक्षा के लिये राम को वन भेजना पड़ा। राम जब वन के लिये प्रस्थान करने लगे तो उनकी सहगामिनी सीता और राम के पग-पग पर अनुयायी अनुज, लक्ष्मण ने भी उनका अनुसरण किया तब राम को अपनी पत्नी और अनुज की रक्षा की चिन्ता हुई। वह अपनी समस्या के समाधान हेतु गुरू बाल्मीकि के आश्रम गये और उनसे पूछा कि सीता और लक्ष्मण को ले कर कहा जाऊँ, उत्तर में बाल्मिीकि ने कहा-

काम कोह मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न द्रोहा।।
जिन्ह कें कपट दंभ नहिं माया। तिन्ह कें हृदय बसहु रघुराया।।

अर्थात जिनके न तो काम, क्रोध, मद, अभिमान और मोह हैं, न लोभ है, न क्षोभ है, न राग है, न कपट, न दम्भ और न माया ही है, हे रघुराज! आप उनके हृदय में निवास कीजिये।

अरण्य कांड का एक प्रसंग है जब राम और उनके अनुज लक्ष्मण आपस में चर्चा कर रहे थे। लक्ष्मण ने अग्रज राम से कहा कि 'उस भक्ति के बारे में बताइये जिसके कारण आप सब पर दया करके मर्यादा पुरषोत्तम रूप में अन्य गुणों के साथ उनकी विनम्रता सर्वाधिक करते हैं' तो राम ने संतों के गुण बताते हुए कहा-

मम गुन गावत पुलक सरीरा। गदगद गिरा नयन बह नीरा।।

काम आदि मद दंभ न जाकें। तात निरंतर बस मैं ताकें।।'' मेरा गुण गाते समय जिसका शरीर पुलकित हो जाए, वाणी गदगद हो जाए, और नेत्रों से प्रेमाश्रुओं का जल बहने लगे और काम मद और दम्भ आदि जिसमें न हों, हे भाई! मैं सदा उसके वश में रहता हूँ। अतः यदि प्रभु की कृपा प्राप्त करनी है तो उनके प्रति प्रेम भक्ति तो वांछित है ही साथ में काम, मद और दंभ को त्यागना होगा।

लक्ष्मण के समान ही एक बार नारद मुनि ने भी प्रभु राम से संतों के लक्षण के विषय में जिज्ञासा प्रकट की थी। यह प्रसंग भी राम चरित मानस के अरण्य कांड में है। राम ने संतों के अनेक गुणों का वर्णन किया जिसमें उन्होंने एक बार फिर अभिमान रहित होने के लक्षण को दोहराते हुए कहा -

'सावधान मानद मदहीना। धीर धर्म गति परम प्रबीना।।'

अर्थात सावधान, दूसरों को मान देने वाले, अभिमान रहित, धैर्यवान, धर्म के ज्ञान और आचरण में अत्यंत निपुण हो।

आगे राम ने संतों को परिभाषित करते हुए पुनः कहा कि उनमें वैराग्य, विवेक, विनय, विज्ञान, परमात्मा के तत्व का ज्ञान और वेद पुराण का यथार्थ ज्ञान रहता है। वे दम्भ, अभिमान और मद कभी नहीं करते और कुमार्ग पर पैर नहीं रखते।

'बिरति बिबेक बिनय बिग्याना। बोध जथारथ बेद पुराना।।
दंभ मान मद करहिं न काऊ। भूलि न देहिं कुमारग पाऊ।।'

सम्पूर्ण रामायण इस बात की साक्षी है कि जिसने भी अभिमान किया उसका नाश हुआ। बाली का अपनी शक्ति का दर्प ही तो था जो उसके नाश का कारण बना था। बालि ने अपने भाई सुग्रीव से अपनी असीम शक्ति के अभिमान में दुर्व्यवहार किया और उसकी पत्नी को भी छीन लिया। जब सुग्रीव प्रभु राम की शरण में गये तो उन्होंने उसे शक्ति देते हुए बालि से लड़ने को भेजा परन्तु भावनावश वह अपने भाई से युद्ध नहीं कर पा रहा था तब अपने भक्त की रक्षा के लिये राम ने बालि जैसे अन्यायी का वध किया।

मानस के किष्किन्धा काण्ड में वर्णित है कि सुग्रीव को तिनके के समान जान कर वह महान अभिमानी बालि चला। दो नों भिड़ गये । बालि ने सुग्रीव को बहुत धमकाया और घूँसा मारकर जोर से गरजा। तब उस युद्ध में सुग्रीव की रक्षा के लिये प्रभु राम ने उसका अंत किया-

'अस कहि चला महा अभिमानी। तृन समान सुग्रीवहि जानी।।
भिरे उभौ बाली अति तर्जा। मुठिका मारि महासुनि गर्जा।।'

बालि ने मरते समय प्रभु राम से प्रश्न किया कि 'सुग्रीव आपको प्यारा है और मैं शत्रु ऐसा क्यों और आपने मुझे व्याध के समान क्यों मारा'तब राम ने कहा -

'मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाना । नारि सिखावन करसि न काना।।
मम भुज बल आश्रित तेहि जानी। मारा चहसि अधम अभिमानी।।'

'हे मूढ़! तुझे अत्यंत अभिमान है। तूने अपनी स्त्री की सीख पर भी कान नहीं दिया । सुग्रीव को मेरी भुजाओं के बल का आश्रित जानकर भी अरे अधम अभिमानी तूने उसको मारना चाहा।'

यह प्रसंग एक बार पुनः सिद्ध करता है कि बालि ने इतना शक्तिशाली होते हुए भी अपने अभिमान के वशीभूत हो कर अपना नाश किया।

रावण का अभिमान तो सर्वविदित है जो उसके सभी गुणों पर भारी पड़ा, उसके दंभ ने उसकी नियति बहुत पहले ही निर्धारित कर दी थी। एक बार अपने दंभ में चूर रावण अनेक राजाओं को पराजित करता हुआ अयोध्या पर राज्य कर रहे इश्वाकु वंश के राजा अनरण्य के पास पहुँचा। अपनी शक्ति के मद में चूर उसने उन्हें भी युद्ध के लिये ललकारा। दोनों में भीषण युद्ध हुआ। युद्ध में अनरण्य का शरीर बुरी तरह क्षत-विक्षत हो गया तो अभिमानी रावण इक्ष्वाकु वंश का अपमान और उपहास करने लगा। तब राजा अनरण्य ने उसे श्राप दिया कि 'तूने

व्यंग्यपूर्ण शब्दों से इक्ष्वाकु वंश का अपमान किया है इसलिये मैं तुझे श्राप देता हूँ कि महात्मा इक्ष्वाकु के इसी वंश में दशरथ नन्दन राम का जन्म होगा जो तेरा वध करेंगे।'

सुंदरकांड में वर्णित है कि राम जब सीता और लक्ष्मण के साथ वन में विचरण कर रहे थे तब सूर्पनखा ने दोनों भाइयों से विवाह का प्रस्ताव रखा और उनके द्वारा ठुकराने पर उसने सीता को मारना चाहा तब लक्ष्मण ने उसकी नाक काट ली थी और सूर्पनखा के भाई बाहुबली रावण ने बदला लेने के लिये सीता का हरण कर लिया। सीता का पता लगाने राम भक्त हनुमान लंका गये । वहाँ उनका रावण के सेवक राक्षसों और पुत्र से युद्ध हुआ जिसके बाद उन्हें मेघनाथ ने बाँध लिया। तब रावण के समक्ष आने पर उन्होंने राम की महिमा गाते हुए रावण को समझाया कि वह अभिमान छोड़ कर उनकी बात सुने और अपने पवित्र कुल का विचार करके भ्रम त्याग कर भक्त भयहारी राम को भजे। उन्होंने कहा-

'मोहमूल बहु सूल प्रद त्यागहु तम अभिमान। भजहु राम रघुनायक कृपा सिंधु भगवान।।'

अर्थात मोह ही जिसका मूल है ऐसे बहुत पीड़ा देने वाले तमरूपी अभिमान का त्याग कर दो और रघुकुल के स्वामी कृपा के समुद्र भगवान श्री रामचन्द्र का भजन करो।

यह रावण का दंभ ही तो था जिसने उसके विवेक को हर लिया और वह मूर्ख राम जैसे पराक्रमी की पत्नी माँ सीता का हरण कर लाया तथा उसके हितैषी आत्मीय जनों के बार-बार समझाने पर भी वह अनुचित कार्य करता रहा, उसने उनकी एक न सुनी।

रावण को उसकी पत्नी मंदोदरी, अनुज विभीषण, कुंभकर्ण, नाना और मंत्री मालवन्त, कालनेमि, रामदूत अंगद आदि ने समझाने का प्रयास किया परन्तु उसके नेत्रों पर दंभ का जो आवरण चढ़ा था उसने उसे कुछ भी न समझने दिया।

उसकी पत्नी मंदोदरी को जब रावण के कृत्य का पता चला तो उसने उसे राम की शक्ति बताते हुए सीता को वापस भेजने और प्रभु राम से युद्ध न करने का अनुरोध किया परन्तु उसने पत्नी की सलाह को हवा में उड़ा दिया । लंकाकांड में लिखा है कि मंदोदरी की बात सुन कर विनोद करते हुए रावण को सवेरा हो गया । तब स्वभाव से ही निडर और घमण्ड में अंधा लंकापति सभा में गया-

'एहि बिधि करत बिनोद बहु प्रात प्रगट दसकंध। सहज असंक लंकपति सभाँ गयउ मद अंध।।'

अपने अहंकार में डूबे रावण ने पत्नी की बात अनसुनी कर दी और अपनी सभा में जा कर बैठ गया।

'नाना बिधि तेहि कहेसि बुझाई सभाँ बहोरि बैठ सो जाई ।
मंदोदरीं हृदय अस जाना काल बस्य उपजा अभिमाना।'

अर्थात मंदादरी ने उसे बहुत तरह से समझा कर कहा पर वह सभा में जाकर बैठ गया। मंदोदरी ने हृदय में ऐसा जान लिया कि काल के वश में होने से पति को अभिमान हो गया है।

रावण के भाई विभीषण ने भी उसे समझाया और कहा कि "काम क्रोध अहंकार लोभ नरक पर ले जाने वाले रास्ते हैं इसलिये रावण तू इन सबका बहिष्कार कर सिर्फ राम का भजन कर जिस प्रकार संत लोग करते हैं"

'काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ। सब परिहहि रघुबीरहि भजहुँ भजहिं जेहि संत।'

पर रावण ने अपने भाई को दुत्कार दिया परिणामतः नीति का अनुयायी विभीषण प्रभु राम की शरण में चला गया। अपने दंभ में रावण ने मात्र स्वयं का नहीं वरन पूरी लंका का नाश किया। विचारणीय है कि यदि दंभ रावण जैसे बलशाली समर्थ राजा का नाश कर सकता है तो साधारण मानव की क्या बिसात?

यहाँ तक कि जब रावण के अनुज कुंभकर्ण को जो इन घटनाओं से अन्जान अपनी प्रकृति के अनुसार लम्बी निद्रा में लिप्त था जगा कर परिस्थि तियों से अवगत कराया गया और युद्ध करने के लिये कहा गया तो उसने भी रावण को समझाया था और अभिमान छोड़ने का आग्रह किया था-

'भल न कीन्ह तैं निसिचर नाहा। अब मोहि आइ जगाएहि काहा।।
अजहूँ तात त्यागि अभिमाना। भजहु राम होइहि कल्याना।।'

अर्थात, 'हे राक्षस राज तूने अच्छा नहीं किया। अब आ कर मुझे क्यों जगाया, हे तात! अब भी अभिमान छोड़ कर श्रीराम को भजो तो कल्याण होगा।' परन्तु रावण नहीं माना। तब परिणाम को जानते हुए भी अपने कर्तव्य की निर्वाह करते हुए लंका की रक्षा के लिये विवश कुंभकर्ण ने राम की सेना से युद्ध किया।

अभिमान का दुष्परिणाम लंका के ज्ञानी और अनुभवी अनेक लोगों को ज्ञात था पर उनके अनुभव और ज्ञान पर रावण का दंभ भारी पड़ा। रावण के नाना और मंत्री मालवन्त और कालनेमि ने भी रावण को समझाया था पर जिस रावण ने अपने भाइयों पत्नी किसी की नहीं सुनी वह उनकी क्या सुनता।

राम ने आक्रमण से पहले अपने दूत अंगद को भी लंका भेजा था। अंगद जब दूत बन कर रावण के दरबार में गये तो उन्होंने कहा कि उनके पिता बालि और रावण में मित्रता थी अतः वह समझाने आये हैं। उन्होंने रावण से कहा कि राज मद से या मोहवश तुम जगज्जननी सीता का हर लाये हो। अब तुम मेरे शुभवचन सुनो। प्रभु श्रीराम तुम्हारे सब अपराध क्षमा कर देंगे-

'नृप अभिमान मोह बस किंबा। हरि आनिहु सीता जगदंबा।।
अब सुभ कहा सुनहु तुम्ह मोरा। सब अपराध छमिहि प्रभु तोरा।।'

पर अभिमानी रावण ने उसे अपमानित किया अंततः अंगद ने कहा, 'तू राक्षसों का राजा और बड़ा अभिमानी है। परन्तु मैं तो श्री रघुनाथ के सेवक (सुग्रीव का दूत हूँ। जो मैं श्री राम के अपमान से न डरूँ तो तेरे देखते-देखते ऐसा तमाशा करूँ कि-

‘तैं निसिचरपति गर्ब बहूता। मैं रघुपति सेवक कर दूता।।
जौं न राम अपमानहिं डरऊँ। तोहि देखत अस कौतुक करऊँ।।’

अंत में अपने दंभ के कारण राम से युद्ध करके रावण जैसे शक्तिशाली राजा ने न केवल अपना अंत किया वरन अपने आत्मीयों सेना और नागरिकों को भी मृत्यु के घाट उतारा। धनधान्य से पूर्ण स्वर्ण नगरी लंका को भी हानि पहुँचाई।

जब राम लंका पर विजय प्राप्त कर सीता को वापस ले आये तब राम लक्ष्मण और सीता की शोभा देख कर देवराज इन्द्र भी मन ही मन स्तुति करने लगे। उन्होंने रावण के दुर्गुणों का बखान करते हुए उसे अभिमानी इंगित किया-

‘लंकेस अति बल गर्ब । किए बस्य सुर गंधर्ब।।
मुनि सिद्ध नर खग नाग। हठि पंथ सब कें लाग।।’

अर्थात लंकापति रावण को अपने बल का बहुत घमंड था। उसने देवता और गन्धर्व सभी को अपने बस में कर लिया था और वह मुनि सिद्ध मनुष्य पक्षी और नाग आदि सभी के हठपूर्वक पीछे पड़ गया था। रावण एक विद्वान शक्तिशाली राजा था परन्तु अभिमान के दुर्गुण ने उसके सभी गुणों को व्यर्थ कर दिया और न केवल धरती वरन देवलोक में भी देवताओं ने उसके अभिमान की ही निंदा की।

सम्पूर्ण मानस में गोस्वामी तुलसीदास ने अभिमान को आदि से अंत तक बार-बार दुर्गुण के रूप में यहाँ तक कि उन्होंने उसकी एक दुखकारी रोग के रूप में व्याख्या की है। उत्तरकांड में जब गरुड़ काकभुशुण्डि से सात प्रश्न पूछते हैं कि सबसे दुर्लभ शरीर, सबसे बड़ा सुख, सबसे बड़ा दुख, संत-असंत के भेद और सहज स्वभाव, सबसे महान पाप और पुण्य कौन सा है तथा मानस रोगों को समझा कर कहिये तो काकभुशुण्डि इसी संदर्भ में अन्य बातों के साथ बताते हैं कि-

‘अहंकार अति दुखद डमरुआ। दंभ कपट मद मान नेहरुआ।।
तृस्ना उदरबृद्धि अति भारी। त्रिबिधि ईषना तरुन तिजारी।।’

अर्थात अहंकार अत्यंत दुख देने वाला गाँठ का रोग है। दम्भ, कपट, मद और मान, नसों का रोग है। तृष्णा बड़ा भारी उदर वृद्धि रोग है। तीन प्रकार की प्रबल इच्छाएं -पुत्र धन और मान, प्रबल तिजारी हैं।

सार यह है कि सम्पूर्ण राम चरित मानस में यही संदेश है कि कोई कितने भी गुणों से सम्पन्न हो परन्तु यदि उसमे अहंकार आ गया तो सब व्यर्थ है। मनुष्य का अहम् सदैव सर्वोपरि रहा है कहना न होगा कि अहंकार जैसे दुर्गुण का दुष्परिणाम समझने के लिये अपनी चेतना को जाग्रत रखने के लिये तथा अपना जीवन सँवारने के लिये राम चरित मानस की शिक्षा को जीवन में आत्मसात् करना ही हितकारी है और अहंकार का त्याग ही जीवन को धन्य बनाएगा।

विश्व में रामकथा की पताका

राजेश श्रीवास्तव

रामायण केन्द्र भोपाल के निदेशक तथा ग्लोबल इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ रामायण के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ राजेश श्रीवास्तव हिन्दी के प्राध्यापक हैं। हिन्दी, अंग्रेजी तथा दर्शनशास्त्र में एम ए, सागर विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. तथा डी. लिट उपाधि प्राप्त हैं। वर्ल्ड रामायण कांफ्रेस जबलपुर 2016 तथा 2020 में फेकल्टी के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व किया। 'विश्व हिन्दी सम्मेलन मारीशस 2018 में विदेश मंत्रालय के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुए। पुस्तके- रामअयन, रक्षायन, डायरी में रामकहानी।

रामायणकाल में एकछत्र साम्राज्य की स्थिति एक गणतंत्र की ही भाँति है। हिमालय और विंध्यपर्वत श्रृंखलाओं के मध्य आर्यावर्त्त के अनेक स्वतंत्र राज्य थे। अंग, काशी, कोशल, कैकेय, मगध, मिथिला, बंग, विशाला, सिंधु, सौवीर, सौराष्ट्र, आदि अनेक राज्यों की स्थिति राष्ट्र के समान थी। इनमें बहुत दशरथ के अधीन थे। दशरथ कैकेयी के सामने स्पष्ट करते हैं कि जहाँ तक सूर्य का चक्र घूमता है वहाँ तक सारी पृथ्वी मेरे अधिकार में है। द्रविड़, सिन्धु सौवीर, सौराष्ट्र, दक्षिण भारत के सारे प्रदेश तथा अंग, बंग, मगध, मत्स्य, काशी और कोशल इन सभी समृद्धशाली देशों पर मेरा आधिपत्य है।

यावदावर्तते चक्रं तावती मे वसुंधरा। द्राविड़ाः सिन्धुसौवीराः सौराष्ट्राः
दक्षिणापथाः बंगांगमगधा मत्स्याः समृद्धाः काशीकोसलाः। (अयोध्या- 10/37)

राम बाली को स्मरण कराते हुए भी इस ओर संकेत करते हैं कि पर्वत, वन और काननों से युक्त यह सारी पृथ्वी ईक्ष्वाकुवशी राजाओं की है। कर देने वाले सामन्त नरेशों के समुदाय और विभिन्न देशों के निवासी अयोध्या की शोभा बढ़ाते हैं। (1/5/14)

राम साहित्य की मीमांसा करते मुझे लगता है कितनी ही जातियां नष्ट हो गयी अपने इतिहास के साथ। कितनी ही भाषाएं जिन्हें हम नहीं जानते। जिन्हें हम खोज भी नहीं पाए। हमारे ईर्दगिर्द उपलब्ध अबोले साहित्य को परखने में ही हम लाचार से हो जाते हैं तो उस अलिखित, अबोले साहित्य तक हम कैसे पहुँच सकते हैं जिसे काल के गाल ने चुपचाप निगल लिया है और जिसके संकेत सूत्र मात्र भी हमें बहुत ही मुश्किल से कठिनतम शोध के पश्चात कभीकभार मिल जाते हैं। राम साहित्य का वास्तविक इतिहास कैसा भी रहा हो किन्तु राम की संस्कृति के सूत्र वाल्मीकि से बहुत पहले के हैं, इसमें मुझे तनिक भी संदेह नहीं है।

रामकथा पर शोध करने वालों के दावे लगातार बढ़ रहे हैं। एक पाठक मित्र ने सूचित किया है कि इटली के लुइज पियो तेस्सी तोरी (जन्म 13 दिसंबर 1887 को इटली के उदीने शहर में) ने 1911 में फ्लोरेंस विश्वविद्यालय से रामचरित और रामायण' विषय पर पीएचडी की उपाधि

प्राप्त की थी। दूसरा शोधकार्य लंदन में 1918 में जे एन कार्पैनर ने किया। भारत में तुलसीदास पर पहली पीएचडी 1938 में नागपुर विश्वविद्यालय से श्री बलदेव प्रसाद मिश्र ने की थी। 1949 में हरिशचन्द्र राय ने लंदन से पीएचडी तथा फादर कामिल बुल्के ने प्रयाग विश्वविद्यालय से डी. फिल. की डिग्री (1949) रामकथा: उद्गम और विकास विशय पर प्राप्त की।

वाल्मीकि रामायण में सात कांड, पांच सौ सर्ग और चौबीस हज़ार श्लोक हैं। रामकथा का यही आदि सूत्र माना जाता है। रघुवंश की प्रस्तावना में कालिदास ने कहा है कि पूर्ववर्ती कवियों ने अपनी रचनाओं से रामकथा के मानकों को छिद्रित कर वाणी के प्रवेश के लिए पहले से ही सुराख बना दी है और इसलिए उनका काम उसी तरह आसान हो गया है जैसे हीरे की नोक से मणियों में धागा पिरोना।

"अथवा कृत-वाग्द्वारे वंशेऽस्मिन् पूर्व-सूरिभिः।
मणौ वज्र-समुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः।" (रघुवंश 1/4)

कवि कालिदास के कथन का तात्पर्य है : वाल्मीकि-प्रमुख पूर्वज मनीषियों ने रामाय़ण आदि ग्रन्थ रचकर सूर्य-सम्भूत वंश (रघुवंश) के बारे में वाणी का द्वार उन्मुक्त कर दिया है। सूची से बिद्ध मणि में सूत्र जैसे प्रवेश करता है, उसी प्रकार उसी वाणी-द्वार में प्रवेश कर मैं रघुवंश का वर्णन कर सकूँगा।

इससे लगता है कालिदास के समय तक अनेक रामायणों की रचना हो गई थी।

भारत की संस्कृति राम की संस्कृति है। यहाँ के कण-कण में राम बसते हैं। हर जन के हृदय में राम जहां– जहां भक्ति, वहां–वहां राम। विश्व के कोने –कोने में राम की धूम। भारत वंश का जहां–जहां प्रचार-प्रसार हुआ, वहां–वहां रामभक्त पहुंचे।राम की भक्ति मनुष्य मात्र को शान्ति और प्रेम देने वाली है, इसीलिए संवेदनशील मनुष्य राम से दूर हो ही नहीं सकता।इसमें भी आश्चर्य यह कि अनेक देश राम की स्मृतियों को संजोए बैठे हैं। रामकथा के सूत्र राम को भारत के साथ लंका तक ही ले जाते हैं लेकिन अनेक देशों में ऐसे साक्ष्य मिलते हैं जिनसे यह लगता है कि रामकथा की पहुँच यहाँ कैसे ? मारीशस भारत से बहुत दूर समुद्र के बीच एक छोटा–सा टापू। लेकिन सम्पूर्ण मारीशस राममय।

एक भक्त का यह तर्क समझ में आता है कि सियाराम मय सब जग जानी। लेकिन विश्व के अनेक देशों में मिलने वाला रामकथा का साहित्य, कलामंडित राममंदिरों की भव्यता और पौराणिक सूत्र यह प्रमाणित करते हैं कि रामकथा का क्षेत्र केवल भारतभूमि नहीं है उस पर सबका अधिकार है और वह समूचे विश्व में फैली हुई है।

रामकथा की तीन धाराएं भारत से समूचे विश्व की और प्रवाहित हुईं। पहली आध्यात्मिक, दूसरी सांस्कृतिक और तीसरी शैक्षणिक। आध्यात्मिक धारा मुख्यत: रामचरित मानस के माध्यम से गयी, जिसे प्रवासी भारतीय ले गये - मजदूर, व्यापारी या पेशेवर अधिकारी बनकर। यह धारा बहुत सशक्त है जो फिजी, मॉरिशस, ट्रिनिदाद, गुयाना, सूरीनाम आदि प्रवासी भारतीय देशों के

अतिरिक्त अमरीका, यूरोप, एशिया और आस्ट्रेलिया महाद्वीप के देशों में विद्यमान है और निरंतर विकासमान है। सांस्कृतिक धारा भारत के पड़ोसी देशों थाईलैंड, म्यांमार, कम्बोडिया, लाओस, मलेशिया, इंडोनेशिया आदि में प्रवाहित है, जिसमें रामकथा के महानायक श्रीराम को भगवान न मानकर सर्वगुण सम्पन्न महापुरुष माना गया है। तीसरी धारा को हम शैक्षणिक मान सकते हैं जो मुख्यत: अमरीकी, यूरोपीय और एशियाई देशों की उच्च शिक्षण संस्थाओं में अध्ययन, अध्यापन, शोध और अनुवाद के माध्यम से पहुंची। ये तीनों धाराएं समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। किन्तु यह बात भी ध्यान में रखने की है कि रूस में रामचरित मानस का अनुवाद भारत की स्वतंत्रता के तुरंत बाद हुआ और चीन में वाल्मीकि रामायण तथा मानस का अनुवाद क्रमश: सत्तर और अस्सी के दशक में हो सका।

सांस्कृतिक रूप से भी रामकथा का पिछले कुछ दशकों में एशियाई देशों के साथ आदान प्रदान हुआ है। अनेक देशों के रामलीला दल भारत आये और भारत से रामलीला दल सारे विश्व के देशों में भेजे गये। अमरीका के न्यूयार्क में एक प्रसिद्ध भारतीय संत स्वामी ब्रह्मानंद की प्रेरणा से रामायण बैले का गठन हुआ जिसके अधिकांश पात्र अमरीकी थे ।

नेपाल भारत से लगा हुआ सबसे निकटवर्ती देश है और सांस्कृतिक रूप से भी भारत के अधिक निकट है। नेपाल के राष्ट्रीय अभिलेखागार में वाल्मीकि रामायण की दो प्राचीन पांडुलिपियाँ सुरक्षित हैं। इनमें से एक पांडुलिपि के किष्किंधा कांड की पुष्पिका पर तत्कालीन नेपाल नरेश गांगेय देव और लिपिकार तीरमुक्ति निवासी कायस्थ पंडित गोपति का नाम अंकित है। इसकी तिथि (सं. 1076) 1019 ई. है। दूसरी पांडुलिपि की तिथि नेपाली संवत् 795 अर्थात 1674-76 ई. है। नेपाल में रामकथा का विकास वाल्मीकि रामायण तथा अध्यात्म रामायण के आधार पर हुआ है।

नेपाली साहित्य में भानुभक्त कृत रामायण को सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। नेपाल के लोग इसे ही अपना आदि रामायण मानते हैं। यद्यपि भानुभक्त के पूर्व भी नेपाली रामकाव्य परंपरा में गुमनी पंत और रघुनाथ भक्त का नाम उल्लेखनीय है। रघुनाथ भक्तकृत रामायण सुंदरकांड की रचना उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुई थी । इसका प्रकाशन नेपाली साहित्य सम्मेलन, दार्जिलिंग द्वारा कविराज दीनानाथ सापकोरा की विस्तृत भूमिका के साथ 1932 में हुआ। नेपाल में स्थित हनुमानढोका वहां रहने वाले भारतीयों एवं अन्य नेपालियों की आस्था का केंद्र है। यहां प्रतिष्ठित हनुमान जी की मूर्ति देखने लायक है।

मलेशिया में रामकथा के ग्रन्थ का नाम है 'हिकायत सिरी राम'। मुस्लिम बहुल मलेशिया में रामकथा पर आधारित नाटकों का मंचन बहुत लोकप्रिय है । मलेशिया के लोकजीवन में नगरों, व्यक्तियों, नदियों तथा अन्य स्थानों के नाम रामायण से लिए गए लगते हैं। मलेशिया के जनजीवन में रामायण मनोरंजन व प्रेरणा का सशक्त माध्यम बनकर उभरी है। यहां चमड़े की पुतलियों द्वारा रात को रामायण के प्रसंगों का मंचन किया जाता है, यहाँ भारतीय मूल के लोगों के अतिरिक्त मूल मलय लोगों में भी भारतीय संस्कृति के प्रति गहरा रुझान है।

थाईलैंड के अधिकांश निवासी बौद्ध धर्म के उपासक हैं फिर भी यहां राम को भक्तिभावना के साथ देखा जाता है। यहां के अनेक मन्दिरों में राम की मूर्तियां आज भी स्थापित हैं। थाईलैंड के लोगों का यह विश्वास है कि रामायण की कई घटनाएं उनके अपने देश में घटी थी। थाईलैंड की सांस्कृतिक जीवनधारा श्रीराम की जीवनदृष्टि में पूर्णत: समाहित है। थाईलैंड की एक नदी का नाम भी सरयू है। ठीक भारत की तरह वहां भी सरयू अयोध्या के निकट ही बहती है। थाईलैंड में एक स्थान का नाम अयोध्या भी है। यही नहीं, यहां श्रीराम के पुत्र लव के नाम पर लवपुरी (लोपबुरी) भी है।

भगवान बुद्ध के प्रभाव वाले इस देश में राम और बुद्ध के बीच कोई विभाजन रेखा दिखाई ही नहीं देती। इसका सबसे बड़ा प्रमाण बैंकाक स्थित शाही बुद्ध मंदिर है। जिसमें नीलम की मूर्ति है। यह मंदिर थाईलैंड के सुप्रसिद्ध मंदिरों में से एक है तथा दूर-दराज से श्रद्धालु यहां दर्शनार्थ आते हैं। इस मंदिर की दीवारों पर संपूर्ण रामकथा चित्रित है। यही नहीं, थाईलैंड की अपनी स्थानीय रामायण भी है। जिसे ‘रामकियेन’ के नाम से जाना जाता है। इस रामायण के रचियता नरेश राम प्रथम थे। उन्हीं के वंशज आज भी थाईलैंड में शासक हैं। थाईलैंड के विश्व प्रसिद्ध नेशनल म्यूजियम में भी श्रीराम के दर्शन सुगमतापूर्वक किए जा सकते हैं। वहां खड़े धनुर्धारी राम की आकर्षक प्रतिमा आगंतुकों को मंत्रमुग्ध करती है। वहां प्रस्तुत होने वाले शास्त्रीय नृत्यों में भी रामकथा के अनेक प्रसंग प्रदर्शित किए जाते हैं।

थाईलैंड के राजभवन परिसर स्थित वाटफ्रकायों (सरकत बुद्ध मंदिर) की भित्तियों पर संपूर्ण थाई रामायण 'रामकियेन' को चित्रित किया गया है। ऐसा अनुमान किया जाता है कि इन चित्रों का निर्माण 'रामकियेन' की रचना के बाद 1798 ई. में हुआ था। थाई सम्राट चूला लौंग तथा उनके साहित्यमंडल के मित्रों ने मिलकर इन भित्तिचित्रों में रुपादित रामकथा को काव्यबद्ध किया था। उन पद्यों को शिलापट पर उत्कीर्ण करवाकर उन्हें यथास्थान भित्तिचित्रों के सामने स्तंभों में जड़वा दिया गया।

थाइलैंड के निकटवर्ती देश कम्बोडिया में हिन्दू धर्म और रामकथा का विशेष प्रभाव है। यहां रामकथा के ग्रन्थ का नाम है ‘रामकेर’, (रामकीर्ति नामक गद्यग्रन्थ)जिसका पाठ भी किया जाता है। विश्व में भगवान विष्णु का सर्वाधिक विशाल मंदिर ‘अंगकोरवाट’ कंबोडिया में ही है। यह भारत और कंबोडिया के सांस्कृतिक सौहार्द का प्रतीक है । अंगकोर वाट मंदिर में भगवान बुद्ध, शिव और श्रीराम की मूर्तियां भी प्रतिष्ठित हैं तथा रामायण के कई प्रसंगों को सुंदर ढंग से दीवारों पर उकेरा गया है । इन प्रसंगों में सीता की अग्नि परीक्षा, अशोकवाटिका में हनुमान का आगमन, लंका में श्रीराम-रावण युद्ध, बाली-सुग्रीव युद्ध तथा रावण के दरबार में अंगद द्वारा पैर जमाने के दृश्यों की सजीवता देखते ही बनती है। वहां आन्कोर के विराट वास्तुकलाप में बारहवीं शती के सम्राट सूर्यवर्मन द्वतीय के कार्यकाल के रामायण और महाभारत के दृश्य अंकित हैं। नृत्य अभिनय के कथानक प्राय रामकथा से ही लिए जाते हैं ।

रामायण का प्रसार इंडोनेशिया में भी खूब है। नवी शताब्दी में प्राम्बानन के शैव मंदिर में रामायण पर आधारित चित्र उत्कीर्ण हैं। इंडोनेशिया में काकविन रामायण ही आदिकाव्य है। कवि योगेश्वर ने 11 वि शताब्दी में रामायण की रचना की। संस्कृत के अनेक छंदों रामकथा का सुन्दर वर्णन इसमें देखने को मिलता है।

इंडोनेशिया में बाली द्वीप हिंदू संस्कृति का उत्तम उदाहरण है। ऐसा कहा जाता है कि बाली के हर गांव में तीन मंदिर होते हैं, जो क्रमश: ब्रह्मा, विष्णु और महेश को समर्पित हैं, देखने में ये सभी एक तरह के ही होते हैं। पूरे बाली में हनुमान, राम तथा भीम की मूर्तियां देखने को मिलती हैं। इन प्रतिमाओं के निचले हिस्से पर सफेद-काले चेकदार कपड़े पहनाए जाते हैं, जो अच्छाई व बुराई के प्रतीक हैं।

जावा में राम को पुरुषोत्तम के रूप में सम्मानित किया जाता है। वहां अनेक मन्दिरों में वाल्मीकि-रामायण के श्लोक उद्धृत हैं। वहां 'सरयू' नाम से एक नदी भी है। लाओस में रामकथा पर दो ग्रन्थ उपलब्ध हैं। प्रथम 'फालाक फालाम' तथा दूसरा 'फोमचक्र'। लाओस के कई बौद्ध विहारों में भी रामकथा के चित्र उरेहे गये हैं। लाओस का उपमु बौद्ध विहार राम कथा-चित्रों के लिए विख्यात है। विहार के लगभग बीस मीटर लंबी और सवा पाँच मीटर ऊँची दीवार पर वहाँ की रामायण 'फ्रलक-फ्रलाम' अर्थात् 'प्रिय लक्ष्मण प्रियराम' की कथा क्षेत्रीय पृष्ठभूमि में रुपायित है। 'फ्रलक-फ्रलाम' राम जातक के नाम से भी विख्यात है। उपमुंग विहार की चित्रावली में राम कथा का आरंभ लाओ रामायण के अनुसार रावण के जन्म से हुआ है और लंका युद्ध के बाद राम की अयोध्या वापसी तक की कथा का संक्षेप में निर्वाह भी हुआ है, किंतु इसमें कुछ प्रसंग अन्यत्र से भी संकलित हैं। यह चित्रावली लाओस लोक कला का उत्कृष्ट नमूना है। इसकी पृष्ठभूमि में चित्रित प्रकृति और परिवेश मनमोहक हैं।

वियतनाम (प्राचीन नाम चम्पा) में प्राचीन काल में हिन्दू राज्य स्थापित था। उस समय वहां रामकथा का बहुत अधिक प्रभाव था, जिसके प्रमाण हमें आज भी यत्र-तत्र देखने को मिलते हैं।

बर्मा में 1800 ई। के लगभग 'रामायागन' के नाम से रामकथा लिखी गयी। इस ग्रन्थ ने वहां पर्याप्त लोकप्रियता प्राप्त की है। बर्मा में राम पर आधारित नाम मिलते हैं। वहां एक गांव का नाम रामवती है। वहां कई स्थानों पर राम, लक्ष्मण, सीता और हनुमान के चित्र भी अंकित मिलते हैं।

राम कथा का प्रचार-प्रसार चीन और जापान में भी बहुत हुआ है। मैक्सिको और मध्य अमरीका में भी रामकथा की चर्चा होती है। पेरू में तो राजा अपने को सूर्यवंशीय राम के वंशज ही मानते थे।

अंग्रेजी भाषा में वाल्मीकि रामायण का प्रथम अनुवाद फ्रेडरिक सालमन ने 1883 में किया। 'रामचरित मानस' का अंग्रेजी अनुवाद सर्वप्रथम एफ।एस। ग्राउज ने सन् 1871 में किया। फैंच भाषा के विद्वान 'गार्सा द तासी' ने सुन्दर कांड का अनुवाद किया और डेनीविलि ने फ्रेंच भाषा

में स्वतंत्र रूप से रामकथा लिखी। इटली के विद्वान डॉ। लुहजीपियो टे सीटेरी ने रामकथा पर शोध करके फ्लोरेंस विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है।

हालैंड, जर्मनी और पुर्तगाल में भी रामकथा के अनुवाद हुए हैं। रूस के प्रसिद्ध हिन्दी समर्थक अलैक्सेई बारान्निकोव ने रामचरित मानस का रूसी भाषा में अनुवाद किया और सम्पूर्ण रूस तथा निकटवर्ती अन्य देशों में रामकथा का प्रचार किया। सोवियत लेखिका श्रीमती नतलिया गुलेवा ने रामकथा पर बच्चों के लिए रंगमंचीय नाटक तैयार किये हैं।

रूस में तीसरी से नौंवी शताब्दी के बीच तिब्बती और खेतानी भाषा में लिखी संक्षिप्त रामकथाएं प्राप्त होती हैं। अमरीकी विद्वान मीलो क्लेवलैंड ने बाल साहित्य के रूप में 'एडवेंचर आफ राम' शीर्षक से रामकथा की रचना की है।

चीनी साहित्य में राम कथा पर आधारित कोई मौलिक रचना नहीं है। सन 472 में ची-चिया-य ने त्सा-पाओ-त्सांग-चिग नामक चीनी रामायण की रचना की। इस ग्रन्थ के उपसंहार में रामराज्य का गुणगान है। बौद्ध धर्म के ग्रन्थ त्रिपिटक के चीनी संस्करण में रामायण से सम्बंधित दो रचनाएं देखने को मिलती हैं– अनामकं जातकम और दशरथ कथानम। फथर कामिल बुल्के के अनुसार तीसरी शताब्दी में अनामकं जातकम का कांग-सांग-हुई ने चीनी भाषा में अनुवाद किया था जिसका मूल भारतीय पाठ अप्राप्य है। चीनी अनुवाद लियेऊ-तुत्सी-किंग नामक पुस्तक में सुरक्षित है।

फिजी में पहुंचे अप्रवासी भारतीयों के घरों में आरती और हनुमानचालीसा के पाठ आम तौर पर सुने जा सकते हैं। कैनेडा के घनी आबादी वाले व्यावसायिक शहर टोरंटो में भगवान राम, शिव, गणेश एवं मां काली के कई मंदिर हैं। कैनेडा के ब्रैंप्टन, मिसिसागा, मारकहम, नॉर्थ यॉर्क, ओकविले, रिचमंडहिल, स्केरबरो आदि कई शहरों में कई हिंदू मंदिर हैं।

श्रीलंका का तो भारत और भारतीय संस्कृति से अटूट सम्बन्ध है। रामकथा और लंका एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। लंका के रावण को ही भारतीय संस्कृति में बुराइयों के प्रतीक के रूप में माना गया है। श्रीलंका के संस्कृत एवं पाली साहित्य का प्राचीन काल से ही भारत से घनिष्ट संबंध था। भारतीय महाकाव्यों की परंपरा पर आधारित 'जानकी हरण' के रचनाकार कुमार दास के संबंध में कहा जाता है कि वे महाकवि कालिदास के अनन्य मित्र थे। कुमारदास (512-21 ई.) लंका के राजा थे। इतिहासकारों ने उनकी पहचान कुमार धातुसेन के रुप में की है। कालिदास के 'रघुवंश' की परंपरा में विरचित 'जानकीहरण' संस्कृत का एक उत्कृष्ट महाकाव्य है। इसकी महनीयता इस तथ्य से रेखांकित होती है कि इसके अनेक श्लोक काव्यशास्त्र के परवर्ती ग्रंथों में उद्धृत किये गये हैं। इसका कथ्य वाल्मीकि रामायण पर आधारित है।

सिंहली साहित्य में रामकथा पर आधारित कोई स्वतंत्र रचना नहीं है। मरकत बुद्ध मंदिर में रामकथा के 178 चित्र हैं जिनमें सीता के जन्म से रामराज्याभिषेक तक की कथा के साथ जानकी के निर्वासन से उनकी अयोध्या वापसी तक के संपूर्ण वृत्तांत का चित्रण हुआ है।

साइबेरिया के बुर्यात प्रदेश में जहां हमेशा बर्फ ही रहती है, मोंगोलो के आभ्यंतर और बाह्य भागों में, और रूस की महानदी बोलगा के तट पर रहने वाले काल्पुकों में भी राम का चरित सुनाया जाता रहा है। सम्राट कुबलाई खान के गुरु साचा पंडित आनंदध्वज (1182-1251) ने एर्देनियाँ सांग सुवाशिदी लिखी। इसका पूर्ण संस्कृत नाम सुभाषितरत्ननिधि है। इसमें रामायण का सारांश मिलता है।

मॉरीशस पर लंबे समय तक फ्रांस का आधिपत्य रहा है, यहां अंग्रेजी और फ्रेंच के साथ क्रियोल भाषा बोली जाती है । क्रियोल भाषा हिंदी और फ्रेंच को मिलाकर बनाई गई भाषा है जो यहाँ के निवासियों की बहुत पसंद की भाषा है । हिंदी और भोजपुरी बोलने वालों की संख्या भी बहुत है। बोलने में कठिनाई भले हो पर यहाँ के लोग हिंदी को खूब समझते हैं ।

मॉरीशस में भारतीयता को पहचान पाना कठिन नहीं है। यहाँ की संस्कृति भारतीय रंग में ही रची बसी है। इतिहास में रुचि रखने वाले लोग जानते हैं कि भारत में जब अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच संघर्ष चल रहा था, तब अपनी स्थिति बेहतर बनाने के लिए अंग्रेजों की नजर मॉरीशस पर गई। उन्होंने मॉरीशस पर आक्रमण किया और इसे फ्रांसीसियों से छीन लिया। फ्रांसीसियों ने हारकर सत्ता तो अंग्रेजों के हवाले कर दी, पर अपनी सांस्कृतिक शक्ति को बचाए रखा। उन्होंने यहां के भारतीयों के साथ हिंदी व फ्रेंच को मिलाकर नई बोली का आविर्भाव किया, उसे ही अब क्रियोल के नाम से जानते हैं। भारतीय संस्कृति को पुष्पित-पल्लवित होने देने में फ्रांसीसियों ने परोक्ष योगदान किया। लगभग दो सौ वर्ष पूर्व जब भारतीय यहां पहुंचे, तो उन्होंने इसे 'मारीच देश' कहा था। रामायण की अनुगूंज आज भी यहां भारतीयों की आस्था का केंद्र है। श्री रामचरित मानस की चौपाइयां यहां कष्ट में फंसे लोगों के लिए संजीवनी बूटी का काम करती हैं। मॉरीशस में आज भी भारतवंशियों के आंगन में हनुमान जी के चबूतरे और लाल झंडियां सांस्कृतिक मूल्यों के विजय की लघुपताकाएं बनकर लहरा रही हैं।

मारीशस में रामायण सेंटर की स्थापना 2001 में हुई । विश्व में मारीशस एकमात्र देश है जिसकी संसद में रामायण पर चर्चा हुई और एक विधेयक पारित कर देश में रामायण सेंटर आरम्भ किया गया । 15 अगस्त 2002 के दिन तुलसी जयंती के पावन अवसर पर प्रधानमंत्री सर अनिरुद्ध जगन्नाथ ने रामायण सेंटर का शिलान्यास किया। रामायण सेंटर की तर्ज पर भोपाल में भी रामायण केंद्र स्थापित कर इस केंद्र में विश्व की समस्त रामायणों तथा उससे सम्बंधित साहित्य को संग्रह करने का हमारा लक्ष्य है।

हरि अनंत हरिकथा अनंता

शैल अग्रवाल

पिछले दो दशक से हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में निरंतर लेखन। दो कहानी संग्रह, एक निबंध संग्रह और दो कविता संग्रह सहित पांच पुस्तकें प्रकाशित। निबंध, कहानी, संस्मरण, कविताएं, लघुकथा, हाइकू और बाल साहित्य आदि सैंकड़ों रचनाएं देश विदेश की प्रमुख पत्रिका व संकलनों में। रेडियो, दूरदर्शन व अंतर्राष्ट्रीय मंचों से रचना पाठ। रचनाएँ मराठी, नेपाली, मलयालम व अंग्रेजी में अनुवादित। मार्च 2007 से ब्रिटेन से निकलने वाली लोकप्रिय व विचारोत्तेजक 'लेखनी' नामक ई. पत्रिका का संपादन और प्रकाशन।

तुलसीदास के 'हरि अनंत हरिकथा अनंता' की तरह ही विविध आयामी और नवों रसों से भरपूर रामकथा भारत ही नहीं, विश्व के कई देशों में प्रचलित है। असल में देखा जाए तो आदिकवि वाल्मीकि कृत रामायण में जिन-जिन स्थानों का उल्लेख है, भौगोलिक उन सभी क्षेत्रों में साहित्य और संस्कृति के किसी न किसी रूप में रामकथा का समावेश आज भी उपस्थित है।

राम के प्रति जिज्ञासा और समर्पण जहाँ विश्वव्यापी है, रामकथा कब और किसने शुरु की निश्चय ही एक जटिल शोध का ही विषय है। रामकथा का प्राचीनतम उल्लेख बृह्मांड पुराण में है। जिसके अनुसार सर्वप्रथम रामकथा भगवान शंकर ने देवी पार्वती जी को सुनाई थी, जिसे पास बैठे कौवे ने भी सुना। उसी कौवे का पुनर्जन्म कागभुषंडी जी के रूप में हुआ था। और यही नहीं, उन्हें पूर्व जन्म में सुनी वह रामकथा पूरी तरह से याद भी रही। तब उन्होंने वही राम कथा अपने शिष्यों को सुनाई। इस तरह से इस कथा का आगे प्रचार-प्रसार हुआ। भगवान शंकर के मुख से निकली यह रामकथा 'अध्यात्म रामायण' के नाम से भी जानी जाती है, इसमें श्रीराम को ईश्वर का अवतार माना गया हैं, जो शरणागत के रक्षक और तारक हैं। वक्त के साथ-साथ कथा की यह लोककल्याणकारी धारणा और भी मजबूत होती चली गयी। तुलसी के मर्यादा पुरुषोत्तम राम के अवतरण ने तो मानो इस विश्वास पर सील ही लगा दी। रक्षा कवच की तरह रामायण और हनुमान चालीसा कितनों की संरक्षक रही है, इसका प्रमाण आज भी अधिकांश भारतीयों के घरों में रामायण की उपस्थिति से पहचाना जा सकता है। आश्चर्य नहीं कि जहाँ-जहाँ भारतीय पहुंचे, रामायण भी पहुंची।

अन्नामी, बाली, बांग्ला, कम्बोडियाई, चीनी, गुजराती, जावाई, कन्नड़, कश्मीरी, खोटानी, लाओसी, मलेशियाई, मराठी, ओड़िया, प्राकृत, संस्कृत, संथाली, सिंहली, तमिल, तेलुगु, थाई,

तिब्बती, कावी आदि कई भाषाओं में अबतक माना जाता है कि तीन सौ से भी अधिक रामायण लिखी जा चुकी है। पर सभी रामायण की कथा में कुछ न कुछ फेरबदल है क्योंकि इनमें से कईयों में श्रीराम के बारे में ऐसे प्रसंग मिलते हैं जो मूल वाल्मीकि रामायण में नहीं हैं। बुद्ध ने पूर्व जन्मों का वृत्तांत कहते हुए शिष्यों को रामकथा सुनाई, जहाँ राम बोधिसत्व यानी तत्वज्ञानी हैं और राम व बुद्ध दोनों ही विष्णु के अवतार हैं। जैन रामायण में दैवत्व से अधिक कर्म प्रधान राम का चरित उकेरा गया है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामकथा को संस्कृत नहीं, जनजन की भाषा अवधी में लिखा। भारत के खोए आत्मविश्वास के लिए एक सुदृढ़ संदेश के साथ और भारत ही नहीं, आज लवकुश के मुंह से गायी यह गाथा विश्व के कई देशों में जीवन का प्रेरक गीत बन गई।

वाल्मीकि रामायण और अन्य रामायण में एक बड़ा अंतर यह है कि वाल्मीकि रामायण को तथ्यों और घटनाओं के आधार पर लिखा गया था, जबकि अन्य रामायण को जनश्रुतियों के आधार पर। इसीलिए विद्वान आजभी वाल्मीकि रामायण को ही मूल रामायण कहते हैं। पर एक बात तो निश्चित है कि जीवन के हर प्रश्न और प्रसंग को समेटे प्रेरक यह रामकथा आजभी भारत ही नहीं, विश्व के कई देशों में न सिर्फ प्रचलित है, बल्कि नित नए रूप लेती अमरबेल-सी फल-फूल रही है। हाल ही में मौरिशस जाने का मौका मिला था। वहाँ पर तो रामायण मानो लोगों के जीवन में धड़कती है। घर-घर में ध्वजा और कलश सहित मंदिर, राम हनुमान की पूजा,और रामभजन संध्या व अखंड रामायण जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। इसी तरह फिजी, नेपाल, वर्मा कई ऐसे देश हैं जहाँ रामकथा के मंचन अभिनय आदि आज भी नियमित रूप से होते हैं। हाट-बाजारों में मूर्तियाँ बिकती हैं। हस्तकला और चित्रों में रामकथा अंकित होती रहती है। देखा जाए तो आदिकवि वाल्मीकि कृत रामायण में जिन-जिन स्थानों का उल्लेख है, भौगोलिक दृष्टि से उन सभी क्षेत्रों के साहित्य और संस्कृति में किसी न किसी रूप में रामकथा आज भी जुड़ी हुई है। यह बात दूसरी है कि कई देशों में रामकथा पर आधारित ये विदेशी कृतियाँ विचित्र तथ्यों से परिपूर्ण हैं। कहीं रावण साधु बनकर सीता को हरता है तो कहीं सेवक। स्थानीय संस्कृति और मान्यताओं से पूर्णतः अनुरंजित इन राम कथाओं को कहीं तो बोद्ध जातक कथाओं का जामा पहनाया गया है, तो कहीं इनका इस्लामीकरण भी हुआ है। कुछ संक्षिप्त हैं तो कुछ अत्याधिक विस्तृत भी।

राम कथा की विदेश-यात्रा के संदर्भ में वाल्मीकि रामायण का उल्लेख इस अर्थ में भी प्रासंगिक होगा कि यह कथा उन सभी स्थलों पर आज भी किसी न किसी रूप में जीवित है और स्थानीय व दर्शक जनसमुदाय को लुभाती है। बर्मा, थाईलैंड, कंपूचिया, लाओस, वियतनाम, मलयेशिया, इंडोनेशिया, फिलिपींस, तिब्बत, चीन, जापान, मंगोलिया, तुर्किस्तान, श्रीलंका और नेपाल की प्राचीन भाषाओं में राम कथा पर आधारित बहुत सारी साहित्यिक कृतियाँ मौजूद है। अनेक देशों में यह कथा शिलाचित्रों की विशाल शृंखलाओं में अंकित है और इसके शिलालेखी प्रमाण भी मिलते है। कई देशों में प्राचीन काल से ही विवधरूपों में रामलीला का प्रचलन है और कुछ देशों में रामायण के घटना स्थलों का स्थानीकरण भी हुआ है।

रामकथा साहित्य के विदेश गमन की तिथि और दिशा निर्धारित करना कठिन काम है, फिर भी दक्षिण-पूर्व एशिया के शिलालेखों से तिथि की समस्या का निराकरण कुछ हद तक तो हो ही जाता है। अनुमान है कि ईसा की प्रारंभिक शताब्दियों में ही रामायण वहाँ पहुँच गयी थी। अन्य साक्ष्यों से यह भी प्रतीत होता है कि रामकथा की प्रारंभिक धारा सर्वप्रथम दक्षिण-पूर्व एशिया की ओर ही बही थी।

पंद्रहवी शताब्दी में इंडोनेशिया के इस्लामीकरण के बावजूद वहाँ जवानी भाषा में सेरतराम, सेरत कांड, राम केलिंग आदि अनेक रामकथा काव्यों की रचना हुई, जिनके आधार पर अनेक विद्वानों द्वारा वहाँ के राम साहित्य का विस्तृत अध्ययन भी किया गया है।

दक्षिण-पूर्व एशिया की सबसे प्राचीन और सर्वाधिक महत्वपूर्ण कृति प्राचीन जावानी भाषा में रचित रामायण काकाबीन है जिसकी तिथि नौवीं शताब्दी का पूर्वार्ध है। रचनाकार महाकवि योगीश्वर हैं।

इंडोनेशिया के बाद हिंद-चीन भारतीय संस्कृति का गढ़ माना जाता रहा है। इस क्षेत्र में पहली से पंद्रहवीं शताब्दी तक भारतीय संस्कृति का प्रभाव था। पर चौंकाने वाली बात यह है कि कंपूचिया के अनेक शिलालेखों में रामकथा की चर्चा तो हुई है, किंतु उस पर आधारित मात्र एक कृति रामकेर्ति ही अब उपलब्ध है, और वह भी खंडित रुप में। इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह हे कि चंपा (वर्तमान वियतनाम) के एक प्राचीन शिलालेख में वाल्मीकि के मंदिर का तो उल्लेख है, किंतु वहाँ रामकथा के नाम पर मात्र लोक कथाएँ ही अब उपलब्ध हैं।

लाओस के निवासी स्वयं को भारतवंशी मानते हैं। उनका कहना हे कि कलिंग युद्ध के बाद उनके पूर्वज इस क्षेत्र में आकर बस गये थे। लाओस की संस्कृति पर भारतीयता की गहरी छाप है। यहाँ रामकथा पर आधारित चार रचनाएँ उपलब्ध है- फ्रलक फ्रलाम (रामजातक), ख्वाय थोरफी, ब्रह्मचक्र और लंका नोई। लाओस की रामकथा का अध्ययन कई भारत के विद्वानों ने भी किया है।

थाईलैंड का रामकथा साहित्य बहुत समृद्ध है। रामकथा पर आधारित कई रचनाएँ वहाँ उपलब्ध हैं- (१) तासकिन रामायण, (२) सम्राट राम प्रथम की रामायण, (३) सम्राट राम द्वितीय की रामायण, (४) सम्राट राम चतुर्थ की रामायण (पद्यात्मक), (५) सम्राट रामचतुर्थ की रामायण (संवादात्मक), (६) सम्राट राम षष्ठ की रामायण (गीति-संवादात्मक)।

आधुनिक खोजों के अनुसार बर्मा में रामकथा साहित्य की १६ रचनाएं हैं, जिनमें रामवत्थु प्राचीनतम कृति है।

मलयेशिया में रामकथा से संबद्ध चार रचनाएँ उपलब्ध है- (१) हिकायत सेरी राम, (२) सेरी राम, (३) पातानी रामकथा और (४) हिकायत महाराज रावण। फिलिपींस की रचना महालादिया लावन का स्वरुप रामकथा से बहुत मिलता-जुलता है, किंतु इसका कथ्य बिल्कुल विकृत है।

चीन में रामकथा बौद्ध जातकों के माध्यम से पहुँची थीं। वहाँ अनामक जातक और दशरथ कथानम का क्रमश: तीसरी और पाँचवीं शताब्दी में अनुवाद किया गया था। दोनों रचनाओं के चीनी अनुवाद तो उपलब्ध हैं, किंतु जिन रचनाओं से चीनी अनुवाद हुआ, वे अनुपलब्ध हैं। तिब्बती रामायण की छह पांडुलिपियाँ तुन-हुआन नामक स्थल से प्राप्त हुई हैं। इनके अतिरिक्त वहाँ राम कथा पर आधारित दमर-स्टोन तथा संघ श्री द्वारा रचित दो अन्य रचनाएँ भी मिलती हैं।

एशिया के पश्चिमोत्तर सीमा पर स्थित तुर्किस्तान के पूर्वी भाग को खोतान कहा जाता है। इस क्षेत्र की भाषा खोतानी है। खोतानी रामायण की प्रति पेरिस पांडुलिपि संग्रहालय से प्राप्त हुई है। इस पर तिब्बत्ती रामायण का प्रभाव साफ दिखता है। चीन के उत्तर-पश्चिम में स्थित मंगोलिया में राम कथा पर आधारित जीवक जातक नामक रचना है। इसके अतिरिक्त वहाँ तीन अन्य रचनाएँ भी हैं जिनमें रामचरित का विवरण मिलता है। जापान के एक लोकप्रिय कथा संग्रह होबुत्सुशु में भी संक्षिप्त रामकथा संकलित है। इसके अतिरिक्त वहाँ अंधमुनिपुत्रवध की कथा भी है। श्री लंका में कुमार दास के द्वारा संस्कृत में जानकीहरण की रचना हुई थी। वहाँ सिंहली भाषा में भी एक रचना है, मलयराजकथाव। नेपाल में रामकथा पर आधारित अनेकानेक रचनाएँ हैं जिनमें भानुभक्त कृत रामायण सर्वाधिक लोकप्रिय है।

रामायण शब्द का यदि हम संधिविच्छेद करें तो राम और अयन दो शब्द निकलते हैं। अयन का अर्थ है यात्रा; अर्थात् 'रामायण' का विश्लेषित रुप 'राम का अयन' है जिसका अर्थ है 'राम का यात्रा पथ',. यह मूलत: राम की दो विजय यात्राओं पर आधारित है जिसमें प्रथम यात्रा यदि प्रेम-संयोग तथा आनंद-उल्लास से परिपूर्ण है, तो दूसरी क्लेश, क्लांति, वियोग, व्याकुलता, विवशता और वेदना से आवृत्त। विश्व के अधिकतर विद्वान दूसरी यात्रा को ही रामकथा का मूल आधार मानते हैं। एक श्लोकी रामायण में राम वन गमन से रावण वध तक की कथा वर्णित है।

अदौ राम तपोवनादि गमनं हत्वा मृगं कांचनम्।
वैदेही हरणं जटायु मरणं सुग्रीव संभाषणम्।
वालि निग्रहणं समुद्र तरणं लंका पुरी दाहनम्।
पाश्चाद् रावण कुंभकर्ण हननं एतद्धि रामायणम्।

जीवन के पेचीदा यथार्थ को रूपायित करने वाली राम कथा में सीता का अपहरण और उनकी खोज अत्यधिक रोमांचक व मार्मिक है। रामकथा की विदेश-यात्रा के संदर्भ में सीता की खोज-यात्रा को विशेष महत्व भी दिया गया है। वाल्मीकि रामायण के किष्किंधा कांड के चालीस से तेतालीस अध्यायों के बीच इसका विस्तृत वर्णन हमें मिलता है जो 'दिग्वर्णन' के नाम से विख्यात है। वानर राज बालि ने विभिन्न दिशाओं में जाने वाले दूतों को अलग-अलग दिशा निर्देश दिए थे, इन निर्देशों से एशिया के तत्कालीन भूगोल की जानकारी मिलती है।

कपिराज सुग्रीव ने पूर्व दिशा में जाने वाले दूतों के सात राज्यों से सुशोभित यवद्वीप (जावा), सुवर्ण द्वीप (सुमात्रा) तथा रुप्यक द्वीप में यत्नपूर्वक जनकसुता को तलाशने का आदेश दिया।

इस क्रम में यह भी कहा गया कि यव द्वीप के आगे शिशिर नामक पर्वत है जिसका शिखर स्वर्ग को स्पर्श करता है और जिसके ऊपर देवता तथा दानवों का निवास है।

यनिवन्तो यव द्वीपं सप्तराज्योपशोभितम्।
सुवर्ण रूप्यक द्वीपं सुवर्णाकर मंडितम्।
जवद्वीप अतिक्रम्य शिशिरो नाम पर्वत:।
दिवं स्पृशति शृंगं देवदानव सेवित:।१

दक्षिण-पूर्व एशिया के इतिहास का आरंभ इसी दस्तावेती सबूत से होता है। इंडोनेशिया के बोर्नियो द्वीप में तीसरी शताब्दी को उत्तरार्ध से ही भारतीय संस्कृति की उपस्थिति के ठोस सबूत मिलते हैं। बोर्नियों द्वीप के एक संस्कृत शिलालेख में मूलवर्मा की प्रशस्ति उत्कीर्ण है जो इस प्रकार है-

श्रीमत: श्री नरेन्द्रस्य कुंडगस्य महात्मन:।
पुत्रोश्ववर्मा विख्यात: वंशकर्ता यथांशुमान्।।
तस्य पुत्रा महात्मान: तपोबलदमान्वित:।
तेषांत्रयानाम्प्रवर: तपोबलदमान्वित:।।
श्री मूलवर्मा राजन्द्रोयष्ट्वा वहुसुवर्णकम्।
तस्य यज्ञस्य यूपोयं द्विजेन्द्रस्सम्प्रकल्पित:।।२

इसी शिला लेख में मूल वर्मा के पिता अश्ववर्मा तथा पितामह कुंडग का उल्लेख है। बोर्नियों में भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा के स्थापित होने में भी काफी समय लगा होगा। तात्पर्य यह कि भारतवासी मूल वर्मा के राजत्वकाल से बहुत पहले उस क्षेत्र में पहुँच चुके थे।

जावा द्वीप और उसके निकटवर्ती क्षेत्र के वर्णन के बाद द्रुतगामी शोणनद तथा काले मेघ के समान दिलाई दिखाई देने वाले समुद्र का उल्लेख हुआ है जिसमें भारी गर्जना होती रहती है। इसी समुद्र के तट पर गरुड़ की निवास भूमि शल्मलीक द्वीप है जहाँ भयंकर मानदेह नामक राक्षस रहते हैं जो सुरा समुद्र के मध्यवर्ती शैल शिखरों पर लटके रहते है। सुरा समुद्र के आगे घृत और दधि के समुद्र हैं। फिर, श्वेत आभावाले क्षीर समुद्र के दर्शन होते हैं। उस समुद्र के मध्य ऋषभ नामक श्वेत पर्वत है जिसके ऊपर सुदर्शन नामक सरोवर है। क्षीर समुद्र के बाद स्वादिष्ट जलवाला एक भयावह समुद्र है जिसके बीच एक विशाल घोड़े का मुख है जिससे आग निकलती रहती है।

'महाभारत' में एक कथा है कि भृगुवंशी और्व ऋषि के क्रोध से जो अग्नि ज्वाला उत्पन्न हुई, उससे संसार के विनाश की संभावना थी। ऐसी स्थिति में उन्होंने उस अग्नि को समुद्र में डाल दिया। सागर में जहाँ वह अग्नि विसर्जित हुई, घोड़े की मुखाकृति (वड़वामुख) बन गयी और उससे लपटें निकलने लगीं। इसी कारण उसका नाम वड़वानल पड़ा। आधुनिक समीक्षकों की मान्यता है कि इससे प्रशांत महासागर क्षेत्र के किसी ज्वालामुखी का संकेत मिलता है। वह स्थल

मलस्क्का से फिलिप्पींस जाने वाले जलमार्ग के बीच का हो सकता है। यथार्थ यह है कि इंडोनेशिया से फिलिप्पींस द्वीप समूहों के बीच अक्सर ज्वालामुखी के विस्फोट होते रहे हैं जिसके अनेक ऐतिहासिक प्रमाण भी मिलते हैं। दधि, धृत और सुरा समुद्र का संबंध श्वेत आभा वाले क्षीर सागर की तरह जल के रंगों के संकेतात्मक प्रतीक मात्र भी हो सकते हैं।

बड़वामुख से तेरह योजना उत्तर जातरुप नामक सोने का पहाड़ है जहाँ पृथ्वी को धारण करने वाले शेष नाग बैठे हैं। उस पर्वत के ऊपर ताड़ के चिन्हों वाला सुवर्ण ध्वज फहराता है। यही ताड़ ध्वज पूर्व दिशा की सीमा है। उसके बाद सुवर्णमय उदय पर्वत है जिसके शिखर का नाम सौमनस है। सूर्य उत्तर से घूमकर जम्बू द्वीप की परिक्रमा करते हुए जब सौमनस पर स्थित होते हैं, तब इस क्षेत्र में स्पष्ट रूप में उनके दर्शन होते हैं और सौमनस सूर्य के समान प्रकाशमान हो उठता हैं। उस पर्वत के आगे का क्षेत्र अज्ञात है।

जातरुप का अर्थ सोना है। अनुमान किया जाता है कि जातरुप पर्वत का संबंध प्रशांत महासागर के पार मैक्सिको के स्वर्ण-उत्पादक पर्वतों से ही रहा होगा। मक्षिका का अर्थ सोना होता है। मैक्सिको शब्द भी मक्षिका से ही विकसित माना गया है। यह भी संभव है कि मैक्सिको की उत्पत्ति सोने के खान में काम करने वाली आदिम जाति मैक्सिका से हुई है। मैक्सिको में एशियाई संस्कृति के प्राचीन अवशेष मिलने से इस अवधारणा की और भी पुष्टि हुई है।

बालखिल्य ऋषियों का उल्लेख विष्णु-पुराण और रघुवंश, दोनों में हुआ है, जहाँ उनकी संख्या साठ हज़ार और आकृति अँगूठे से भी छोटी बतलायी गयी है। कहा गया है कि वे सभी सूर्य के रथ के घोड़े हैं। इससे अनुमान किया जाता है कि यह सूर्य की असंख्य किरणों का ही मानवीकरण है। उदय पर्वत का सौमनस नामक सुवर्णमय शिखर और प्रकाशपुंज के रूप में बालखिल्य ऋषियों के वर्णन से प्रतीत होता है कि यह प्रशांत महासागर में सूर्योदय के भव्य दृश्य का ही भावभीना एवं अतिरंजित चित्रण है।

वाल्मीकि रामायण में पूर्व दिशा में जाने वाले दूतों के दिशा निर्देशन की तरह ही, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर दिशा में जाने वाले दूतों को भी मार्ग का निर्देश दिया गया। उत्तर में ध्रुव प्रदेश, दक्षिण में लंका के दक्षिण के हिंद महासागर क्षेत्र और पश्चिम में अटलांटिक तक की भू-आकृतियों का काव्यमय चित्रण है, जिससे समकालीन एशिया महादेश के भूगोल की भरपूर जानकारी मिलती है। इस संदर्भ में उत्तर-ध्रुव प्रदेश का एक मनोरंजक चित्र उल्लेखनीय है।

बैखानस सरोवर के आगे न तो सूर्य तथा ना ही चंद्रमा दिखाई पड़ते हैं और न कोई नक्षत्र या मेघमाला ही। उस प्रदेश के बाद शैलोदा नामक नदी है, जिसके तट पर वंशी की ध्वनि करने वाले कीचक नाम के बाँस मिलते हैं। इन्हीं बाँसों का बेड़ा बनाकर लोग शैलोदा को पारकर उत्तर-कुरु तक जाते है, जहाँ सिद्ध पुरुष निवास करते हैं। उत्तर-कुरु के बाद समुद्र है जिसके मध्य भाग में सोमगिरि का सुवर्णमय शिखर दिखाई पड़ता है। वह क्षेत्र सूर्य से रहित है, फिर भी वह सोमगिरि के प्रभा से सदा दैदीप्य रहता है। लगता है कि यह उत्तरीध्रुव प्रदेश का वर्णन है, जहाँ

छह महीनों तक सूर्य दिखाई नहीं पड़ता और छह महीनों तक क्षितिज के छोर पर उसके दर्शन भी होते हैं, तो तुरंत ही आँखों से ओझल हो जाता है। ऐसी स्थिति में सूर्य की प्रभा से उद्भासित सोमगिरि के हिमशिखर निश्चय ही स्वर्णमय ही दिखते होंगे और सूर्य से रहित होने पर भी उत्तर-ध्रुव पूरी तरह से अंधकारमय नहीं।

सतु देशो विसूर्योऽपि तस्य मासा प्रकाशते।
सूर्य लक्ष्याभिविज्ञेयस्तपतेव विवास्वता।

इस विषय में कई महत्वपूर्ण शोध भी हुए हैं जिनके द्वारा वाल्मीकी द्वारा वर्णित स्थानों को विश्व के आधुनिक मानचित्र पर पहचानने का प्रयत्न किया गया है। बोर्नियो द्वीप, जावा–सुमात्रा और प्रशान्त महासागर से लेकर उत्तरी ध्रुव जहां छह-छह महीने सूरज नहीं निकलता; इन सभी जगहों को इस महाकाव्य में पहचाना जा सकता है।

भारतवासी जहाँ कहीं भी गये वहाँ की सभ्यता और संस्कृति को तो प्रभावित किया ही, वहाँ के स्थानों के नाम आदि भी बदलकर उनका भारतीयकरण किया। इंडोनेशिया के सुमात्रा द्वीप का नामकरण सुमित्रा के ही नाम पर हुआ था। जावा के एक मुख्य नगर का नाम योग्याकार्टा है। 'योग्या' संस्कृत के अयोध्या का विकसित रुप है और जावानी भाषा में कार्टा का अर्थ नगर होता है। इस प्रकार योग्याकार्टा का अर्थ अयोध्या नगर हुआ। मध्य जावा की एक नदी का नाम सेरयू है और उसी क्षेत्र के निकट स्थित एक गुफा का नाम किस्केंदा अर्थात् किष्किंधा है। जावा के पूर्वीछोर पर स्थित एक शहर का नाम सेतुविंदा है जो निश्चय ही सेतुबंध का जावानी रुप है। इंडोनेशिया में रामायणीय संस्कृति से संबद्ध इन स्थानों का नामकरण कब हुआ, यह तो कहना कठिन है, किंतु मुसलमान बहुल इस देश का प्रतीक चिन्ह गरुड़ निश्चय ही भारतीय संस्कृति से अपने सरोकार को जरूर उजागर करता है।

मलाया स्थित लंग्या सुक अर्थात् लंका के राजकुमार ने चीन के सम्राट को ५१५ई. में दूत के माध्यम से एक पत्र भेजा था जिसमें लिखा था कि उसके देश को एक मूल्यवान संस्कृति की जानकारी है, जिसके भव्य नगर के महल और प्राचीर गंधमादन पर्वत की तरह ऊँचे और विशाल हैं। मलाया के राजदरबार के पंडितों को संस्कृत का ज्ञान था, इसकी पुष्टि संस्कृत में उत्कीर्ण वहाँ के प्राचीन शिला लेखों से हो जाती है। गंधमादन उस पर्वत का नाम था जिसे मेघनाद के वाण से आहत हुए लक्ष्मण के उपचार हेतु, हनुमान औषधि लाने के लिए उखाड़कर लाये थे। मलाया स्थित लंका की भौगोलिक स्थिति के संबंध में क्रोम नामक डच विद्वान का मत है कि यह राज्य सुमत्रा द्वीप में था, किंतु ह्विवटले ने प्रमाणित किया है कि यह मलाया द्वीप में था।

बर्मा का पोपा पर्वत ओषधियों के लिए विख्यात है। वहाँ के निवासियों का विश्वास है कि लक्ष्मण के उपचार हेतु पोपा पर्वत के ही एक भाग को हनुमान उखाड़कर ले गये थे और उस पर्वत के मध्यवर्ती खाली स्थान को दिखाकर आज भी पर्यटकों को बताया जाता है कि पर्वत के इसी भाग को हनुमान उखाड़ कर लंका ले गये थे और वापसी यात्रा के दौरान उनका संतुलन

बिगड़ जाने से वे पहाड़ के साथ जमीन पर आ गिरे थे और यहां पर एक बहुत बड़ी झील बन गयी। इनवोंग नाम से विख्यात यह झील अभी भी बर्मा के योमेथिन जिले में है। बर्मा के इस लोकाख्यान से इतना तो स्पष्ट है ही , कि वहाँ के लोग प्राचीन काल से ही रामायण से परिचित थे और उन लोगों ने उससे अपने को जोड़े रखने का भी प्रयत्न रखा है।

थाईलैंड का प्राचीन नाम स्याम था और द्वारावती (द्वारिका) उसका एक प्राचीन नगर था। थाई सम्राट रामातिबोदी ने १३५० ई. में अपनी राजधानी का नाम अयुध्या (अयोध्या) रखा था, जिसपर ३३ राजाओं ने राज्य किया। ७ अप्रैल १७६७ ई. को बर्मा के आक्रमण से इसका पतन हुआ। अयुध्या का भग्नावशेष थाईलैंड की एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक धरोहर है। अयुध्या के पतन के बाद थाई नरेश दक्षिण के सेनापति चाओ-फ्रा-चक्री को नागरिकों द्वारा १७८५ई. में राजा घोषित कर दिया गया, जिसका अभिषेक भी राम प्रथम के नाम से ही हुआ। राम प्रथम ने बैंकॉक में अपनी राजधानी की स्थापना की। राम प्रथम के बाद चक्री वंश के सभी राजाओं द्वारा अभिषेक के समय राम की उपाधि धारण की जाती है। वर्तमान थाई सम्राट राम नवम हैं।

थाईलैंड में लौपबुरी (लवपुरी) नामक एक प्रांत है। इसके अंतर्गत वांग-प्र नामक स्थान के निकट फाली (वालि) नामक एक गुफा है। कहा जाता है कि वालि ने इसी गुफा में थोरफी नामक महिष का वध किया था। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि थाई रामायण रामकियेन में दुंदुभि दानव की कथा में थोड़ा परिवर्तन है। इसमें दुंदुभि राक्षस के स्थान पर थोरफी नामक एक महाशक्तिशाली महिष है जिसका वालि द्वारा वध किया जाता है। वालि नामक गुफा से प्रवाहित होने वाली जलधारा का नाम सुग्रीव है। थाईलैंड के ही नखोन-रचसीमा प्रांत के पाक-थांग-चाई के निकट थोरफी पर्वत है जहाँ से वालि ने थोरफी के मृत शरीर को उठाकर २००कि.मी. दूर लौपबुरी में फेंक दिया था। सुखो थाई के निकट संपत नदी के पास फ्राराम गुफा है। उसके पास ही एक सीता नामक गुफा भी है।

दक्षिणी थाईलैंड और मलयेशिया के रामलीला कलाकारों का विश्वास है कि रामायण के पात्र मूलत: दक्षिण-पूर्व एशिया के निवासी थे और रामायण की सारी घटनाएँ इसी क्षेत्र में घटी थी। ये मलाया के उत्तर-पश्चिम स्थित एक छोटे द्वीप को लंका मानते हैं। उनका विश्वास है कि दक्षिणी थाईलैंड के सिंग्गोरा नामक स्थान पर सीता का स्वयंवर रचाया गया था जहाँ राम ने एक ही बाण से सात ताल वृक्षों को बेधा था। सिंग्गोरा में आज भी सात ताल वृक्ष हैं। जिस प्रकार भारत और नेपाल के लोग जनकपुर के निकट स्थित एक प्राचीन शिलाखंड को राम द्वारा तोड़े गये धनुष का टुकड़ा मानते हैं । उसी प्रकार थाईलैंड और मलेशिया के लोगों को भी विश्वास है कि राम ने उन्हीं ताल वृक्षों को बेध कर सीता को प्राप्त किया था।

वियतनाम का प्राचीन नाम चंपा है। थाई वासियों की तरह वहाँ के लोग भी अपने देश को राम की लीलभूमि मानते है। उनकी इस मान्यता की पुष्टि सातवीं शताब्दी के एक शिलालेख से भी होती है जिसमें आदिकवि वाल्मीकि के मंदिर का उल्लेख है जिसका पुनर्निमाण प्रकाश धर्म नामक सम्राट ने करवाया था। प्रकाशधर्म (६५३-६७९ ई.) का यह शिलालेख अपने आप में

अनूठा है, क्योंकि आदिकवि की जन्मभूमि भारत में भी उनके किसी प्राचीन मंदिर का अवशेष अब उपलब्ध नहीं।

परमात्मा की खोज में भटकती आत्मा की अनंत यात्रा की तरह ही राम की यह कहानी भी कई-कई परिवर्तन और रहस्यमय रूपों से गुजरी है और प्रमाणिकता के अनगिनत वाद-विवादों के बावजूद आज भी अपना वर्चस्व बनाए हुए है। अतः इस संदर्भ में कम-से-कम यह तो पूर्ण विश्वास से कहा ही जा सकता है कि मनसा वाचा कर्मणा हमें प्रेरित करने वाले और भारतीय संस्कृति के आदर्श राम मात्र एक काल्पनिक चरित्र नहीं थे, उनका सशरीर अवतरण अवश्य ही हुआ था और ईश्वर की तरह भौतिक रूप में भले ही वे आज हमारे बीच न भी हों, परन्तु रामकीर्ति की सुवासित मलय आज भी दसों दिशाओं में बह रही है...उन्हें महका रही है। और विश्व के कोने-कोने बिखरे रामभक्तों के लिए इस प्राचीन रामकथा में आज भी अपार शक्ति निहित है, भवसागर को समझने की भी और इससे पार लगाने की भी- जीवन तमस को चीरने वाली सर्वाधिक दैदीप्य मणि है रामकथा। तुलसी दास ने भी तो कहा है-

राम नाम मणि दीप धरु, जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरेहुँ जो चाहसि उजियार॥

रामराज्य की पूर्व पीठिका भरत-राज्य

प्रभुदयाल मिश्र

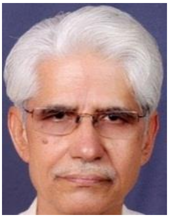

योग, वेद और वेदान्त के अध्येता श्री प्रभुदयाल मिश्र, सागर विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी में परास्नातक हैं। उन्होंने अध्यात्म और दर्शन की आधार भूमिका में दो दर्जन से भी अधिक कविता, उपन्यास, समालोचना, अनुवाद और विनिबन्ध ग्रन्थों की रचना की है। इनमें 'वेद की कविता', 'मैत्रेयी', 'ईश्वर का घर है संसार' और 'सूर्या' बहुत चर्चित हुई हैं। उच्च प्रशासकीय सेवाओं से निवृत्त श्री मिश्र वर्तमान में भोपाल, मध्य प्रदेश में रह रहे हैं तथा वेदों के शोध और सम्प्रसार में लगे महर्षि अगस्त्य वैदिक संस्थानम् के संस्थापक अध्यक्ष हैं।

जब राम को राज्याभिषिक्त किए जाने की घोषणा होती है तो राम सर्वाधिक मूल एक महत्वपूर्ण व्यवस्था का यह प्रश्न उठाते हैं –

जनमे एक संग सब भाई। भोजन सयन केलि लरिकाई॥ 2.10.C5
करनबेध उपबीत बिआहा। संग संग सब भए उछाहा॥ 2.10.C6
बिमल बंस यहु अनुचित एकू। बंधु बिहाइ बड़ेहि अभिषेकू॥ 2.10.C7

अर्थात् श्री राम राज्य में उत्तराधिकार के स्थान पर योग्य शासक के चयन के पक्षधर थे। यह प्रजातन्त्र का मूल स्वरूप है जिसके आदि प्रवर्तक राम कहे जा सकते हैं। स्वयं अपने परम प्रतापी सूर्य वंश की इस सुस्थापित परिपाटी पर प्रश्न उठाकर राम राजकुलों के परवर्ती शासन काल में उत्पन्न होने वाले उस कलह और षड्यंत्र कार्य का मूलोच्छेद करने को जैसे प्रतिसंकल्पित थे जो वर्तमान युग में संलुप्तप्राय है। यहाँ राम ने यह नहीं कहा है कि क्षमता और आवश्यकता की दृष्टि से वे अपने स्थान पर भरत को राजा बनाए जाने की बात कर रहे हैं, किन्तु आगे जाकर यही स्पष्ट होता है कि राम के अनुसार उनके स्थान पर अयोध्या का राजा प्रथमतः भरत को बनाया जाना ही योग्यतर विकल्प है।

यहाँ हमें रामराज्य को लेकर कुछ अन्य बातें समझ लेना भी उचित है। लोकमानस में रामराज्य के संबंध में रामचरित मानस के उत्तरकाण्ड में दोहा क्रमांक 19/4 से आरंभ- रामराज्य बैठे त्रैलोका से दोहा क्रमांक 31 तक जो लोक की आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक प्रगति का विवर्णन है वह जैसे मानवीय विकास की पराकाष्ठा थी जो स्वाभाविक रूप से सभी कालों में धरती के लिए वरेण्य हो जाती है। यह राम के राज्य का व्यावहारिक निदर्शन है। यह व्यवस्था पूर्ण जनतान्त्रिक थी। श्री राम द्वारा बुलाई गई उस सामान्य सभा की घोषणा से स्पष्ट हो जाता है जो उत्तरकाण्ड में दोहा क्रमांक 42 से 47 तक में वर्णित है। यहाँ राम ने अपने आपको जैसे अपनी प्रजा के नियंत्रण में छोडते हुये यहाँ तक कह दिया है–

जौं अनीति कछु भाषौं भाई। तौ मोहि बरजहु भय बिसराई॥ 7.43.C6

निश्चित ही रामराज्य की इस परिकल्पना का मूल भारतीय शास्त्र और संहिताओं में विद्यमान है। तुलसी ने जैसे इस सब का समाहार करते हुये ही दोहावली (508) में लिखा –

तुलसी प्रजा सुभाग ते भूप भानु सो होय।
बरसत हरषत लोग सब करखत लखै न कोय॥

अर्थात एक राजा प्रजा से कर उसी प्रकार 'कर' ग्रहण करता है जैसे सूर्य जल का बिना देखे आकर्षण करता है किन्तु लोगों को प्रसन्न करते हुये उसकी परिपूर्ण वर्षा कर देता है। अयोध्याकाण्ड में भरत के लिए राम स्वयं राजा और प्रजा के अन्तः सम्बन्धों की जैविक अविभाज्यता का यही आदर्श प्रस्तुत करते हैं –

मुखिआ मुखु सो चाहिऐ खान पान कहुँ एक ॥ 2.315.D1
पालइ पोषइ सकल अँग तुलसी सहित बिबेक॥ 2.315.D2

यहाँ तक कि स्वामी और सेवकों के संबंध का पैमाना भी लगभग इसी समता मूलक समाज का परिचायक है –

सेवक कर पद नयन से मुख सो साहिबु होइ ॥ 2.306.D1
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि सुकबि सराहहिं सोइ॥ 2.306.D2

वाल्मीकि रामायण के अनुसार तो भरत के चित्रकूट पहुँचते ही विक्षिप्तप्राय भरत को राम राजा के कर्तव्य बोध का बहुत विस्तृत पाठ अपनी प्रश्नाकुलता में अयोध्याकाण्ड के स्कन्ध 100 के 76 श्लोकों में सहसा समझा जाते हैं। इस शिक्षा में राजनीति, कूटनीति, व्यवहार और प्रशासन के अनेक सूत्र विद्यमान हैं। श्लोक 61 में राम के आदर्श में एक राजा को गुरु, वृद्ध, तपस्वी, देवता और अतिथियों की श्रेणी में मार्ग के वृक्ष को भी नमस्कार करना अभीष्ट है !

कच्चिद्गुरूंश्च वृद्धान्श्च तापसान्देवतातिथीन्।
चैत्यांश्च च सर्वांसिद्धार्थान्ब्राहम्णांश्च नमस्यसि॥

राजा को निश्चित ही आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ और सम्पन्न होना आवश्यक है। इसके लिए व्यय की तुलना में आय अधिक रहने का सिद्धान्त सर्वमान्य है –

आयस्ते विपुल: कच्चित् कच्चिदल्पसे व्यय:। (वाल्मीकि रामायण 100/54)

जैसे इसी के समाधान में स्वयं वाल्मीकि ने उत्तरकाण्ड में भरत के व्यवहार से इसे तब प्रमाणित भी कर दिया है जब वनवास से लौटने पर भरत ने राम को सूचना दी कि उनका राज्य कोश दश गुना बढ़ चुका है क्योंकि प्रजा ने स्वेच्छा से ही करों का भुगतान किया है तथा उन्होने इस अवधि में कोई अतिरिक्त कर भी आयत नहीं किया है।

राम के वनवास की कथा से जहां राम के अवतारत्व की सिद्धि होती है वहीं भरत के चरित्र की अर्थवत्ता का भी अभिनव उद्घाटन होता है। भरत के संबंध में सामान्य धारणा यही बनती है कि भरत ने अयोध्या का राज्य स्वीकार न कर बहुत बड़े त्याग का परिचय दिया। आम तौर पर रामायण के अध्येता भरत के भ्रातृत्व की पराकाष्ठा इस घटना में ही देखकर इसे उनके चरित्र विकास की परिपूर्णता मान लेते हैं। किन्तु यहाँ भरत के चरित्र का जो बहुत सूक्ष्म और गहन पक्ष है वह जैसे छूट जाता है। विचारणीय है कि भरत के चरित्र का वस्तुतः वह पक्ष क्या है जो उन्हें स्वयं राम, वशिष्ठ, जनक, कौशल्या, देवगणों तथा गोस्वामी तुलसी के काव्यत्व का परिमाण बनाता है?

यह स्पष्ट है कि भरत वन में ही राम को राज्याभिषिक्त करने की तैयारी से चित्रकूट पहुँचते हैं। उन्हें विश्वास है कि श्री राम 'आपुन जानि' उनका त्याग नहीं करेंगे। वे यह भी जानते थे कि उनके राज्यारोहण और राम के वनवास में महाराज दशरथ की रंचमात्र सहमति नहीं थी और न ही इसकी कोई राजाज्ञा ही प्रसारित हुई थी। इस सब के परे यदि भरत को राजा बना ही दिया गया था तो वे श्री राम के लिए इस पद को छोडने के लिए स्वत: ही प्रस्तुत थे। इतने सब के बाद अन्य अनेक विकल्प भी उनके पास थे –

1. जैसे भरत का शत्रुघ्न के साथ स्वयं बन जाना ('सानुज पठिइय मोहि बन' 2.268.D1)
2. दोनों भाइयों का लौटना और भरत का राम के साथ वन जाना ('सानुज पठइअ मोहि बन कीजिअ सबहि सनाथ' 2.268.D1)
3. भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न तीनों भाइयों का बन जाना
4. सीता के साथ राम का लौटना ('नतरु जाहिं बन तीनउ भाई। बहुरहिं सीय सहित रघुराई ॥' 2.269.C1), और
5. भरत का जीवन भर का वन प्रवास ले लेना- 'कानन करहु जनम भर बासू। इहिते अधिक न मोर सुपासू ॥' (2.256.C8) इतने सब के बाद भरत का स्वत: लौट आने का निर्णय ही क्या उनके विवेक की पराकाष्ठा नहीं हो जाता?

चित्रकूट में राम के प्रत्यागमन प्रस्ताव को लेकर तीन महत्वपूर्ण राज-सभाएं हुईं। इनमें से प्रत्येक में श्री राम ने निर्णायक भूमिका भरत को ही प्रदान की। और सबसे बड़ा आश्चर्य यही रहता है कि भरत ने राम को लौट चलने का आग्रह नहीं किया जबकि तीनों बार श्री राम ने अंतिम तौर पर निर्णय लेने का अधिकार भरत के ऊपर ही छोड़ रखा था।

1. प्रथम सभा में गुरु वशिष्ठ की स्थापना यही है – 'मोरे जान भरत रुचि राखी। जो कीजिय सो सुभ सिव साखी ॥' (2.258.C8) और राम का भी इसमें यही कहना था- 'भरतु कहहिं सोइ किएँ भलाई। अस कहि राम रहे अरगाई ॥' (2.259.C8) तथा –

'मनु प्रसन्न करि सकुच तजि कहहु करों सो आजु।' (अयो. 2/62) किन्तु इस महती सभा में अंतत: भरत की निर्णायक स्थापना यही है –

'स्वारथ नाथ फिरें सबही का। किएँ रजाइ कोटि विधि नीका॥' (2/267/3)

अर्थात् राम के लौटने में मात्र सभी अपना स्वार्थ ही देखते हैं जबकि उनकी आज्ञा पालन इससे करोड़ों गुना श्रेष्ठ है। अत: वे राम पर ही निर्णय छोडते हुये कह देते हैं –

प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि जो जेहि आयसु देब ॥ 2.269.D1
सो सिर धरि धरि करिहि सबु मिटिहि अनट अवरेब ॥ 2.269.D2

2. दूसरी सभा जनक जी के आने के बाद सम्पन्न होती है। इसकी पूर्व पीठिका में अवध और मिथिला की महारानियाँ, महाराज जनक और सुनयना तथा महाराज जनक और गुरु वशिष्ठ परस्पर गहन परामर्श करते हैं किन्तु उन्हें कोई योग्य विकल्प सुलभ नहीं होता। इस सभा में राम शपथ पूर्वक यह तक कह देते हैं-

राउर राय रजायसु होई। राउरि सपथ सही सिर सोई॥ 2.296.C8

यहीं गोस्वामी तुलसीदास ने भरत की बुद्धि को भगवान के वराह अवतार के प्रतीकार्थ में सभी के शोक की उद्धारकर्ता प्रतिपादित किया है। इस सभा में भरत श्री राम से ही बिना किसी आग्रह के योग्य आदेश प्रसारित करने का अनुरोध करते हैं क्योंकि उनके मत में राम की योग्य सेवा मात्र यही होगी –

'अग्या सम न सुसाहिब सेवा' (2.301.C4)। इसी अवसर पर राम सेवक और स्वामि की जैविक सत्ता के रूप में अविभाज्यिता का वह सिद्धान्त प्रतिपादित करते हैं जिसके पश्चात भरत को अपने अभिप्राय की सिद्धि स्वीकार करने की भी कठिनाई नहीं रह जाती – नाथ भयउ सुखु साथ गए को। (2.307.C6)।

3. अंतिम सभा भरत को 'पांवरी' का 'अवलंब' प्रदान करने के लिए सम्पन्न होती है जिन्हें प्राप्त कर भरत को इतना संतोष प्राप्त हो जाता है कि 'अस सुख जस सिय राम रहे ते' – मानो राम और सीता ही उनके साथ लौट चले हों!

भरत के भ्रातृत्व का यह आदर्श मानस के व्याख्याकार महाभारत काल तक खींचकर यह तर्क देते हैं कि यदि कौरव और पांडव, चाहे पांडु और धृतराष्ट्र की बात हो अथवा युधिष्ठिर और दुर्योधन की, द्वापर युग में अस्तित्व में रहता तो महाभारत युद्ध की आवश्यकता ही उत्पन्न न होती। किन्तु कुछ और विचारपूर्वक देखने पर यही स्पष्ट होता है कि श्री राम के राज्याभिषेक के पूर्व भरत का राज्यारोहण एक परमावश्यक स्थिति थी/ है। अत: सूत्र रूप में इसके समर्थन में कुछ आधार निम्न निर्धारित हो जाते हैं –

1. राम का राज्य वर्तमान युग के बहुमत का शासन का न होकर सर्वानुमति की व्यवस्था है। रामराज्य की स्थापना में अल्पमत के तौर पर मात्र 2 – मंथरा और कैकेयी की स्थिति भी स्वीकार्य नहीं की जा सकती।

2. राम का राज्य धर्मयुक्त सत्य के स्तम्भ पर ही स्थापित होगा। धर्म और सत्य की इस अंतरंगता पर महाभारत और रामचरित मानस में लगभग समान बात कही गई है – नास्ति सत्यात्परो धर्म: (महाभारत 156/24) और -धरम न दूसर सत्य समाना (मानस 2/95)। श्रुति में जो ऋत् है, वह सृष्टि का शाश्वत विधान है। स्रष्टा के इस सनातन दर्शन का सभी को अपनी समग्र चेष्टा में पालन करना सत्यनिष्ठा है। अत: महाराज दशरथ द्वारा कैकेयी के वचन पालन की प्रतिबद्धता राम और भरत के लिए सर्वथा अवलंबनीय है। इसमें व्याख्या, व्यवस्था और परिमार्जन का उनके लिए कोई विकल्प शेष रहने का प्रश्न उपस्थित नहीं होता।

3. राम के 'धर्मरथ' में सत्य और शील का अद्भुद् समन्वय है। रामराज्य का सत्य निष्ठुर और निष्प्राण नहीं है। इसमें सत्य की ध्वजा और शील की पताका फहराती है- सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका (6/80)। मानस मनीषी पंडित राम किंकर जी उपाध्याय ने इस भाव की उत्तम व्याख्या करते हुये यही प्रतिपादित किया है कि रामराज्य के इस ध्वज की ध्वजा के सत्य स्वरूप श्री भरत तथा शीलवान स्वयं श्री राम हैं। सत्य को जीवन में तप, त्याग और आत्मानुशासन की जो अनेक परीक्षाएँ देनी होती हैं, उनका सम्पूर्ण साक्षात्कार भरत के चरित्र में किया जा सकता है।

4. स्पष्ट है कि राम के पूर्व भरत का राज्य अन्तरिम ही है, किन्तु उनके चरित्र में राजा का आदर्श और प्रजा के अधिकार तथा कर्तव्य बोध का प्रादर्श फलीभूत होता है जो राम के राज्य की दीर्घकालिकता की पूर्व पीठिका सिद्ध होता है।

रावण का लक्ष्मण को नीति-ज्ञान

मंगलेश मुजमेर 'मंगल'

श्री मंगलेश मुजमेर 'मंगल' जी ने करीब ७० साहित्यिक रचनाएँ प्रकाशित की हैं। आकाशवाणी और कई कवि सम्मेलनों में उन्होंने काव्य-पाठ भी किया है।देश-विदेश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और संस्थाओं ने उन्हे समय-समय पर कई पुरस्कारो / उपाधियो से सम्मानित भी किया हैं।

नाभि में गड़े हुए 'राम-बाण' से मरणासन्न अवस्था में पड़े अति विद्वान पर अहंकारी ब्राह्मणाचार्य लंकापति 'रावण' के दिलो-दिमाग में उसके जीवन-पर्यंत का अर्जित ब्राह्मणत्व का तत्व ज्ञान, अनुभव, पराक्रम के साथ साथ जाने-अनजाने किए गए तमाम बुरे कार्यों की अनुभूतियाँ, किसी चल-चित्र की भाँति एक के बाद एक कौंध रहीं थीं। वह 'रावण' जिसने नव-ग्रहों को अपने वश में कर रखा था, जिसने सैंकड़ों साल तक इस धरा, आकाश-पाताल पर राज किया और जिसने 'हरि-विष्णु' को अवतार लेने हेतु विवश कर दिया था, आज पर-नारी (श्री सीताजी) को छल से अपहरण करने तथा अनेक स्त्रियों का शील भंग करने के कारण अपने अहंकार-वश मृत्यु के आगोश में जाने को विवश है।

महर्षि वाल्मीकि रामायण के अनुसार चक्रवर्ती राजा रावण स्वयं में भगवान शिव का परम भक्त था। विभिन्न पौराणिक कथाएँ भी प्रतिपादित करतीं हैं कि श्रीरामजी रावण को महा विद्वान ब्राह्मण मानते थे। रावण के दस सिर सांकेतिक दृष्टि से आध्यात्म- विषयक चार वेद और छ: शास्त्रों को मिलाकर कुल दस धर्म-ग्रन्थों का प्रकांड ज्ञाता बताते हैं। अत: उसे दस शीश से भी उपकृत किया गया है। यद्यपि रावण की दिमागी क्षमता तो अत्याधिक थी अपितु उसके हृदय में अभिमान बढ़ जाने से वह दिल से 'अहम् ब्रह्मास्मि' का राग अलापते हुए स्वार्थी और व्यभिचारी बन गया। जिन्दा होते हुए भी वह मृत जैसा ही हो गया था। उसके इन दुर्गुणों को नज़रान्दाज कर अन्तत: श्री राम जी ने मरणासन्न अवस्था में पड़े महा विद्वान रावण से शाश्वत ज्ञान प्राप्त करने के लिए अनुज लक्ष्मणजी को रावण के सम्मुख जाने को कहा। यद्यपि लक्ष्मण जी उस अहंकारी रावण जिसने माँ सीता का, छलपूर्वक अपहरण करने का घोर पाप किया था, से कतई भी कोई ज्ञान प्राप्त करना दिल से नहीं चाहते थे पर चूँकि अग्रज श्रीराम जी का यह आदेश था, अत: उन्होंने सहर्ष रावण के पास जाकर उसके सिर के समीप खड़े हो उससे शाश्वत नीति-ज्ञान देने हेतु प्रार्थना की, पर रावण ने लक्ष्मण जी को अनदेखा कर दिया। उससे कुछ भी नहीं कहा। तब लक्ष्मणजी निराश हो कर लौटे और श्रीराम जी के पास पहुँचे। श्रीराम ने लक्ष्मण से पूछा कि, 'श्री रावण ने तुम्हें क्या ज्ञान दिया?' लक्ष्मण जी ने कहा 'मैंने श्रीरावण के सिर के समीप होकर उनसे नीतिगत ज्ञान देने हेतु प्रार्थना की परन्तु उन्होंने मुझसे कुछ भी नहीं कहा,अत: मैं निराश लौट आया'। तब श्रीराम ने लक्ष्मण को समझाया कि जब कभी भी किसी से दीक्षा

या ज्ञान प्राप्त करना हो तो शिष्य के रूप में उसके सिर के पास नहीं, अपितु आदर के साथ उसके चरणों में खड़े होकर निवेदन करना चाहिए। वैसे भी चरणों के पास खडे व्यक्ति पर सीधे लेटे व्यक्ति की सीधी नजर पडती है !तब श्री लक्छमन जी ने पुन: रावण के चरणों के समीप खड़े होकर नीतिगत ज्ञान देने की सविनय प्रार्थना की। जब रावण ने श्रीरामजी द्वारा आदेशित लक्ष्मण जी को ज्ञान प्राप्त करने की चाहत के साथ अपने चरणों में खड़े पाया तो आखिर उसने मन ही मन यह अनुभूत किया कि भले ही वह श्रीरामजी की तुलना में इस युग का बड़ा शिव भक्त, विद्वान, वीर, मानवतावादी और भविष्य दृष्टा हैं पर उनसे जीत पाना उसके लिए असंभव था। श्रीरामजी ने उस वीर खरदूषण का सहज ही वध कर दिया था। रावण के उस समय के डर से भरे मनोभाव का स्पष्ट उल्लेख तुलसी कृत रामायण में भी है -

खरदूषण मो सम बलवन्ता, तिनहि को मारहि विनु भगवन्ता।

लक्ष्मण जी के विशेष अनुरोध को स्वीकार कर परस्पर चर्चा करते हुए आध्यात्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक संदर्भ में रावण ने उन्हें निम्नानुसार नीति-सम्मत शाश्वत ज्ञान दिया -

1. आध्यात्मिक संदर्भ में -
   - कभी भी नव ग्रहों को साधने का प्रयास मत करो अन्यथा कोई भी ईश्वरीय शक्ति कभी भी तुम पर प्रचंड वार करेगी, जिसे तुम्हारा कोई भी शस्त्र काट नहीं सकेगा।
   - जन -सेवा ही सर्वश्रेष्ठ धर्म है। वैसे भी मानव-सेवा, माधव- सेवा के समतुल्य होती है। यह शाश्वत सत्य तुलसीदास जी ने भी रामायण में प्रतिपादित करते हुए लिखा है कि,

     पर हित धर्म सरिस नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।

     इस संदर्भ में राष्ट्रीय गीतकार श्री इन्द्रजीत सिंह तुलसी ने भी बहुत खूब कहा है कि-

     मेरे मालिक मेरी बख्श देना खता, फूल-पूजा के तुझको चढ़ा न सका;
हाथ बन्दों की खिदमत में मसरूफ थे, हाथ खाली न थे पूजा के लिए।

2. सामाजिक संदर्भ में -
   - जीवन में यदि आपने अपने भेद किसी को बताए हैं तो उस व्यक्ति को कभी भी अपने से दूर मत करना।
   - कभी भी किसी नारी का अपमान मत करो क्योंकि यदि गाय में समस्त देवी-देवता वास करते हैं तो नारी में उनकी शक्तियाँ वास करतीं हैं।

3. राजनैतिक संदर्भ में –
   - अपने शत्रु को सदा बड़ा मान कर उसे अन्तत: छोटा बनाने का प्रयास करो, जैसा कि श्रीरामजी ने सिद्ध कर दिखाया है।
   - रावण ने लक्ष्मण जी से यह भी कहा कि, अत्यंत ज्ञानवान और शूरवीर होते हुए भी मैंने अमरता प्राप्त करने के ध्येय से ही श्रीराम से युद्ध किया है। वैसे तो इस धरती,

पाताल और स्वर्ग में ऐसा कोई भी नहीं है जो मुझे पराजित कर सके पर अनेक वर्षों की शिव साधना से मैं जान चुका था कि मेरी यह सांसारिक अमरता निश्चित ही समाप्त हो जाएगी। मेरी नाभि का अमृत मुझे सदा के लिए अमर नहीं रख सकता परंतु नाभि में उतरा हुआ यह राम-बाण निश्चित ही मुझे अमर कर देगा। इसीलिए मैंने जगत के पालनहार से बैर लिया, इतने अहंकारों का स्वाँग रचा कि श्रीराम जी को मेरा यह अहंकार चूर करने के लिए आना ही पड़ा। मैं चाह कर भी अपनी अमरता खोना नहीं चाहता था। भले इसी तरह से ही सही श्रीरामजी के साथ 'मैं-रावण', अमर तो हो जाऊँगा क्योंकि श्रीरामजी की चर्चा मुझ रावण के बिना कभी पूर्ण नहीं होगी। ऐसा कर मैंने अपने अनुज विभीषण को बताए अपने भेद के प्रकट होने के भय से भी अब मुक्ति भी पा ली है। अब मैं अमर हूँ। अब मेरा कोई भेदी नहीं है। यह अमृत लिए अब मैं चिर विश्रामावस्था में चला जाऊँगा।

- रावण ने श्री लक्ष्मण को अंत में गूढ़ रहस्य बताते हुए यह भी कहा कि जीवन के अंतिम पहर में मुझसे नीतिगत ज्ञान प्राप्त करने हेतु श्रीराम जी ने मेरे अनुज विभीषण के बजाय तुम्हे मेरे पास इसलिये भेजा ताकि तुम यह जान सको कि उसे कभी ग्यान प्राप्त नहीं होगा क्योंकि विभीषण घर का भेदी होने का पश्चाताप नहीं कर सकेगा। उस पर मेरी मृत्यु का ऋण सदा बना रहेगा। घर का भेदी लंका ढ़ाए की कहावत जब तक जीवन्त रहेगी, तब तक मुझ रावण को भी मुक्ति नहीं मिलेगी। भावार्थ यही है कि घरों में जब तक आपसी फूट रहेगी, अहंकार को कभी मोक्ष नहीं मिलेगा।

संदर्भ:

1) neetasinghal.com
2) rgyan.com
3) wordzz.com
4) India TV news.com

महात्मा गाँधी एवं रामायण

सी. कामेश्वरी, सपना सिंह

डॉ. सी. कामेश्वरी सम्प्रति भारतीय विद्या भवन, भवन्स विवेकानन्द महाविद्यालय, सिकन्दराबाद में भाषा विभागाध्यक्षा हैं | लेखन में रुचि रखने के कारण देश-विदेश में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियों में भाग लेती हैं और उत्तम प्रपत्र प्रस्तुति भी प्राप्त कर चुकी हैं। हिन्दी मिलाप, गृहशोभा, सरिता पत्र-पत्रिकाओं में इनके सामाजिक लेख छपते रहते हैं, अनेक कहानियों, लेखों, पुस्तकों, उपन्यासों का सफल अनुवाद अंग्रेज़ी एवं तेलुगु से हिन्दी में किया है। विषय विशेषज्ञ, निर्णायक, विशेष अतिथि, मुख्य अतिथि के रूप में भी रह चुकी हैं।

कु. सपना सिंह, भारतीय विद्या भवन, भवन्स विवेकानन्द महाविद्यालय, सिकन्दराबाद में विज्ञान में की छात्रा हैं। अपनी वाक कला कौशल में परंगत होने के कारण सपना सिंह अन्तर्महाविद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर अनेक प्रतियोगिताओं में भाग लेती रहती है और श्रोताओं, निर्णायकों की भूरि-भूरि प्रशंसा प्राप्त करती रहती हैं। महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका में हिन्दी लेखों, कहानियों, कविताओं का सह-संपादन किया। विज्ञान पत्रिका - साइफ के संपादन में भी पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

सार

एक सच्चे कर्मनिष्ठ व्यक्ति की पहचान उसके कर्मों से होती है। मोहनदास कर्मचंद गाँधी, महात्मा, बापू के नाम से जाने जाने वाले गाँधी जी ऐसे ही कर्मनिष्ठ लोगों में से एक हैं, जिनका जीवन भारतीयों के लिए आदर्शप्राय रहा है। उन्होंने अपनी कर्मनिष्ठता, शक्ति एवं युक्ति से भारतीयों की समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया। उनका जीवन कहीं न कहीं श्री राम के जीवन से प्रभावित था। राम शान्ति के संवाहक थे, तो गाँधी जी शान्ति के पुजारी सिद्ध होते हैं। राम ने सत्य के मार्ग पर चलकर रामराज्य की स्थापना की तो, गाँधी जी ने शान्ति से स्वराज्य की स्थापना की। राम ने धर्म और न्याय के लिए राजसी ठाठ-बाट का त्याग किया, गाँधी जी ने सत्य के राह पर अग्रसर होने के लिए अपना तन-मन समर्पित कर दिया। गाँधी जी ने 'सत्य को ही ईश्वर घोषित किया है। वे ईश्वर राम को मन, वचन और कर्म से सत्य के रूप में देखते थे' (देशबंधु-5.3.2009)। गाँधी की गाथा, राम की गाथा से अभिन्न नहीं है।

मुख्य बिन्दुः राम एवं गाँधी, सत्य, अहिंसा, न्याय, धर्म, कर्मनिष्ठ के पर्याय

प्रस्तावना

रामायण हम भारतीयों के लिए एक मुख्य ग्रन्थ है । वाल्मीकि कृत रामायण एवं तुलसीदास कृत रामचरितमानस हमारे आधार ग्रन्थ हैं और मानव जीवन को सुधारने के लिए आवश्यक सभी मूल्यों को प्राप्त करने के लिए ये सहायक ग्रन्थ सिद्ध होते हैं । राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक क्षेत्र में होने वाली सभी समस्याओं का समाधान हमें रामायण में मिल जाते हैं । रामायण के सभी पात्र, चाहे वे सकारात्मक हों या नकारात्मक उनसे हमें सीख अवश्य प्राप्त होती है । आदर्श पिता, माता, भ्राता, परिवार, संतान, गुरु-शिष्य संबंध, मौलिक एवं नैतिक गुणों को आत्मसात करने के लिए कोई न कोई पात्र हमारे सामने प्रत्यक्ष उपस्थित हो जाते हैं और उनका हम स्वाभाविक अनुकरण करने लगते हैं ।

समय के प्रवाह में एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के लिए आदर्शप्राय बन जाता है । उसकी विशेषताएँ, उसका व्यक्तित्त्व, उसकी छवि इतनी आकर्षित होती है कि उन्हें हम अपना प्रिय बना लेते हैं और उनके गुणों को आत्मसात करने लगते हैं । व्यवहार कुशलता, समानता की भावना, मृदु एवं प्रिय भाषण, युक्ति संगत बातें, सभी को साथ लेकर चलने की भावना, भेदभाव हीन व्यवहार, आकर्षित व्यक्तित्त्व, उनकी छवि को और भी पुष्ट करने लगती हैं । बापू के नाम से जाने जाने वाले मोहनदास कर्मचंद गाँधी के लिए सूर्यवंशी राजा रामचन्द्र आदर्श थे। राम और गाँधी जी के जीवन में बहुत सी समानताएँ दृष्टिगोचर होती हैं । दोनों ही अपनों के लिए त्याग-भावना लिए हुए रहते थे । दोनों ने अपना समस्त जीवन दूसरों के लिए समर्पित कर दिया । राम अपने राजसी सुख-भोग का त्याग कर माता-पिता की इच्छानुसार वनवास जाने को तत्पर हो गए थे । गाँधी जी ने समाज और देश में व्याप्त भेदभावना को मिटाने के लिए अन्न-वस्त्र का त्याग कर तन-मन के साथ देशोद्धार में लग गए थे । दोनों ही का जीवन आज के मानव के लिए आदर्शप्राय है और हमेशा रहेगा ।

विस्तार

मानव भक्ति और श्रद्धा के साथ भगवान में विश्वास रखकर उनकी नित्य पूजा और अर्चना करता है । भगवान को किसी ने भी प्रत्यक्ष रूप में नहीं देखा है, किन्तु उसे गूँगे की गुड़ की भांति अनुभव अवश्य किया है । 'मानव सेवा ही माधव सेवा है, राम सेवा है, मानते हुए अनेक महापुरुषों ने अपने जीवन को लोक कल्याण हेतु समर्पित कर दिया, इनमें से एक हैं - महात्मा गाँधी । राम उत्तर वैदिक काल के दिव्य महापुरुष और मर्यादापुरुषोत्तम माने जाते हैं तो गाँधी भारत के भाग्य विधाता, युग प्रवर्तक और अंग्रेज़ों की दासता से भारतीयों को मुक्त कराने वाले महायोद्धा सिद्ध हुए ।

रामायण हमें ज्ञान, भक्ति, नीति, सदाचार का पाठ पढ़ाता है । किसी भी जाति, वर्ग या वर्ण के लोग रामायण का पाठ कर उसे ग्रहण करने में सक्षम दिखाई पड़ते हैं । महात्मा गाँधी के जीवन से जुड़ी अनेक प्रसंगों का अध्ययन करने पर हमें यह ज्ञात होता है कि गाँधी जी रामायण से अत्याधिक प्रभावित हुए थे और श्री रामचन्द्र जी को वे अपना आदर्श मानते थे । वे राम के गुणों का अनुकरण अपने जीवन पर्यंत करते रहे । वे स्वयं कहते हैं कि, 'रामायण एक साहित्य या इतिहास नहीं है, इसका आचरण हमें हर दिन, हर पल अपने जीवन में करते रहना

चाहिए'। (CWMG 88. 155) उनके अनुसार, 'सद्व्यवहार का सतत प्रयास मनुष्य में निहित बुराई को समूल नष्ट कर देती है' । (Gandhiji's concept of value-based living -K.S. Narayanaswamy, 1999) । 'नई ऊँचाई को छूने के लिए हमें अपनी मानसिक और मौलिक मूल्यों पर निरन्तर कार्य करना चाहिए' ।

गाँधी ने एक बार कहा था कि, 'मैं रामायण को सभी भक्ति साहित्य में सबसे बड़ी पुस्तक मानता हूँ। मेरे हृदय ने पहले ही सत्य के रूप में ईश्वर को जान लिया था। उनके उच्चतम गुण और नाम को पहचान लिया था। मैं सत्य को राम के नाम से पहचानता हूँ। संकट के समय एक ही नाम ने मुझे बचाया है और अभी भी मुझे बचा रहा है' । (Young India, 1925)

उनके लिये राम सत्य के अवतार थे और सत्याग्रह के मार्गदर्शक। जिस तरह राम ने राज्याभिषेक से ठीक पहले, वनवास के प्रति उत्साह दिखाया था, भरत को सिंहासन पर बिठाना स्वीकार किया था, वह किसी भी पीढ़ी के लिए आदर्शप्राय है।

रघुकुल के राजा श्री राम के लिए आदिकवि वाल्मीकि ने जो भी लिखा है, वह महात्मा गाँधी पर भी उपयुक्त होता है - आत्मनियंत्रित, संयमशील, बुद्धिमान, न्यायप्रिय, वाणी में कुशल, दृढ़संकल्पी व सत्य की पहचान रखने वाले दिव्य पुरुष।

बापू का जीवन धर्म, राजनीति, आत्ममूल्यांकन, कर्म और मोक्ष का पर्याय रहा है। इन सभी ने उन्हें अन्याय, साम्राज्यवाद, शोषण और भेदभाव के विरुद्ध दृढ़ता के साथ सामना करने में सक्षम बनाया है। उन्होंने 'यंग इंडिया' में लिखा है, 'अपने राज्य को त्यागकर और सत्य एवं वचन-पालन के लिए वन में रहकर राम ने दुनिया के लिए महान आचरण का दृष्टांत प्रस्तुत किया है' । (Young India, 1925)

भारत के राष्ट्र पिता का मानना था कि रामनाम के साथ-साथ धर्म पालन का भी महत्त्व है। वे कहते हैं, 'मैं धर्म पालन का अभ्यास किए बिना अहिंसा का अभ्यास नहीं कर सकता और अहिंसा का अभ्यास किए बिना सत्य की खोज असम्भव है और सत्य के सिवा कोई धर्म नहीं है' । (Navjivan, 1924)

'सत्य राम है, नारायण है, अल्लाह है' । बापू ने राम को न केवल एक आदर्श पुरुष के रूप में बल्कि एक आदर्श पति, सत्य, अहिंसा, न्याय, समानता और विषम परिस्थितियों के स्वामी के रूप में देखा था। उन्होंने दमनकारी अंग्रेज़ी शासन के खिलाफ लड़ाई में भारतीयों को प्रेरित करने के लिए अयोध्या के राजा का आह्वान किया था। महात्मा गाँधी ने अंग्रेज़ों के शासन की तुलना रावणराज्य से की थी। उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के अंग्रेज़ों द्वारा शासित भारत को रावणराज्य कहा था। उनके शब्दों में - 'वर्तमान सरकार कोई रामराज्य नहीं है। यह रावणराज्य तुल्य है और उसे मुक्त होना ही होगा' । उन्होंने भारतीयों से आग्रह किया था, कि वे दीवाली तभी मनाए जब देश रावणराज्य (ब्रीटिश राज्य) से मुक्त हो जाए, तब तक हमारे लिए ये वनवास तुल्य है, उमंग से हीन नीरस मनोवृत्ति से दीवाली मनाना वास्तविक भाव से शून्य हो कर मनाना होगा' । (Navjivan, 1920)

बापू ने राम को अपने अंत:करण में स्थित माना है। उनका मानना है कि उनका जीवन श्री राम का है और वे उन्हीं के लिए जीवित हैं। उनके शब्दों में - 'मैं उन्हें सभी पुरुषों में देखता हूँ, इसीलिए सभी पिता, भाई और अपनी आयु के सभी मनुष्यों में उन्हें पाता हूँ' । भंगी (अछूत) और ब्राह्मण में मैं, एक ही राम को देखता हूँ और उन दोनों को नमन करता हूँ' । (Navjivan, 1924)

बापू ने हमेशा सबको एक समान माना था, फिर चाहे वह एक अछूत हो या ब्राह्मण। राम ने गुह को बिना किसी भेदभाव के अपने गले लगा लिया था और पादप्रक्षालन करने की अनुमति भी दे दी थी। गाँधी जी के लिए सभी धर्म एक समान थे और उन्होंने देशवासियों को यही समझाने का प्रयास किया था कि चाहे तुम ईश्वर को किसी भी नाम से याद करो, वह सभी के लिए एक ही है। उन्होंने भारतीयों को लिखे गए तालिसमान में कहा था कि यदि हम अपने भीतर के डर को हटाना चाहते हैं तो राम नाम से उपयुक्त कोई उपाय नहीं है। राम नाम एक अमोघ मंत्र है, वह निराकार है, वह महान है' । (Navjivan, 1946)

महात्मा गाँधी ने रामराज्य का आदर्श प्रस्तुत करते हुए भारतीयों को स्वराज्य पाने के लिए प्रेरित किया था। उन्होंने कहा था, हम पूरी तरह से भारतीयों द्वारा प्रशासित एक सरकार बना सकते हैं। हमारे सामने हमारे देश में राम-राज्य का उदाहरण है। हमें अंग्रेज़ी हुकूमत पर निर्भर होने की ज़रूरत नहीं है' । (CWMG 1921)

बापू का मानना था कि भारत एक सफल देश तब तक नहीं बन सकता जब तक हम सभी देशवासियों को बराबर नहीं मानेंगे। भेदभाव की भावना को उन्होंने राष्ट्र की कमज़ोरी माना है। जैसे उन्होंने राम के प्रति अपने प्रेम व आदर भाव को व्यक्त किया है, वैसे ही अछूतों के प्रति अपनी प्रेम भावना को आदर भाव माना है। उन्होंने लिखा है कि 'जहाँ अछूतों का अनादर हो वहाँ मैं नहीं रह सकता, ठीक उसी तरह जहाँ राम नाम का उच्चारण नहीं हो रहा है वहाँ एक रामभक्त नहीं रह सकता' । (CWMG 1925)

वे इस बात पर ज़ोर देकर कहते हैं कि किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके गुणों से होती है न कि उसकी जाति से' । वे अपनी बात की पुष्टि करते हुए कहते हैं कि 'क्षत्रिय में ब्राह्मण के गुण होने चाहिए यथा युधिष्ठिर और रामचन्द्र। (CWMG 1926) वे कहते हैं कि पाण्डव क्षत्रिय थे लेकिन उनमें ब्राह्मण के गुण थे और यही कारण है कि ये आने वाली पीढ़ियों के लिए आदर्श बन गए हैं।

निष्कर्ष

अन्तत: हम यह कह सकते हैं कि बापू ने अपने जीवन में रामायण से प्रभावित हो कर अनेक महत्त्वपूर्ण अंशों को अपने जीवन में अपनाया है और रामायण से सीख प्राप्त कर उनको अपने जीवन में अमल करने का प्रयास भी किया है। उन्होंने अपनी पुस्तक 'मई एक्स्पेरिमेन्ट्स विथ ट्रूथ' में अपने जीवन में सत्य को खोजने की बात कही है। भारतीय संस्कृति का सम्मान करने और इसकी रक्षा करने को कहा है। गाँधी जी का दृढ़ता के साथ मानना था कि कोई भी

सभ्यता बिना सांस्कृतिक तत्वों और मानवीय मूल्यों के निर्मित नहीं हो सकती, यदि वह निर्मित होती है तो उस का अस्तित्व दीर्घ काल तक सम्भव नहीं है। वे कहते हैं कि जो व्यक्ति राम को स्मरण करना चाहते हैं, उनके लिए राम का रूप भिन्न-भिन्न होता है। हरेक व्यक्ति के लिए राम, अपनी-अपनी कल्पना के अनुरूप अलग-अलग रूप लिए हुए होना चाहिए। वह राम जो अन्त:करण पर राज कर सके। वह राम जो त्रुटि रहित हो, निराकार हो। वे दृढ़ता के साथ कहते हैं कि अहंकार से शून्य होकर ही हम उस राम को प्राप्त कर सकते हैं। (CWMG Vol. 36 – 164 & 165) अन्त में मैं अपने प्रपत्र को विराम देती हुई, गाँधी जी की कामना को व्यक्त करना चाहूँगी। वे कहते हैं कि, यदि भारत देश पुन: राम, सीता, लक्ष्मण और भरत को उत्पन्न कर सकेगा तो बिना विलम्ब के इसकी प्रगति शुरू हो जाएगी। (CWMG Vol. 9 - 499)

संदर्भ ग्रंथ

1. Gandhiji heritage portal - The collected works of Mahatma Gandhi (1-100)
2. Young India – epaper
3. Gandhiji's concept of value-based living - K.S. Narayanaswamy
4. Navjivan - e-newspaper
5. Wikipedia
6. Deshbandu – epaper
7. Ramayana – Valmiki
8. My experiments with truth

“हनुमान चालीसा” का विश्लेषणात्मक अध्ययन

राजीव रंजन

*राजीव रंजन, नालंदा, बिहार (भारत) में जन्म। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से चीनी साहित्य में स्नातकोत्तर। चीन के उत्तर- पूर्व नार्मल विश्वविद्यालय से चीनी भाषा में विशेष प्रवीणता। आर्ट ऑफ़ लिविंग के अंतर्राष्ट्रीय योग शिक्षक। भारतीय एवं चीनी संस्कृति, भारत चीन संबंध, योग, आयुर्वेद तथा आध्यात्म पर अनेक पत्र पत्रिकाओं में आलेख प्रकाशित। **सम्प्रति** दिल्ली विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग में चीनी भाषा के प्राध्यापक।*

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र विशेष रूप से हनुमान चालीसा पर आधारित है। इस शोधपत्र में हनुमान चालीसा में प्रतिपादित शिक्षण व्यवस्था, स्वास्थ्य, एवं सामाजिक संरचना पर विचार-विमर्श करना आपेक्षित है। हनुमान चालीसा का प्रारंभ शिक्षण व्यवस्था से होता है। “जय हनुमान ज्ञान गुण सागर” इस चौपाई में गृहीत ‘ज्ञान गुण सागर’ यह वाक्य तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था का द्योतक है। जहाँ हनुमान चालीसा में शिक्षा पर बल दिया गया है। वहीं स्वास्थ्य पर भी विशेष रूप से ध्यान दिया गया है। शास्त्रों में भी यह तथ्य बार बार अध्ययन का विषय बनता है कि एक स्वस्थ व्यक्ति ही किसी कार्य को कुशलता पूर्वक करने में समर्थ हो पाता है। हनुमान चालीसा में प्रतिपादित ‘अतुलित बल धामा’ वाक्य स्वास्थ्य पर बल देता है। इस वाक्य में बल शब्द से यह शिक्षा दी गई है की हमें अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहना चाहिए। हनुमान चालीसा में केवल शिक्षा, स्वास्थ्य या कार्यकुशलता पर ही बल न देकर भारतीय संस्कृति को भी समझने एवं संस्कृति के अनुकूल आचरण करने की शिक्षा दी गई है। हनुमान चालीसा में भ्रातृ आश्रम व्यवस्था भी वर्णित है। प्रस्तुत शोधपत्र में सभी संबंधित बिंदुओं पर विस्तृत रूप से विचार-विमर्श करना अपेक्षित है।

कुंजीभुत शब्द : हनुमान चालीसा, भारतीय संस्कृति, ज्ञान, गुण

प्रस्तुत शोध पत्र गोस्वामी तुलसीदासजी कृत हनुमान चालीसा पर आधारित है, हनुमान चालीसा आदिकवि वाल्मीकि कृत रामायण एवं गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित राम चरित मानस में वर्णित राम कथा से जुड़ी हुई सर्वाधिक प्रासंगिक कथानायक रुद्रावतार वीर हनुमान के चरित्र से संबंधित है। गोस्वामी तुलसीदास ने तत्कालीन भारतीय परिवेश मे भक्ति को लेकर अपने लेखन के माध्यम से जन जन तक भक्ति आंदोलन को पहुचने के लिए जहाँ मर्यादापुरषोत्तम श्री राम के चरित्र मानस को लोक भाषा मे लिखकर रामकथा को जन – जन तक पहुँचाया वहीँ हनुमान चलीसा लिखकर उन्होंने विशेष रूप से भक्ति आंदोलन को एक नई

दृष्टि प्रदान की, आकार प्रकार की दृष्टि से भले ही हनुमान चालीसा केवल चालीस चौपाईयो में सीमित है, किन्तु इसमें प्रतिपाद्य विषय अपने आप में विशाल कलेवर लिए हुए है तुलसीदास ने हनुमान चालीसा के माध्यम से गागर मे सागर भरने का कार्य किया है। जिस प्रकार उपनिषद साहित्य का निचोड़ ज्ञान गीता में प्राप्त होता है उसी प्रकार रामायण और राम चरित मानस में प्रतिपादित अंजनिपुत्र हनुमान के चरित्र का मुख्य तथ्य हमें हनुमान चालीसा में प्राप्त होता है। हनुमान का चरित्र नवविधा भक्ति में दास भक्ति का श्रेष्ठतम उदाहरण है। हनुमान का चरित्र मानव न होकर भी भगवान के सभी भक्तों में उत्तम माना गया है।

हनुमान चालीसा के अध्ययन से पता चलता है कि इसमें शिक्षा, शिक्षण व्यवस्था छात्र स्वास्थ्य,समाज आश्रम व्यवस्था,भारतीय वेश भूषा, भारतीय जीवन दर्शन के विषय में विस्तृत रूप से विमर्श किया गया है। हनुमान चालीसा का प्रारंभ जहां ज्ञान विज्ञान से हुआ है वहीं अंतिम चौपाई में भारतीय जीवन स्तर पर भी बल दिया गया है। ज्ञान और गुण ये दो शब्द व्यक्ति के बौद्धिक विकास एवं नैतिक विकास से है। व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण मे मुख्य भूमिका निभाता है बल्कि व्यक्ति को ज्ञान के साथ गुणवान होना आवश्यक है। इससे पता चलता है कि तत्कालीन भारतीय समाज में ज्ञान का कितना महत्व था। महाकवि तुलसीदास यह मानते हैं कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में ज्ञान का महत्व सर्वाधिक है। हनुमान चालीसा के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि तत्कालीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में गुरु के माध्यम से शिष्यों को बौद्धिक शिक्षा के साथ-साथ नैतिक शिक्षा भी दी जाती थी तुलसीदास के द्वारा प्रथम चौपाई मे ज्ञान और गुण शब्द ग्रहण तत्कालीन शिक्षण व्यवस्था के स्वरूप को दर्शाता हैं। गीता में भी भगवान कृष्ण ने यह प्रश्न उठाया है कि तत्कालीन वैश्विक परिदृश्य में वह कौन है जो चराचर जगत के कल्याण की बात करता है। गीतोक्त "सर्वभूतहिते रता:" यह श्लोकांश सर्वभूत अर्थात सभी प्राणियों के प्रति प्रेम की भावना रखने की प्रेरणा देता है। इस प्रकार हम देखते हैं रामायण, गीता, मानस और हनुमान चालीसा एक दूसरे के संपूरक हैं। तीनों के अध्ययन से यह ज्ञात हुआ की प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में ज्ञान विज्ञान के साथ साथ सभी प्राणियों के प्रति समान व्यवहार एवं प्रेम पर विशेष बल दिया जाता था। इस शिक्षा व्यवस्था की हमारे विश्व को आवश्यकता है। यदि विश्व इस शिक्षा व्यवस्था पर चले तो हमें कई वैश्विक समस्याओं से लड़ने में सहयोग मिल सकता है।

हनुमान चालीसा मे शिक्षा के साथ शिक्षण और शिक्षा व्यवस्था के साथ –साथ स्वास्थ्य पर बल दिया गया है एक स्वस्थ्य व्यक्ति ही किसी भी कार्य करने मे समर्थ होता है, भारतीय ऋषियों का मानना है कि तत्वज्ञान भी निर्बल नहीं होता। इसका अर्थ है कि एक स्वस्थ व्यक्ति ही मोक्ष संबंधी तत्व ज्ञान करने मे समर्थ हो सकता है, "अतुलित बल धामा "तत्कालीन भारतीय समाज मे स्वस्थ और स्वास्थ्य का संकेत करता है। बल शब्द पूर्ण रूप से प्राणी के स्वास्थ्य से संबंधित है हनुमान चालीसा से हमे शिक्षा मिलती है कि सभी प्राणी स्वस्थ रहे।

आज विश्व की इस प्रकार के नैतिक शिक्षा की नितांत आवश्यकता है कि सभी प्राणी स्वस्थ रहे। इक्कीसवीं शताब्दी में भौतिक रूप से विकसित अर्थव्यवस्था ने विश्व को अंधा बना दिया

है, जिसने अर्थ पर केंद्रित होकर प्राणियों के हित की बात करना छोड़ दिया है। वायुमंडलीय प्राणी आज दिन प्रतिदिन और समुद्री जलचर लगातार प्रदूषित होकर लुप्त होते जा रहे है। भारतीय चिंतन सर्वदा विश्व के समस्त प्राणियों के हित की बात करता है, हमें आर्थिक विकास के साथ-साथ प्राणियों के प्रति संवेदनशील भी होना आवश्यक है। हमें हनुमान चालीसा से सीखने को मिलता है हनुमान चालीसा में ही नहीं बल्कि वाल्मीकि रामायण में भी इस बात पर बल दिया गया है कि विश्व मे ऐसा कौन है जो सभी प्राणियों की रक्षा करने मे समर्थ है यह प्रश्न ब्रह्मर्षि वाल्मीकि रामायण के प्रारंभ मे उठाया गया है, ब्रह्मर्षि वाल्मीकि ने सर्वभूतेषु को हित: की माध्यम से वर्तमान विश्व को संबोधित करते हुए यह जानना चाहा है की आज कौन सभी प्राणियों के हित की बात करना चाहता है। इस प्रकार हम देखते है की भारतीय शिक्षण व्यवस्था हमें न सिर्फ मनुष्य बल्कि चींटी से लेकर हाथी तक के हित की चिन्ता करने की प्रेरणा प्रदान करता है। हनुमान चालीसा मे भारतीय सामाजिक व्यवस्था एवं भारतीयों का जीवन दर्शन से संबंधित तथ्य भी प्राप्त होते है । “ कंचन वरन विराज सुमेसा “इस वाक्य के अंदर सुमेसा शब्द भारतीय जीवन स्तर को प्रदर्शित करता है। भारतीय समाज मे समुचित परिधान पर बल दिया जाता था। इससे पता चलता है की प्राचीन भारतीय समाज कितना सुसभ्य और सुसंस्कृत था ।

“काँधे मूँज जनेऊ साजे “इस चौपाई मे जनेऊ साजे यह वाक्यांश भारतीय आश्रम व्यवस्था एवं आश्रम व्यवस्था के अनुकूल जीवन दर्शन का दिवदर्शन कराता है, यज्ञोपवीत भारतीय संस्कृति के 16 संस्कारों मे एक महत्वपूर्ण संस्कार हैं जो भारतीय शिक्षण व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है। प्राचीन शिक्षा व्यवस्था मे पाठशाला मे प्रवेश करने हेतु इस संस्कार का अनुष्ठान किया जाता था इससे उस छात्र की जाति, धर्म, गुण का पता चलता था। इस संस्कार के बाद ही पाठशाला मे पढ़ने योग्य समझ जाता था।

“विधावान गुणी अति चातुर “इस वाक्यांश में विद्यावान शब्द विद्वता ज्ञान का प्रतीक है वही गुण शब्द काव्य के उत्कर्ष का आधायक है और चातुर शब्द बुद्धिमता का धोतक है, व्यक्ति के विकास मे उसका विशेष महत्व है। “भक्ति के दृष्टि से भी हनुमान चालीसा का विशेष महत्व है। प्रसंगता बताया जाता है कि जिस समय तुलसीदास के द्वारा राम चरित मानस या हनुमान चालीसा लिखा जा रहा था, वह कल खंड भारतीय इतिहास का संक्रमण काल था जिसमें भारतीय संस्कृति को मुस्लिम आततायीयों द्वारा पददलित किया जा रहा था, हिन्दू जन में निराशा की भावना घर कर रही थी, तब तुलसीदास ने रामकथा के माध्यम से भारतीय समाज को एक नई दिशा प्रदान किया। भक्त और भगबन के प्रति जो श्रद्धा प्रेम और विश्वास की झांकी राम चरित मानस और हनुमा चालीसा में मिलता है वह अन्यत्र दुर्लभ है। भक्ति आंदोलन की सफलता मे तुलसीदास का विशेष योगदान है, जब तुलसीदास क्षेत्रीय भाषा में मानस और चालीसा लिखी तो इनका पूरा जोर से विरोध हुआ किन्तु वह तनिक भी विचलित नहीं हुए क्योंकि भक्ति और साधन से अपने आत्मविश्वास को प्रज्ञा अवस्था में स्थित कर चुके थे। भारतीय संस्कृति मे या भारतीयों के जीवन दर्शन मे हनुमान चालीसा का विशेष योगदान है

यदि आज भारतीय विश्व स्तर पर अपने को स्थापित कर सकने मे सक्षम हो पा रहा है तो उसमे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम और हनुमान के चरित्र का ही प्रभाव है। विवेकानंद महात्मा गांधी इसके ऐतिहासिक प्रमाण है। हनुमान चालीसा मे प्रतिपादित हनुमान का चरित्र आज विश्व के लिए अनुकरणीय है । हनुमान चालीसा के अध्ययन से पता चलता है कि इसमे विदेश कीर्ति की दृष्टि से भी इस पर विमर्श हुआ है। हनुमान चालीसा मे प्रश्न उठाया गया की एक देश से दूसरे देश के मध्य आपसी संबंध की जानकारी कैसे और किस प्रकार से दूत के माध्यम से प्रगाढ़ किया जाय। दूत कैसा हो। दूत के विषय मे बताया गया है कि वही दूत अपने देश की सभी प्रकार से रक्षा करने के लिए समर्थ है जो उस देश के राष्ट्राध्यक्ष के अनुकूल आचरण करे। दूसरे देश के राष्ट्रधयक्ष से संबंधित सभी प्रकार के सूचनाओ को प्राप्त करने मे समर्थ व कुशल हो नैतिक एवं बौद्धिक दृष्टि से दूत को समर्थ होना चाहिए वर्तमान राज व्यवस्था मे विदेश सचिव का पद या विदेश मंत्रणा एवं सलाह के लिए नियुक्त किया जाता है "तुम्हारों मंत्र विभिषण माना" इस वाक्य मे मंत्र शब्द बौद्धिक मंत्रणा का प्रतीक है। दूत दूसरे देश में जाकर अपने देश के अनुकूल दूसरे देश की स्थिति को सम्यक रूप से जानकर वैदेशिक नीति को बल प्रदान करता है। हनुमान यदि विभीषण को अपने पक्ष में न किए होते तो राम को सहजता पूर्वक लंका पर विजय प्राप्त नहीं होता। यह तभी संभव हो पाया क्योंकि हनुमान जैसे दूत राम जैसे राजा के पास उपलब्ध थे। विदेश नीति की दृष्टि से हम देखते हैं की हनुमान चालीसा का कितना महत्व है I राजदूत को प्रशिक्षित करते समय इस प्रकार की नैतिक शिक्षा यदि दी जाए तो हो सकता है की भारत के वैश्विक संबंध सुदृढ़ एवं विश्वसनीय बन सके। आज विश्व परस्पर संवाद हीनता के कारण तृतीय विस्व युद्ध के कागार पर खड़ा है। "तुम्हरो मंत्र विभीषण माना (17)."

"सूक्ष्म रूप धरी सियहीं दिखावा" यह वाक्यांश कार्यकुशलता एवं कार्य के प्रति जिम्मेवारी का उदाहरण है। हनुमान ने यथा परिस्थिति के अनुकूल अपने व्यक्तित्व को उस प्रकार से दर्शाया है जिस प्रकार की उस परिदृश्य में आवश्यकता थी। हनुमान के चरित्र में कार्य कुशलता और ज्ञान उनमें विलक्षण व्यक्तित्व का द्योतक है। जब जहाँ जिस प्रकार का अवसर प्राप्त होता है, हनु मान उसको अपने अनुकूल बना लेते थे। वस्तुतः इस शोध पत्र में हनुमान के चरित्र पर विचार करना उद्देश्य नहीं है अपितु वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में हनुमान जैसे व्यक्तित्व की कितनी आवश्यकता है यह दिखाना है । " यही इस शोध पत्र का मुख्य विषय है" उदाहरणतः इस शोध पत्र में हनुमान के चरित्र का वर्णन करते हुए मानवीय मूल्यों पर बल दिया गया है ताकि हनुमान चालीसा में प्रतिपादित संदेश विश्व भर को प्राप्त हो सके। शिक्षा, स्वास्थ्य, और संस्कृति की दृष्टि से हनुमान चालीसा में प्रतिपादित बौद्धिक एवं नैतिक शिक्षा हमारे लिए आज भी महत्व रखता है। यदि आज विश्व व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व स्तर पर अपने को एक नई स्फूर्ति के साथ खड़ा होना चाहता है तो उसे हनुमान के जैसा ज्ञानवान, शीलवान, गुणवान, कार्यकुशल, सलाहकार, भक्त और ईमानदार बनना पड़ेगा।

ब्रह्मर्षि वाल्मीकि रामायण के अनुसार वानर राज सुग्रीव और प्रभु श्री राम के मिलन के समय जब सुग्रीव ने राम के पास हनुमान को भेजा था तो हनुमान अपने बुद्धिमता का प्रयोग करते हुए मानव रूप में श्रीराम से मिले। यहाँ हनुमान की कार्यकुशलता का परिचय मिलता है। हनुमान के कुशल व्यवहार को राम ने हनुमान के विषय में कहा था की आप भवाविद के कार्य कुशलता को समझने में समर्थ हैं।

हनुमान का व्यक्तित्व उनकी भाषा शैली के लिए भी जाना जाता है। श्रीराम ने हनुमान के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उन्हें वाक्पटु कहा था। आज विश्व को हनुमान जैसे व्यक्तित्व की आवश्यकता है। डॉ कलाम ने ट्रांसेडेन्ट नामक किताब में लिखा है कि व्यक्ति नहीं उसका व्यक्तित्व बड़ा होता है। जब हम हनुमान चालीसा पर अध्ययन करते हैं तो पता चलता है कि आकार और प्रकार की दृष्टि से इतने सूक्ष्म ग्रंथ में इतनी सारी ज्ञानरक्षी भरी पड़ी है जिसको आधार बनाकर की शोध कार्य किए जा सकते हैं। हनुमान चालीसा के चालीस दोहे में प्रत्येक दोहे के अंदर जिन शब्दों को ग्रहण किया गया है वे एक एक शब्द भारतीय एवं भारतीयों का जीवन स्तर, शिक्षण व्यवस्था को प्रदर्शित करता है। आज के वैश्विक परिवेश में इस प्रकार के भारतीय ग्रंथों का अध्ययन अध्यापन इसलिए भी आवश्यक हो जाता है कि यही एकमात्र साधन है जो विश्व के सभी समस्याओं को कुशलता पूर्वक हल करने में सफल हो सकता है। भाषा विज्ञान की दृष्टि से भी इसपर शोध कार्य किए जा सकते हैं। हनुमान चालीसा में हर शब्द अपने आप में पूर्णता को समेटे हुए है। एक एक शब्द को अधिकृत कर के ग्रंथ लिखे जा सकते हैं।

रामायण में वर्णित नदियाँ

सी. कामेश्वरी, के. मीना रानी

डॉ. सी. कामेश्वरी सम्प्रति भारतीय विद्या भवन, भवन्स विवेकानन्द महाविद्यालय, सिकन्दराबाद में भाषा विभागाध्यक्षा हैं। लेखन में रुचि रखने के कारण देश-विदेश में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियों में भाग लेती हैं और उत्तम प्रपत्र प्रस्तुति भी प्राप्त कर चुकी हैं। हिन्दी मिलाप, गृहशोभा, सरिता पत्र-पत्रिकाओं में इनके सामाजिक लेख छपते रहते हैं, अनेक कहानियों, लेखों, पुस्तकों, उपन्यासों का सफल अनुवाद अंग्रेज़ी एवं तेलुगु से हिन्दी में किया है। विषय विशेषज्ञ, निर्णायक, विशेष अतिथि, मुख्य अतिथि के रूप में भी रह चुकी हैं।

श्रीमती के. मीना रानी भारतीय विद्या भवन, भवन्स विवेकानन्द महाविद्यालय, सिकन्दराबाद में संस्कृत की अध्यापक हैं। उन्होंने ऋगवेद, रामायण, महाभारत, भगवद् गीता का गहन अध्ययन किया है। इनमें वर्णित अनेक पात्रों एवं विविध विषयों का विश्लेषण वे निराले ढंग से करती हैं। अनेक अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्रपत्र प्रस्तुत कर 'उत्तम प्रपत्र' पुरस्कार भी प्राप्त कर चुकी हैं। अपने वाक् कौशल के कारण इनको दूरदर्शन और अन्य सम्मेलनों में भाग लेना का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

प्रस्तावना

वेद तुल्य रामायण आदि काव्य है। मानव जीवन का आधार ग्रन्थ रामायण है। भारतीय संस्कृति की पहचान उसके साहित्य में है। उपनिषद्, पुराण, ब्राह्मण ग्रन्थ, भगवद् गीता, रामायण, रामचरितमानस जैसे महान ग्रन्थ आज भी हमारी सभ्यता की महानता को विशिष्टता प्रदान करते हैं। हमारे साहित्य की महानता हमारे महाकाव्यों में है, ऐसा कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

रामायण महाकाव्य, भगवान, देवता, राजा-महाराजा के क्षेत्र से निकलकर मानव जीवन के निकट पहुँचता है। यह एक सेतु के समान है जो परलोक के धरातल से निकलकर इहलोक में प्रवेश करता है। वाल्मीकि कृत रामायण की यह विशिष्टता है कि इसमें मानव जीवन से संबंधित राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक विषयों की संपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। रामायण का अध्ययन सूक्ष्म से सूक्ष्म तन्तुओं को झंकृत करने की क्षमता रखता है। जहाँ एक ओर रामायण अपने विभिन्न पात्रों के द्वारा आदर्श रूप स्थापित कर हमें प्रेरणा प्रदान करती है वहाँ दूसरी ओर यह हमें उन सभी प्रान्तों से अवगत करवाती है जहाँ-जहाँ पात्रों से हम पाठकों का परिचय प्राप्त होता है। मानव-दानव, प्रकृति-पर्यावरण का पाठ भी हम इससे सीख सकते हैं।

प्रकृति और पर्यावरण मानव जीवन के बहुत निकट है। इन्हीं पर आधारित होकर, मानव अपने जीवन में अनेक बदलाव करता है। यहाँ तक की उसका रहन-सहन, वेश-भूषा, खान-पान में भी वह अनेक परिवर्तन करने लगता है।

प्रकृति में जल अहम् स्थान रखता है। जल ही जीवन है, जीवन का आधार जल है। जल के बिना मनुष्य जीवन अधूरा है। यह संसार पाँच महातत्वों से बना है - जल, वायु, अग्नि, धरती और आकाश। इनमें जल मुख्य है। जल का मुख्य स्रोत नदियाँ हैं। नदियाँ कल-कल करतीं अपनी कर्ण-मधुर ध्वनि से मनुष्य को पुलकित करती हैं और अपने मीठे जल से लोगों की प्यास बुझाती हैं | श्रम मिटाने के लिए भी हम नदियों का सहारा लेते हैं। प्रात:काल से ही मनुष्य अपने दैनन दिन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नदियों पर आधारित हो जाता है। शयन समय तक के अधिकतर कार्य जल के द्वारा ही सम्पन्न होते हैं। नदियों की विशिष्टता मानव जीवन में अत्यन्त है। ये नदियाँ जो मानव जीवन में इतना महत्व रखती हैं, इसे समझने के लिए यदि हम रामायण का आधार लेंगे तो इससे हमें अनेक दृष्टान्त प्राप्त होंगे।

मानव-समाज एवं मानव-जीवन के लिए आवश्यक अनेक विषयों की जानकारी हमें रामायण से प्राप्त होती है। रामायण के अध्ययन से हमें अनेक नदियाँ, जो हमारे लिए जल का मुख्य स्त्रोत हैं, उनका उद्गम स्थल, उनके बहने की दिशा, आस-पास का प्रांत, पर्वत मालाओं, ऋषि-मुनियों के आश्रम, संगम स्थल की समस्त जानकारी प्राप्त होती है। आइए, इन से परिचय प्राप्त करें।

रामायण में वर्णित नदियाँ:

वाल्मीकि कृत रामायण के बालकाण्ड के द्वितीय सर्ग के प्रारम्भ में हम सर्वप्रथम तमसा नदी से साक्षात्कार होता है। कहते हैं कि तमसा नदी गंगा नदी के निकट है, इसका पानी कीचड़ से शून्य है और स्वच्छ है।

अकर्दममिदं तीर्थं भरद्वाज निशामय।
रमणीयं प्रसन्नाम्बु सन्मनुश्यमनो यथा॥
(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे : बालकाण्डे : द्वितीय सर्ग: 5 श्लोक:)

राम-लक्ष्मण, विश्वामित्र के साथ जाते हुए अयोध्या से डेढ़ योजन दूर पर सरयू के दक्षिण तट पर पहुँचते हैं। वहाँ वे विश्वामित्र से बला एवं अतिबला नामक दो मन्त्र समुदाय प्राप्त करते हैं। विश्वामित्र उस विद्या को प्रदान करने से पहले सरयू के जल से आचमन करने को कहते हैं। राम उस जल से आचमन कर अत्यन्त शीतलता का अनुभव करते हैं।

गुरुकार्याणि सर्वाणि नियुज्य उशिकात्मजे।
ऊषुस्तां रजनीं तत्र सरय्वां त्रय: ॥
(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे : बालकाण्डे : द्वाविंश: सर्ग: 23 श्लोक:)

वहाँ से आगे बढ़ते हुए राम-लक्ष्मण गंगा और सरयू के शुभ संगम पर पहुँचते हैं जहाँ वे दिव्य त्रिपथगा नदी के दर्शन करते हैं।

तौ प्रयान्तौ महावीर्यौ दिव्यां त्रिपथगां नदीम्।
ददृशाते ततस्तत्र सरय्वा: संगमे शुभे॥
(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे : बालकाण्डे : त्रयोविंश: सर्ग: 5 श्लोक:)

तत: प्रभाते विमले कृताह्निकमरिन्दमौ।
विश्वामित्रं पुरस्कृत्य नद्यास्तीरमुपागतौ॥
(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे : बालकाण्डे : चतुर्विंश: सर्ग: 1 श्लोक:)

विश्वामित्रस्तथेत्युक्त्वा तानृषीन् प्रतिपूज्य च।
ततार सहितस्ताभ्यां सरितं सागरंगमाम्॥
(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे : बालकाण्डे : चतुर्विंश: सर्ग: 4 श्लोक:)

गंगा नदी के मध्य पहुँचने पर उन्हें तुमुलध्वनि सुनाई देती है, पूछे जाने पर विश्वामित्र बताते हैं कि यह मानस है और विस्तार से उस नदी की जानकारी देते हैं।

कैलासपर्वते राम मनसा निर्मितं परम्।
ब्रह्मणा नरशार्दोल तेनेदं मानसं सर:॥
(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे : बालकाण्डे : चतुर्विंश: सर्ग: 8 श्लोक:)

सर:प्रवृत्ता सरयू: पुण्या ब्रह्मसरश्च्युता।
तस्मात् सुस्राव सरस: सायोध्यामुपगूहते॥
(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे : बालकाण्डे : चतुर्विंश: सर्ग: 9 श्लोक:)

अयोध्यापुरी के समीप, मानसरोवर से एक नदी निकलती है, ब्रह्म सर से निकलने के कारण यह पवित्र नदी सरयू के नाम से विख्यात है। उसका जल गंगा में मिलता है, उन्हें मालूम होता है कि दो नदियों के जलों के संघर्ष से ही यह भारी आवाज़ हो रही है।

श्रीराम, लक्ष्मण, ऋषियों सहित विश्वामित्र के साथ मिथिला प्रस्थान करते हैं और मार्ग मध्य शोणभद्र नदी के तट पर पड़ाव डालते हैं।

सुमागधी नदी रम्या मागधान् विश्रुताऽऽययौ।
पंचानां शैलमुख्यानां मध्ये मालेव शोभते॥
(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे : बालकाण्डे : द्वात्रिंश: सर्ग: 9 श्लोक:)

यह रमणीय (सोन) नदी दक्षिण-पश्चिम की ओर से बहती हुई मगध देश में आयी है, इसीलिये यहाँ यह सुमागधी के नाम से विख्यात है। यह पाँच श्रेष्ठ पर्वतों (विपुल, वराह, वृषभ, ऋषिगिरि (मातंङ्ग) तथा चैत्यक) के बीच में माला की भाँति सुशोभित है। यह नदी महात्मा वसु से संबंध रखती है। यह दक्षिण-पश्चिम से आकर पूर्वोत्तर दिशा की ओर प्रवाहित होती है।

इसके दोनों तट पर स्थित सुन्दर क्षेत्र उपजाऊ है जिसके कारण ये सदा शस्य श्यामला मालाओं से सुशोभित होती है।

विश्वामित्र यह बात भी स्पष्ट करते हैं कि उनकी बड़ी बहन सत्यवती, पति का अनुसरण करने वाली थीं। वे स्वर्ग लोक चली जाती हैं, वही परम उदार महानदी कोशिकी के रूप में प्रकट होकर इस भूतल पर प्रवाहित होने लगती हैं। वह जगत के हित के लिये हिमालय का आश्रय लेकर नदी के रूप में प्रवाहित होती हैं। शोणभद्र पार कर विश्वामित्र आदि गंगा के तट पर पहुँचकर उस रात वहीं वास करते हैं और श्रीराम द्वारा पूछे जाने पर विश्वामित्र, गंगा नदी की उत्पत्ति की कथा बताते हैं।

हिमवान नामक एक पर्वत है, जो समस्त पर्वतों के राजा और सब प्रकार के धातुओं का बहुत बड़ा खजाना हैं। उनकी दो कन्याएँ हैं - गंगा एवं उमा।

तस्यां गंगेयमभवज्ज्येष्ठा हिमवत: सुता।
उमा नाम द्वितीयाभूत् कन्या तस्यैव राघव॥
(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे : बालकाण्डे : पंचत्रिंश: सर्ग: 16 श्लोक:)

अयोध्या में सगर नाम से प्रसिद्ध एक धर्मात्मा राजा राज्य करते थे। उनकी पहली पत्नी केशिनी से एक पुत्र असंजस और दूसरी पत्नी गरुड़ जी की बहन सुमति से साठ हज़ार पुत्रों की प्राप्ति होती है। राजा सगर जब अश्वमेघ यज्ञ कर रहे थे तब इन्द्र ने उनके घोड़े को चुरा लिया था। अथक प्रयास करने पर भी जब उन्हें अश्व नहीं मिला तो सगर-पुत्र धरती खोदने लगते हैं। ब्रह्मा जी यह देखकर क्रोधित हो जाते हैं और उनको भस्म कर देते हैं। उन्हें ढूँढ़ने के लिए अंशुमंत (सगर के बेटे अस्मंजस का बेटा) निकल पड़ता है।

गरुड़ अंशुमंत से कहते हैं कि यदि गंगा का पानी इनका स्पर्श करेगी तो उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होगी। अंशुमंत इस बात की जानकारी अपने नाना सगर को देता है। सगर अनेक प्रकार से प्रयास करते हैं परन्तु वे असफल होते हैं एवं मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। अंशुमंत भी इसी प्रयास में स्वर्ग की प्राप्ति कर लेता है। अंशुमंत का पुत्र दिलीप भी गंगा को पृथ्वी पर लाने की अथक चेष्टा करते हैं परन्तु विफल ही होते हैं। उनका बेटा भगीरथ, अपनी पितृ कामना-पूर्ति के लिए एक हज़ार वर्ष कठोर तपस्या करते हैं। ब्रह्मा जी उससे प्रसन्न होते हैं। वे यह सचेत करते हैं कि गंगा की तीव्रता को मात्र महेश्वर ही धरती पर संभाल सकते हैं। गंगा ने जब यह अंहकार पा लिया कि वे अपने प्रवाह से पाताल में चली जाएँगीं, तब महेश्वर उन्हें अपनी जटा में बाँध लेते हैं। भगीरथ को जब इस बात की जानकारी प्राप्त होती है तो वे पुन: उन्हें धरती पर लाने के प्रयास में लग जाते हैं। शिवजी प्रसन्न हो कर गंगा को हिमालय में 'बिन्दु सरोवर' में छोड़ देते हैं। यहाँ पर यह सात भागों में विभक्त होकर प्रवाहित होने लगती हैं। ह्लादिनी, पावनी और नलिनी पूर्व दिशा की ओर बहने लगती हैं। सुचक्षु, सीता और महानदी सिन्धु पश्चिम की ओर बहने लगती हैं। सातवीं धारा भगीरथ के रथ का अनुसरण करने लगती हैं।

ह्लादिनी पावनी चैव नलिनी च तथैव च।
तिस्र: प्राचीं दिशं जग्मुर्गङ्गा: शिवजला: शुभा: ॥
(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे: बालकाण्डे : त्रिचत्वारिंश: सर्ग: 12 श्लोक:)

सुचक्षुश्चैव सीता च सिन्धुश्चैव महानदी।
तिस्रश्चैता दिशं जग्मु: प्रतीचीं तु दिशं शुभा: ॥
(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे: बालकाण्डे : त्रिचत्वारिंश: सर्ग: 13 श्लोक:)

सप्तमी चान्वगात् तासां भगीरथरथं तदा।
भगीरथोऽपि राजर्षिर्दिव्यं स्यन्दनमास्थित: ॥
(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे: बालकाण्डे : त्रिचत्वारिंश: सर्ग: 14 श्लोक:)

गंगा की यह धारा कहीं तेज, कहीं टेढ़ी और कहीं चौड़ी होकर बहती है। कहीं बिल्कुल नीचे की ओर गिरती है और कहीं ऊँचाई की ओर उठती हुई, कहीं समतल भूमि पर धीरे-धीरे बहती हुई और कहीं अपने ही जल से, जल में बारम्बार टक्कर लगाती रहती है। (श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे: बालकाण्डे : त्रिचत्वारिंश: सर्ग: 23-24 श्लोक:)

भगीरथ के पीछे प्रवाहित होती-होती वे यज्ञ सम्पन्न कर रहे राजा जह्नु के यज्ञ मण्डप को बहा ले जाती हैं। राजा जह्नु कुपित होकर गंगा का पान कर लेते हैं। देवता, गन्धर्व एवं ऋषि जब महात्मा जह्नु की स्तुति करते हैं तो वे प्रसन्न होकर अपने कानों के छिद्रों से उन्हें छोड़ देते हैं। जह्नु की कन्या जाह्नवी के नाम से गंगा पुन: प्रवाहित होने लगतीं हैं। गंगा के जल में आप्लावित होकर सगर-पुत्रों को स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

गंगा त्रिपथगा नाम दिव्या भागीरथीति च।
त्रीन् पथो भावयन्तीति तस्मात् त्रिपथगा स्मृता ॥
(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे: बालकाण्डे : चतुश्चत्वारिंश: सर्ग: 6 श्लोक:)

कहते हैं कि गंगावतरण की कथा सुनने से आयु, धन, यश, पुत्र और स्वर्ग की प्राप्ति होती है। ब्राह्मणों, क्षत्रियों तथा दूसरे वर्ण के लोगों को भी यह कथा देवता और पितरों को प्रसन्न करने वाली है। (श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे: बालकाण्डे : चतुश्चत्वारिंश: सर्ग: 21-22 श्लोक:)

विश्वामित्र के साथ राम-लक्ष्मण जनकपुर में प्रवेश करते हैं। वहाँ से राम-सीता स्वयंवर, दशरथ का राम-राज्याभिषेक, मंथरा की कुप्रेरणा से कैकेयी का वर माँगना आदि वृत्तान्त लोकविदित हैं।

अयोध्याकाण्ड में राम, सीता और लक्ष्मण के साथ वन-गमन करते हैं तब वे पुन: पंचचत्वारिंश: सर्ग में तमसा नदी को पार करते दिखते हैं। जब वे कोसल जनपद को पार करते हैं तब शीतल एवं सुखद जल से युक्त होकर बहनेवाली वेदश्रुति नामक नदी को पार करते हैं।

ततो वेदश्रुतिं नाम शिववारिवहां नदीम्।
(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे: अयोध्याकाण्डे एकोनपंचाशः सर्ग: 10 श्लोक:)

वहाँ से दक्षिण दिशा की ओर चलते-चलते वे गोमती नदी को पार करते हैं, जो शीतल जल का स्रोत थीं और इसके कछार में बहुत सी गौएँ विचरतीं थीं।

गोमतीं चाप्यतिक्रम्य राघव: शीघ्रगैर्हयै: ।
मयूरहंसाभिरुतां ततार स्यन्दिकां नदीम् ॥
(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे: अयोध्याकाण्डे एकोनपंचाश: सर्ग: 12 श्लोक:)

गोमती नदी को लाँघ कर श्रीरघुनाथ जी ने मोरों और हंसों के कलरवों से व्याप्त स्यन्दिका नामक नदी को भी पार किया।

प्रेक्षामि सरितां श्रेष्ठां सम्मान्यसलिलां शिवाम्।
देवमानवगन्धर्वमृगपन्नगपक्षिणाम् ॥
(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे: अयोध्याकाण्डे पंचाश: सर्ग: 29 श्लोक:)

यत्र भगीरथीं गङ्गां यमुनाभिप्रवर्तते।
जग्मुस्तं देशमुद्दिश्य विगाह्य सुमहद् वनम् ॥
(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे: अयोध्याकाण्डे चतु:पंचाश: सर्ग: 10 श्लोक:)

गंगा-यमुना का संगम स्थल बड़ा ही पवित्र और एकान्त है। वहाँ की प्राकृतिक छटा मनोरम है, निकट में ही मुनिवर भरद्वाज का आश्रम है। वहाँ से एक कोस की दूरी पर नीलवन हैं, जो चीड़, बेर और बाँस के कारण रमणीय हो गई है।

वनगमन के समय राम का सीता और लक्ष्मण के साथ चित्रकूट पर्वत, कुबेर नगरी वस्वैकसारा (अलका), इन्द्रपुरी नलिनी की शोभा का वर्णन है जो सौगन्धिक कमलों से युक्त पुष्करिणी है।

अथ शैलाद् विनिश्क्रम्य मैथिलीं कोसलेश्वर: ।
अदर्शयच्छुभजलां रम्यां मदाकिनीं नदीम् ॥
(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे: अयोध्याकाण्डे पंचनवतितम: सर्ग: 1 श्लोक:)

राम, लक्ष्मण एवं सीता के साथ पुण्यसलिला रमणीय मन्दाकिनी नदी के दर्शन करते हैं। हंस और सारसों से सेवित, नाना प्रकार के पुष्पों के कारण इसकी शोभा बढ़ जाती है। हरिनों के झुण्ड इसका पानी पीकर इसे गंदा कर देते हैं फिर भी ये घाट मन को आनन्दित करती है। मोतियों के समान स्वच्छ जल यहाँ बहता दिखायी देता है।

अरण्यकाण्ड के एकादश: सर्ग में हम पंचाप्सर तीर्थ की रमणीयता के अनेक प्रसंग पाते हैं, जो माण्डकर्णि मुनि के तप द्वारा निर्मित है।

इदं पंचाप्सरो नाम तटाकं सार्वकालिकम्।
निर्मितं तपसा राम मुनिना माण्डकर्णिना ॥
(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे: अरण्यकाण्डे एकादश: सर्ग: 11 श्लोक:)

मुनिवर अगस्त्य की सहायता से उन्हें पंचवटी का परिचय प्राप्त होता है जो गोदावरी के तट पर स्थित है। यह स्थल वृक्षावलियों से घिरी हुई है, नाना प्रकार के पक्षी इसका जल ग्रहण करने के लिए आते हैं। आसपास पर्वत माला है, जिसके कारण इसकी शोभा और भी बढ़ जाती है। विभिन्न प्रकार की धातुओं, श्रृंगार रचनाओं, पुष्प, गुल्मों, लता-वल्लरियों, वृक्षों से यह प्रान्त घिरा हुआ है।

तत्पश्चात् ऋष्यमूक पर्वत के पास स्थित पम्पा सरोवर से हमारा साक्षात्कार होता है। यह पर्वत पम्पा के पूर्वभाग में स्थित है, जिसके पश्चिम में शबरी का आश्रम है।

सप्तानां च समुद्राणां तेषां तीर्थेषु लक्ष्मण।
उपस्पृष्टं च विधिवत् पितरश्चापि तर्पिता:॥
(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे: अरण्यकाण्डे पंचसप्ततितम: सर्ग: 5 श्लोक:)

किष्किन्धाकाण्ड के प्रारम्भ में भी हमें पम्पा सरोवर की सुन्दरता का वर्णन प्राप्त होता है जो सब ओर फूलों से लदे हुए, नाना प्रकार के वृक्षों, पीने योग्य स्वच्छ जल से युक्त कमलों से व्याप्त है। उसके चारों ओर व्याप्त वन उसकी शोभा को और भी बढ़ा देते हैं।

रामायण के उत्तरकाण्ड में हमें राजा अर्जुन का अपनी स्त्रियों के साथ नर्मदा नदी में जल-क्रीड़ा करते हुए प्रसंग दिखाई पड़ता है।

अर्जुनो नर्मदां रन्तुं गत: स्त्रीभि: सहेश्वर:॥
(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे: उत्तरकाण्डे एकत्रिंश: सर्ग: 9 श्लोक:)

नदीभि: स्यन्दमानाभि: स्फटिकप्रतिमं जलम्॥
(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे: उत्तरकाण्डे एकत्रिंश: सर्ग: 17 श्लोक:)

यह नदी पश्चिम समुद्र की ओर चल रही थी। तटवर्ती वृक्ष आभूषण के समान प्रतीत हो रही थीं। चक्रवाक के जोड़े, हंस, पुष्पों के पराग, जल का उज्ज्वल फेन, खिले हुए कमल उसकी शोभा को बढ़ा रहीं थीं। कहते हैं कि उसमें स्नान करने से पाप-मुक्त हो सकते हैं।

रामायण के उत्तरकाण्ड में षट् षष्टितम: सर्ग: के अंतिम श्लोक से हमें, सीता का कुश एवं लव की उत्पत्ति के पश्चात् रघुकुल के प्रमुख वीर महात्मा राजकुमार शत्रुघ्न, वहाँ एकत्र हुए च्यवन आदि मुनियों के साथ यमुना नदी के तट पर रात बिताने की बात ज्ञात होती है।

रामायण का अध्ययन करने पर हमें जिन नदियों का परिचय प्राप्त होता है, वे क्रमश: इस प्रकार हैं - तमसा, सरयू, त्रिपथगा, मानस, शोणभद्र (सुमागधी), कोशिकी, गंगा, बिन्दु सरोवर, ह्लादिनी, पावनी, नलिनी, सुचक्षु, सीता, महानदी, सिन्धु, भागीरथी, जाह्नवी, वेदश्रुति, गोमती, स्यन्दिका, यमुना, मन्दाकिनी, पंचाप्सर तीर्थ, गोदावरी, पम्पा, नर्मदा।

सभी नदियों का जल स्वच्छ, रमणीय, विविध जीव-जन्तुओं के लिए आधार है | इन के तट पुष्पों से सुशोभित, पर्वत शिखरों से घिरी हुईं, श्रम दूर करने वाली, लोगों को सुख पहुँचाने

वाली, अलग-अलग दिशाओं में बहने वाली, विविध प्रसंगों और अविस्मरणीय कथाओं से युक्त प्रान्त हैं।

निष्कर्ष:

मानव सभ्यता के विकसित होने, गाँवों का शहरीकरण, लोगों की साक्षरता का यह परिणाम हो रहा है कि आज स्वच्छता के नाम पर अस्वच्छ वातावरण तेज़ी से पनप रहा है। भारत सरकार लाखों-करोड़ों रूपयों की लागत से आज नदियों का प्रक्षालन कर रही है। राष्ट्रीय स्तर पर 'नमामि गंगे' नाम से राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन नाम से एक पंजीकृत सोसाइटी, जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण मंत्रालय, अनेक उपायों के द्वारा इसे साफ करने में लग गई है। मध्य प्रदेश सरकार नर्मदा को साफ करने के लिए तत्पर है। गोदावरी को साफ करने के लिए नागरिक, बच्चे, बूढ़े, गैर सरकारी संस्थान एकजुट हो गई हैं। 'स्वच्छ ब्रह्मपुत्र' नाम से एक मिशन गोवाहटी में संलग्न है। देश के प्रत्येक कोने में रहने वाले नागरिक उपाय निकाल कर देश की प्रसिद्ध नदियों को साफ करने के लिए कटी बद्ध हो रहे हैं। वैज्ञानिक उपकरणों के अभाव में जब हमारे पूर्वज जल संरक्षक सिद्ध हो सकते हैं, तो हमारा भी यह कर्त्तव्य बनता है कि यदि हम प्रत्यक्ष रूप से सहायता नहीं दे पा रहे हैं तो परोक्ष रूप में अपना योगदान प्रदान करें।

भारत देश में राम ने जिन-जिन प्रदेशों में वास किया, जिन क्षेत्रों का भ्रमण किया वे नदियों के तट पर या समीप स्थित थे। हरियाली, फल-फूल, पत्तों से पूर्ण वातावरण था। हमारा सदा यही प्रयास रहता है कि हम जहाँ भी रहें या जहाँ भी जाएँ, स्वच्छ वायु एवं जल हमारे पास हो, वे हमारे मन को पुलकित और प्रफुल्लित रखते हैं। नदी और मनुष्य जीवन के बीच समानता अत्याधिक है। नदी, जहाँ से जन्म लेती है, वहाँ से निरन्तर प्रवाहित होती रहती है, कहीं भी रुकती नहीं है। सागर से मिलने की उसकी तत्परता लगी रहती है। राम ने भी अपने जीवन काल में अनेक आदर्शों की स्थापना करते हुए अपने अवतार को एक सम्पूर्णता प्रदान की। नदी के समान हम भी नि:स्वार्थ जीवन निर्वाह कर सकते हैं। श्रीरामचन्द्र जी के जीवन से प्रेरणा प्राप्त करते हुए हम भी अपना आदर्श स्थापित कर सकते हैं। पहाड़, पर्वत, घाटियों, वादियों से होती हुई निर्बाध रूप से बहने वाली नदियों के समान हमें भी दु:ख में, सुख में, हर्ष में, शोक में, अपने आप को बनाए रखते हुए, सतत चलते रहना चाहिए। अपने जीवन को सुन्दर बनाते हुए उसे सार्थकता प्रदान करना चाहिए।

तमसा नदी से शुरू हुआ रामचरित, सीता के साथ वन गमन, अहिल्या उद्धार, गुह-मिलन, वालि-सुग्रीव मैत्री, शबरी का आतिथ्य, हरेक घटना किसी न किसी नदी के पास ही घटित होती है। राम ने अपनी सहनशीलता और पवित्रता का परिचय देते हुए अपनी विशिष्टता कायम की है। हम सभी जानते हैं और मानते भी हैं कि नदी के समतुल्य जीवन निर्वाह करने के लिए हमें नदियों का संरक्षण करना है।

हजारों वर्षों से अपने स्वच्छ, स्निग्ध, कर्ण-मधुर ध्वनि से प्रवाहित हो रहीं ये नदियाँ मनुष्य को एक संदेश भी देतीं हैं। एक घरोहर के रूप में वे हमें प्राप्त हुईं हैं। हमारा भी यह कर्त्तव्य बनता है कि हम भी अपनी आने वाली पीढ़ी को घरोहर के रूप में इन्हें वैसे ही सौंप सकें। अनेक प्रदेशों को प्लावित करने वाली ये नदियाँ आने वाले समय में, युगों-युगों तक भारत की शस्य श्यामला भूमि को सींचती रहेगी यही हमारी आकांक्षा है।

मानस की रामगीता और भगवद्गीता का तुलनात्मक विवेचन

सरस्वती मल्लिक

श्रीमती सरस्वती मल्लिक रामचरितमानस के अध्ययन एवं लेखन में विशेष रूचि रखती हैं। RamQuest अंग्रेज़ी पत्रिका एवं अन्य पत्रिकाओं में इनके लेख प्रकाशित हुए हैं। वे वार्षिक रामचरित मंथन में कई बार वक्ता रह चुकी हैं एवं मानस से सम्बन्धित विभिन्न कार्यक्रम में भाग लेती हैं।

सारांश

श्रीरामचरितमानस के अरण्यकांड में राम और लक्ष्मणके संवाद को रामगीता के नाम से भी जाना जाता है। इसमें लक्ष्मण जी ने श्री राम से ज्ञान, वैराग्य, माया, भक्ति एवं ईश्वर और जीव के विषय में संक्षिप्त व्याख्या करने की प्रार्थना की है। यहाँ भगवान राम ने सरल और स्पष्ट शव्दों में लक्ष्मण जी को महत्वपूर्ण शिक्षा दी है। मानसमें यह संवाद छोटा है परन्तु इसमें अध्यात्म और भक्ति का सम्यक् विवेचन है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश दिया है। प्रस्तुत लेख में लक्ष्मण जी के प्रश्नों पर मानस के उत्तर से गीता के उत्तर तुलना की गई है।

भूमिका

श्रीरामचरितमानस एवं श्रीमद्भगवद्गीता आर्ष ग्रंथ हैं। उनके पाठ एवं अध्ययन से भगवान में प्रेम बढ़ता है और सकल मनोरथ सिद्ध होते हैं। मानसमें भगवान राम के अनेक उपदेश हैं। बालरूप में कागभुशुंडिजी फिर लक्ष्मण जी, भरत जी, जटायु, नारद, शबरी, बालि, विभीषण और अंत में पुरजनों को उपदेश दिया। राम जी ने चित्रकूट में लक्ष्मणजी को उपदेश दिया जो मानस के अरण्यकांड में है और रामगीता के नाम से प्रख्यात है। इसमें अध्यात्म शास्त्र के प्राय: सभी प्रश्नोंका सम्यक विवेचन है और इसलिये यह बहुत महत्वपूर्ण है। महाभारत में भगवान श्री कृष्ण का अर्जुन को युद्धके पूर्व दिया गया उपदेश श्रीमद्भगवद्गीता के नामसे प्रख्यात है। यह महाभारत के भीष्मपर्व में है और उपनिषद ज्ञान की तरह पूजनीय है। इसमें जीव,जगत् और ईश्वर के तात्विक स्वरूपकी विवेचना के साथ ही तत्वज्ञान का व्यवहार में उपयोग भी बताया गया है। इसीलिये यह सारे संसार में लोकप्रिय है। भगवान ने उद्धव को भी उपदेश दिया जो उद्धवगीता नाम से भागवतपुराण में है। यहाँ पर मानस की रामगीता के उपदेशों का गीता के उपदेशों के साथ तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत है।

दोनों गीताओं की वाह्यरूप से तुलना:

1. दोनों गीताओं में वक्ता स्वयं भगवान हैं और श्रोता उनके भाई और अभिन्न मित्र हैं। भगवानने उनको सखा कहा है। उन्होंने बहुत समय साथ बिताया है और मिलकर महत्वपूर्ण कार्य किये हैं।
2. दोनों ही उपदेश श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर में उनके संशय दूर करने के लिये दिये गये हैं।
3. दोनों गीताओं में भगवान प्रसन्नचित हैं। रामगीता में लक्ष्मण जी प्रसन्नचित हैं परन्तु अर्जुन चिन्तित और दुखी हैं।
4. लक्ष्मणजी के प्रश्नोंका उद्देश्य वह जानना है जिससे वे सब छोड़ कर भगवान के चरणरज की सेवा करें ओर उनका शोक, मोह तथा भ्रम नष्ट होकर उनकी भगवानके चरणों में प्रीति हो। लक्ष्मणजी के अध्यात्म सम्बंधित पाँच प्रश्न हैं और भगवान राम ने इन प्रश्नों का संक्षेप में समझाकर स्पष्ट उत्तर दिया है।
5. अर्जुनके प्रश्न का उद्देश्य यह जानना है कि उसके लिए क्या श्रेयस्कर है। वह युद्ध में गुरुजन, स्वजन संबन्धी आदि को मारना नैतिक नहीं समझता और समाज के विनाश की संभावना से चिंतित है। भगवान कृष्णने समझाने और मोह शोक दूर कर युद्ध के लिये प्रेरित करने के लिये बहुत विस्तार में उपदेश दिया। इसमें रामगीता के प्रश्नों से समानता भी स्पष्ट है।

लक्ष्मण जी ज्ञान, वैराग्य, माया और भक्ति जिससे भगवान दया करते हैं, उसका स्वरूप जानना चाहते हैं। वे ईश्वर और जीव का भेद भी जानना चाहते हैं। यह श्रीरामचरितमानस के अरण्यकांड में दो.१४ चौ ८ से दो. १४ तक वर्णित है।

माया का स्वरूप

रामगीता

मैं और मेरा, तू और तेरा, यही भाव माया का स्वरूप है जिसने जीव समूह को बस में कर रखा है। इन्द्रियों के विषय और जहाँ तक मन जाय उसको माया समझना है। मायाके दो भेद हैं- विद्या और अविद्या। अविद्या अत्यंत दुष्टा और बड़ी ही दुखरूपा है जिसके बस में होकर मनुष्य संसाररूपी कुएँ में पड़ा हुआ है। विद्या के बस में गुण हैं। वह प्रभु की प्रेरणा से जगत रचती है। माया त्रिगुणात्मका है।सृष्टि कर्तव्यके अतिरिक्त इसी के सत्वादि गुणों से भगवान में श्रद्धा भी होती है। तब जीव निरंतर उनके भजनमें लगता है तो भगवान दिव्य बुद्धि का योग कर देते हैं। तब उस बुद्धि के द्वारा मन भगवान का अनुभव करता है। (दो. १५-चौ. १-२)

भगवद्गीता

भगवान कहते हैं

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामैव ये प्रपद्यंते मायामेतां तरन्ति ते ॥
न मां दुष्कृतिनो मूढ़ा: प्रपद्यंते नराधमा:।
मायायापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिता:॥ ७.१४-१५

यह दैवी त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है। परन्तु जो मेरी शरण में आते हैं वे इस माया को पार कर जाते हैं। दुष्कृत्य करनेवाले मूढ़ नराधम पुरुष मुझे नहीं भजते हैं, मायाके द्वारा जिनका ज्ञान हर लिया गया है वे आसुरी भाव को धारण किए रहते हैं।

ज्ञान का स्वरूप

रामगीता

ज्ञान वह है जहाँ मैं और मेरा, तू और तेरा का अभिमान न हो। सबमें ब्रह्मको समान रूप से देखा जाय। (दो.१५-चौ.४)

भगवद्गीता

ज्ञान शब्द का तात्पर्य उस अंत:करण से है जो आत्मा के आवश्यक गुणों से संपन्न हो। भगवान कहते हैं- अध्यात्म ज्ञान में स्थिरता तथा तत्त्व ज्ञान के अर्थ रूप परमात्मा का दर्शन, यह सब तो ज्ञान है, और जो इसके विपरीत है वह अज्ञान है। (गीता १३.७-११, १४.१७)

वैराग्य का स्वरूप

रामगीता

कहिय तात सो परम विरागी। तृण सम सिद्धि तीन गुन त्यागी।। दो १५-चौ ८

वह परम वैराग्यवान कहा जाता है जो त्रिगुणात्मक सिद्धियों को एवं तीनों गुणों के विस्तार-ऐश्वर्य रूप तीनों लोकों के वैभव को त्याग दे।

भगवद्गीता

राग और द्वेष इन दोनों से मुक्त होना वैराग्य है। जव मनुष्य यह समझ लेता है कि विषयों में सुख नहीं है तब उसका मन स्वत: ही विषयों से विरत हो जाता है। वैराग्यशाली पुरुष विषयों से दूर नहीं भागता वरन वे विषय ही ऐसे पुरुष से निराश होकर भाग जाते हैं। (गीता २.६४)

ईश्वर और जीव का भेद

रामगीता

जो न माया, ईश्वर और न ही अपने आप को जान सके, वह जीव कहलाता है। माया का स्वामी और सर्वज्ञ ईश्वर है।(दो.१५)

भगवद्गीता

भगवान अपने आपको सर्वज्ञ कहते हैं। ईश्वर की कृपा से उनकी दी गई दिव्य बुद्धि द्वारा जीव उन्हें प्राप्त करता है। (गीता ४.५, १०.१०)

भक्ति का स्वरूप और साधन

रामगीता

भगवान कहते हैं धर्म से वैराग्य एवं योग से ज्ञान होता है तथा ज्ञान मोक्ष देनेवाला है, ऐसा वेदों में कहा है। परंतु जिससे मैं शीघ्र प्रसन्न होता हूँ वह भक्तोंको सुख देनेवाली मेरी भक्ति है। वह स्वतंत्र है। उसे दूसरे का सहारा लेना आवश्यक नहीं है। ज्ञान और विज्ञान उसके अधीन हैं अर्थात् भक्ति करने से वे स्वत: आ जाते हैं। भक्ति अनुपम सुख का मूल है जो सन्त अनुकूल हों तो वह प्राप्त होती है। भगवान तब भक्तिके साधन विस्तार से कहते हैं। प्रथम, ब्राह्मणों के चरणों में अत्यंत प्रीति हो और अपने अपने कर्म में वेद की रीति से प्रीतिपूर्वक लगा रहे। फिर इसके फलस्वरूप विषयों से वैराग्य हो तब हमारे धर्म में अनुराग उत्पन्न हो। श्रवण कीर्तन आदि नव भक्तियाँ दृढ़ हों। मेरी लीला में अत्यंत प्रीति हो। संतों के चरणों में अत्यंत प्रेम हो। कर्म वचन से भजन का दृढ़ नियम हो। गुरु पिता माता भाई स्वामी और देवता इन सबमें मुझ को ही जानकर मेरी सेवा में दृढ़ हो। मेरे गुण गाते हुए शरीर पुलकित हो जाय, वाणी गदगद हो जाय और आँखों से आँसू बहने लगे। काम आदि मद और दंभ जिसके हृदय में न हो, तो सदा मैं उनके मन में रहता हूँ। जिनको मन कर्म बचन से मेरी गति(आश्रय) है, जो निष्काम होकर मेरा भजन करते हैं, मैं उनके हृदय कमल में निरंतर विश्राम करता हूँ। (दो.१६-चौ.१ से दो. १६ तक)

भगवद्गीता

जिस परमात्मा के अंतर्गत समस्त भूत हैं और जिससे यह संपूर्ण जगत व्याप्त है वह परम पुरुष अनन्य भक्ति से ही प्राप्त करने योग्य है। सतत मेरा कीर्त्तन करते हुए प्रयत्न शील, दृढ़वृति पुरुष मुझे नमस्कार करते हुए नित्ययुक्त होकर भक्तिपूर्वक मेरी उपासना करते हैं। (गीता ८-२२)

भगवानका परम उपदेश

रामगीता

मम गुन गावत पुलक सरीरा। गदगद गिरा नयन बह नीरा॥
काम आदि मद दंभ न जाके। तात निरंतर वस मैं ताके॥ (दो. १६ चौ.६)
वचन कर्म मन मोर गति, भजन करहिं निष्काम।
तिन्हके हृदय कमल महुँ करउँ सदा विश्राम॥ (दो.१६)

मेरे गुण गाते हुए शरीर पुलकित हो जाय, वाणी गदगद हो जाय और आँखों से आँसू बहें। काम आदि मद और दंभ जिसके हृदय में न हों, हे तात! सदा मैं उसके बस में रहता हूँ। जिनको मन, कर्म, वचन से मेरी गति (आश्रय) है और जो निष्काम होकर मेरा भजन करते हैं उनके हृदय कमल में मैं निरंतर विश्राम करता हूँ।

भगवद्गीता

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी माँ नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोसिमे॥ १८-६५
सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच: ।। १८-६६

तुम मच्चित, मद्भक्त और मेरे पूजक बनो और मुझे नमस्कार करो। इस प्रकार तुम मुझे ही प्राप्त होगे, यह मैं तुम्हें सत्य वचन कहता हूँ, क्योंकि तुम मेरे प्रिय हो। सब धर्मों का परित्याग करके तुम एक मेरी ही शरण में आओ, मैं तुम्हें समस्त पापों से मुक्त कर दूँगा, तुम शोक मत करो।

अंत में श्रोताओं के उद्गार

रामगीता

भगति जोग सुनि अति सुख पावा। लछिमन प्रभु चरनन्हि सिर नावा ।। दो.१७-चौ.१)

लक्ष्मणजी ने भक्तियोग सुनकर अत्यंत सुख पाया और श्री राम जी के चरणों में सिर नवाया।

भगवद्गीता

अर्जुन कहते हैं

नष्टो मोह: स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।
स्थितोस्मि गतसंदेह: करिष्ये वचनं तव ।। १८-७३

हे अच्युत ! आपके कृपाप्रसाद से मेरा मोह नष्ट हो गया है और मुझे ज्ञान प्राप्त हो गया है। अब मैं संशय रहित हो गया हूँ, आपके वचन का पालन करूँगा।

उपसंहार

भगवान राम और भगवान कृष्ण दोनों ने अपने भक्तों पर अनुग्रह कर उपदेश दिये हैं। रामगीता और भगवद्गीता के विवेचनों में देश, काल और पात्र के अनुसार कुछ भेद प्रतीत हो सकते हैं परंतु इनका मूल तत्व एक ही है। अन्तत: दोनों ही उपदेश भगवान में भक्ति और प्रेम का मार्ग दर्शाते हैं।

अग्र से समग्र तक

आरती 'लोकेश'

दो दशकों से दुबई निवासी डॉ. आरती 'लोकेश' ने अंग्रेज़ी तथा हिंदी साहित्य में स्नातकोत्तर किया। हिंदी साहित्य स्नातकोत्तर में यूनिवर्सिटी स्वर्ण पदक प्राप्त किया। हिंदी साहित्य में पी.एच.डी. की उपाधि हासिल की। शिक्षाविद डॉ. आरती यू.ए.ई के प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान में प्रशासनिक पद पर आसीन हैं व साहित्य की सतत सेवा में लीन हैं। संपादन तथा शोधार्थियों को सह-निर्देशन का कार्यभार भी सँभाला हुआ है। कुल प्रकाशित आठ पुस्तकें हैं। दो उपन्यास 'रोशनी का पहरा', 'कारागार'; तीन काव्य संग्रह 'काव्य रश्मि', 'छोड़ चले कदमों के निशाँ', 'प्रीत बसेरा'; यात्रा-संग्रह 'झरोखे'; कथा-संग्रह 'साँच की आँच' व शोध ग्रंथ 'रघुवीर सहाय का गद्य साहित्य' हैं। श्रीराम चरित भवन द्वारा प्रकाशित 'राम काव्य' पीयूष' की सह-संपादक हैं।

'कराग्रे वसते लक्ष्मी:, करमध्ये सरस्वती।'

आदि श्लोक हमें हमारी हथेलियों की संरचना का आध्यात्मिक ज्ञान ही नहीं बाँचते; वे समझाते हैं- जीवनयापन की विधि। 'कर' यानी हाथ के अगले हिस्से में लक्ष्मी का वास है अर्थात् सबसे आगे रहने की भावना से किए गए कर्मों से अर्थ वृद्धि का योग है। कर के मध्य में सरस्वती का वास है अर्थात् आगे की दौड़ में शामिल होने के स्थान पर सबके मध्य रहकर कर्म किया जाए तो सरस्वती की प्राप्ति निश्चित है। मुट्ठी बँधने के बाद जहाँ अन्य भिन्नाकार उँगलियाँ आकर समरूपता धारण कर मिलती हैं, अनूठी एकता का सुचित्र प्रस्तुत होता है, वहाँ विद्या, विवेक, विनय, विश्वास और उदारता प्रदान करने वाली माँ सरस्वती विद्यमान हैं। आशय यह है कि समग्र में अग्र स्वत: आ जाता है।

विद्यां ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम् ।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम् ॥
अलसस्य कुतो विद्या अविद्यस्य कुतो धनम् ।
अधनस्य कुतो मित्रम् अमित्रस्य कुतो सुखम् ॥

प्रस्तुत श्लोक समझाते हैं कि विद्या से विनय, विनय से योग्यता, उससे धन, धन से धर्म और धन से सुख की प्राप्ति होती है। तात्पर्य यह है कि विद्या का स्थान प्रथम व परम है, वही धन और सुख प्राप्त करने का साधन बनता है। अर्थात् देवी सरस्वती को देवी लक्ष्मी से उच्च स्थान दिया गया है। शैशवावस्था से अग्रज-पूर्वज हमें इसी लिए शीश झुकाकर विद्या-बुद्धि की देवी से प्रार्थना करना सिखाते हैं।

संभवत: यही संस्कार रहे कि श्रीराम वन को गए। प्रभु राम चाहते तो राजसिंहासन पर अपने सर्वसिद्ध अधिकार के लिए माता कैकेयी की आज्ञा का विरोध करते। कदाचित वनगमन की अवज्ञा कर सम्पन्न महलों में रहना सुगम रहता और इतने वृहद राज्य के स्वामी बन सुविधा से जीवनयापन करते। तथापि राजतिलक, राजवैभव, योग-समृद्धियों का क्षण में परित्याग कर उन्होंने विनय, विवेक व विशालहृदयता का परिचय दिया; मान, मर्यादा, मूल्यों का पालन करते हुए जगत कल्याण के अर्थ वन को प्रस्थान किया। तीनों माताओं के वात्सल्य को एक समान आँका और समग्रता से सभी का स्नेह लिया व आदर दिया। वन की आज्ञा देने वाली कैकेयी माँ के प्रति क्रोध, घृणा, तिरस्कार, अपमान या विरक्ति के भाव उन्हें छू तक न गए। पिता की मृत्यु से उपजी विह्वलता और स्वयं माँ कैकेयी की प्रार्थना भी उनकी वचनबद्धता व दृढ़ निश्चय को विचलित नहीं कर पाई। अडिग वे कर्त्तव्यपथ पर अग्रसर हुए। अनुशासन, अनुशीलन व अनुगुणन ही उनके आभूषण के प्रतिदर्श बने।

कलियुग में बालकों को आदर्श व मूल्य निरूपण के स्थान पर प्रतियोगिता के लिए तैयार किया जाता है। शिक्षा का आधार ही है कि आगे निकलो; सबसे आगे रहो। प्राय: यहीं से नींव पड़ती है प्रतिद्वंदिता की भावना की जिससे मानव मनुष्यता को विस्मृत कर देता है और पशुता से तुच्छ स्तर पर आ गिरता है। कोई आगे बढ़ेगा तो कोई पीछे छूटेगा ही। कोई क्या! कई पीछे छूटेंगे। आरोही अपना लक्ष्य व एकाग्रचित्त ऊँचाई पर केंद्रित किए रहता है। नीचे दृष्टि डाल सहायपरक हाथ बढ़ाकर अन्यों को ऊपर भी खींच सकता है परंतु इससे उसकी अपनी उपलब्धि में व्यवधान उत्पन्न हो सकता है। पहाड़ की चोटी का क्षेत्रफल बहुत कम होता है। वहाँ सबके लिए स्थान नहीं होता। शीर्ष पर पहुँचने के लिए बहुत श्रद्धा, श्रम, धैर्य, ध्यान, बुद्धि, बल, त्याग, तपस्या, सहनशक्ति और समानुभूति की आवश्यकता होती है। कोंकणी के सुप्रसिद्ध लेखक रवींद्र केलेकर कहते हैं- 'खुद ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी ऊपर ले चलें, यही महत्त्व की बात है।'

सामूहिकता से आगे चलते हुए नायक निज को तिरोहित कर सम्मिलित रूप स्वयं बाधाएँ पार कर ऊपर बढ़ता जाता है। उन्नति, प्रगति का वास्तविक महत्त्व और सिद्धि तब है जब नायक यह सुनिश्चित कर ले कि कोई पीछे न छूट गया हो। उन सभी में सामर्थ्य की भावना व ऊर्जा भर दे जो आगे बढ़ने का आत्मविश्वास व प्रतिबल गँवा चुके हों। हारे, थके और निराश लोगों में भी जो उमंग, उत्साह और उन्नयन के नवभावों का संचार कर दे, अभिनीत लाकर अभिप्रेरित कर दे वही सच्चा नायक है; नायक से ऊपर महानायक है। ऐसे महानायक को ही भावी पीढ़ियाँ तथा समकालिक संतति अपने चिरंतर आदर्श के रूप में चुनती हैं। श्रीराम सद्गुणनिष्ठ महानायक के मानवावतार स्वरूप इस दुनिया में अवतरित हुए।

महानायक के गुणों में वीरता, शौर्य, पराक्रम, धर्मपरायणता, न्यायशीलता और संयम मुख्य हैं। श्रीराम की वीरता, शौर्य, पराक्रम से युग परिचित हैं। धर्मपरायणता ऐसी कि पति धर्म से ऊपर नृपधर्म को रखा। संयम और धैर्य की तो राम साक्षात प्रतिमूर्ति थे। सीता स्वयंवर में धैर्य से प्रतीक्षा

की। सीता पर मोहित श्रीराम ने गुरु विश्वामित्र की आज्ञा के पश्चात ही धनुष तोड़ा। उग्र स्वभावी भ्राता लक्ष्मण को पग-पग पर धैर्य और विवेक से मार्गदर्शन दिया। सुग्रीव को किष्किंधा का राज्य सौंपने के बाद उन्होंने प्रश्रवण पर्वत पर संयम व धीरज से वर्षा ऋतु भर सुग्रीव द्वारा वचन निभाए जाने की प्रतीक्षा की। लंका जाने के मार्ग में अवरोध बने समुद्र को वे पलभर में एक बाण द्वारा सुखा सकते थे किंतु समुद्र से मार्ग देने की अनुनय-विनय की। समुद्र ने प्रकट होकर स्वयं पार करने का उपाय सुझाया। उनके संयम के समक्ष बड़े-बड़े संत व जितेंद्रीय नतमस्तक हुए।

कुश का अग्र भाग चुभन देता है लेकिन समग्र कुशा मखमल मुलायम अहसास देती है। कुशाग्र से कुश तक परिणति आत्म बलिदान कर परार्थ निजाहुति देने की प्रक्रिया है, काम-क्रोध- मद-लोभ-मोह, इन पाँच विकारों को त्याजने की अभिक्रिया है। एक का उत्कर्ष ईर्ष्या-द्वेष का विषय है, जबकि सकल समाज का अभ्युदय प्रेम का साध्य है और साधन भी। महान कार्य समग्रता से ही सिद्ध होते हैं। समस्त देवगण को भी समुद्र मंथन के लिए दैत्यों का साथ लेना पड़ा। गंगा को पृथ्वी पर आने के लिए भागीरथ के तप और शिव की जटाओं का प्रश्रय लेना पड़ा। दीपक की लौ का अग्र भाग प्रज्ज्वलित रहता है जब तक उसके तल में स्नेह की समग्रता स्थापित है। नवग्रह के एक लय में घूर्णन से सौरमंडल की निर्मिति होती है। अगर सभी एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ करें तो क्या हो? नायक भास्कर भी श्रीराम की भाँति आधीनस्थों को दिशा व गति देता है।

ध्यातव्य है कि महानायक राम ने अपने प्रयाण में संतों और धर्मशीलों से ज्ञानधन ग्रहण कर आचार-व्यवहार को लोकादर्श स्वरूप स्थापित किया; सभी दैन्य, विस्थापित-निर्वासित, उत्पीड़ित, अशक्त प्राणियों को अपने सान्निध्य से शक्ति एवं साधन युक्त बनाया और कार्य सिद्धि का श्रेय दे उनकी क्षुद्रता व हीनग्रंथि का नाश किया। जैसे आगे बढ़ती एक तरंगिणी की अनेक धाराएँ स्थान-स्थान को अपनी जलराशि से धन्य करते हुए पुन: मुख्य नदी के समकक्ष ही सागर में मिलकर एक हो जाती हैं ऐसे ही एक परमात्मा के विभिन्न अंश अनेक आत्माएँ अपने-अपने कार्यों को सम्पूर्णता प्रदान कर पुन: परमात्मा में लीन हो एक हो जाती हैं। एक से अनेक और अनेक से एक होने का क्रम समग्रता का द्योतक है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के समस्त कार्य ऐसी ही सतत समग्रता की सुस्पष्ट संस्थापना हैं।

राम ने किशोरावस्था में ही सिद्धाश्रम में विश्वामित्र मुनि के यज्ञ संस्करणों को दैत्यों के उपद्रव, आक्रमण व आतंक से मुक्त किया। ऋषि-मुनियों के परित्राणार्थ यज्ञ की पूर्णाहुति में विघ्न डालने आए राक्षसी ताड़का और उसके पुत्र सुबाहु का वध किया। दण्डक वन में नक्कटी शूर्पणखा के परिवाद पर आए खर, दूषण, सेनापति त्रिशिरा और विशाल सेना ने उन्हें ललकारा तब अकेले ही युद्ध करते राम ने सबको क्षत-विक्षत कर अल्पकाल में ही उनका संहार कर डाला। सुकुमार सुशील राम को देख सुग्रीव का संशय दूर करने के लिए किष्किंधा में एक ही बाण से राम ने सात तालवृक्षों का भेदन कर दिया। सुग्रीव को आश्वस्ति प्रदान कर उसे त्रास, उत्पीड़न से बचाकर

धर्मप्रतिष्ठा, सुरक्षा, न्याय दिलाने के लिए बालि जैसे महापराक्रमी योद्धा को भी धराशायी कर दिया।

सम्पूर्ण धरा पर बालि सबसे शक्तिशाली माना जाता था। वह गदा और मल्ल युद्ध में पारंगत था। उसे भगवान ब्रह्मा से वरदान प्राप्त था कि सामने से युद्ध करने वाले की आधी शक्ति उसे हस्तांतरित हो जाएगी। बालि, जिसने एक हज़ार हाथियों का बल रखने वाले असुर दुंदुभि का वध किया; युद्ध को ललकारते रावण को काँख में दबाकर आकाश में उड़ धरती की परिक्रमा की और चार समुद्रों के तट पर पूजा अर्चना की; रावण जैसा बुद्धिमान शक्तिमान भी बालि की पकड़ से छूट नहीं पाया; ऐसे अतिशयबली बालि को मारने वाले महापराक्रमी श्रीराम क्या अकेले रावण का वध नहीं कर सकते थे? अवश्य कर सकते थे। परंतु उन्होंने अग्र के स्थान पर समग्रता को चुना, रण-यात्रा में पराक्रम प्रदर्शन का अवसर अन्यों को दिया और संग्राम-विजय में सबकी भागीदारी हुई।

अग्र रहते तो श्रीराम ऐतिहासिक विजय प्राप्त करते, मात्र इतिहास में नाम अमर करते। विजयश्री का मुकुट अपने शीश से उतार रीछ, गरुड़ एवं वानर समाज के लिए आरूढ़ किया तो समग्र हुए और सारे भूमंडल पर प्रभु के अवतार कहलाए। प्रभु राम अगर स्वयं ही सारे कार्य सम्पन्न करते तो यह 'एकश्लोकी रामायण' लोक के पठन-पाठन के लिए पर्याप्त रहती।

आदौ राम तपोवनादि गमनं हत्वा मृगं कांचनम् ।
वैदेहीहरणं जटायुमरणं श्री सुग्रीव सम्भाषणम् ॥
बाली-निर्दलनं समुद्रतरणं लंकापुरी दाहनम् ।
पश्चाद्रावण कुम्भकर्ण हननं एतद्धि रामायणम् ॥

निर्वासितों, पिछड़ों को साथ लेकर न चलते तो आचारसंहिता के युगप्रवर्तक कैसे बनते? उनका शांत-सरल-सलोना-सौम्य रूप और दूसरी ओर शौर्य-शूरत्व-पुरुषार्थ-उद्योग; ऐसा बहुआयामी व्यक्तित्व सम्पूर्ण मानव जाति के लिए अनुकरणीय व पूजनीय बना। एक वृक्ष की शाखाएँ एक दूसरे से कितनी भी दूर निकल जाएँ, एक तने से जुड़ी रहती हैं। अनगिनत पत्ते, फूल, फल, उस वृक्ष पर आश्रित खग, विहग, चतुष्पादी सभी जीव-जंतु समग्र रूप से उसके अंग हैं। किसी एक के अत्यधिक मात्रा में आगे निकलने के प्रयास से संतुलन डोल सकता है और समस्त सृष्टि का विकास अवरुद्ध कर सकता है। बीज से विशाल तरु बनने तक इसके सभी अवयव समान रूप से वृद्धि को प्राप्त करते हैं। श्रीराम का चरित्र और उनके अनुयायी इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

रामभक्त भी राम के चरित्र का विस्तार रूप ही हैं। प्रचलित मान्यताओं के अनुसार राम के अनन्य भक्त हनुमान ने जो 'हनुमद रामायण' चट्टान पर नख-लेखनी से लिखी उसे समुद्र में मात्र इस उद्देश्य से बहा दिया कि वाल्मीकि कृत रामायण को सर्वोच्च स्थान मिल सके। हनुमान, जो बाल्यावस्था में फल जानकर सूरज का भक्षण कर बैठे, वे अकेले ही रावण को मारने की क्षमता

रखते थे। जिस बालि से रावण नहीं जीत सका, उस बालि के ललकारने पर हनुमान से युद्ध तय हुआ तो अंजनिपुत्र की शक्ति का पाँच प्रतिशत आधान भी बालि अपने तन में सहन नहीं कर सका। ऐसे अतीव बलशाली हनुमान समुद्र लाँघ भी सकते थे और अपना आकार बढ़ाकर सारी रामसेना को पार पहुँचा भी सकते थे। फिर भी सभी की मदद से पुल बनाया गया। यहाँ तक कि गिलहरी जैसे लघ्वाकार प्राणी तक के श्रमदान के महत्त्व का भी संज्ञान लिया गया। वानर सेना सुग्रीव की सेना की सहायता से रावण से युद्ध किया गया। इस प्रकार प्रभु राम ने रावण के विनाश की यशोगाथा में सभी को साझा अंशधार बनाया।

राजा के गुण साम, दाम, दण्ड, भेद, दान, क्षमा, सत्य, धैर्य और विक्रम माने गए हैं। अविरल करुणासिंधु राम ने पाषाणरूप अहिल्या में प्राण प्रतिष्ठा की। दण्डकारण्य में वनवासी आदिवासियों को धनुर्विद्या सिखाई। सुग्रीव के विलास-मग्न होने पर वचन भुलाने के अपराध को क्षमा किया। लंका पर चढ़ाई के लिए धैर्य से प्रतीक्षा की। शत्रुभ्रातृ विभीषण को हृदय से लगाया। प्राकृत धर्म की स्थापना और राजधर्म के पालन के लिए रामेश्वरम में पावन शिवलिंग की स्थापना कर सभी अनुष्ठान विधिवत पूर्ण किए। विश्व का पहला सेतु 'नल सेतु' राम के आदेश पर समुद्र पर बाँधा गया जो कालांतर में 'रामसेतु' कहलाया। समग्रता के सारे तत्त्वों का समावेश कहीं मिलता है तो वह है श्रीराम की गाथा।

प्रभु राम सबकी आत्मा में ऐसे जड़े हैं जैसे मुद्रिका में नगीना। सर्वथा विलग भी, सबमें प्रवाहित; सबका आधार और सब पर आधारित; अनेक रूपों को एकरूपता से जोड़ते हुए। संतश्रेष्ठ कबीरदास जी कहते हैं-

सब में रमै रमावै जोई, ताकर नाम राम अस होई ।

अर्थात जो हर किसी में बसता है और सभी को अपने में समाहित कर लेता है वही राम है। इसी कारण भक्तवत्सल करुणानिधान प्रभु श्रीराम अपने शीर्ष भक्त स्वामी तुलसीदास के घर में पहरा देते हैं। राम ने अपनी लीला से उदारता की पराकाष्ठा के अखण्ड सत्य की पुष्टि की है। अपने जीवन चरित में समग्र को ही अग्र करने का विलक्षण दृष्टांत प्रस्तुत किया है।

अंततोगत्वा सार-सीख, जो मैंने पाई, वह निम्नानुसार बतलाती हूँ-

प्राणों की कायिक यात्रा में, आत्मा बहुधा तप्त व्यग्र,
निज-पर गणना तमस जाल, परछाई से द्रुत गम अग्र।
प्रभु श्रीराम की जीवन-दृष्टि, व्यष्टि से ले चले समष्टि,
ज्ञान-रश्मि स्व त्याज्य, क्षण में 'मैं' से मैं हुआ समग्र।

होइहि सोइ जो राम रचि राखा

Vinay Sharma, Rajat Agrawal

Professor Vinay Sharma is teaching Strategy, Innovation and Product and Brand Management at IIT Roorkee. He has pursued research in the areas of spirituality for market development, low-cost forest bio-residue based energy, health care provision to the rural and the poor and market opportunity development.

Prof Rajat Agrawal is a member of faculty at IIT Roorkee in the department of Management Studies. He works in the areas of manufacturing competitiveness, social sustainability and innovation capabilities at SMEs. He has received various awards for his scholarly publications.

होइहि सोइ जो राम रचि राखा । को करि तर्क बढ़ावै साखा ॥
अस कहि लगे जपन हरिनामा । गईं सती जहँ प्रभु सुखधामा ॥

Premise of this paper is Reverse Analysis.

इहाँ संभु अस मन अनुमाना । दच्छसुता कहुँ नहिं कल्याना ॥
मोरेहु कहें न संसय जाहीं । बिधि बिपरीत भलाई नाहीं ॥

Question is that how one should look at the context of the Chaupayee (Chhand) which says anything, and everything is at the will of Shri Ram. It is true, but do we find it paradoxical in the light of what we can do or the things at the micro and the macro levels? Is it a lesson to be learnt and to be followed or to pacify or console ourselves after something happens and we have found it either beyond control or we have found ourselves helpless in due course of time?

Future is unknown to us. Last 11 months are a lifetime testimony as none of us imagined anything of this sort and magnitude effecting the lives of almost everyone on this planet in the form of a pandemic. We all had plans in February 2020 and calendars were beaming with schedules. But, by March 2020 everything came to a standstill and then the parameters and the measurement criteria we had in mind started failing in terms of negative indicators of economy, health, life etc. Did we fail in terms of parameters and measurement criteria? Or did we extrapolate the linear progression of the resultant of our capabilities? Or did we entirely forget the fundamentals of authority and power of nature controlled by Shri Ram?

Someone would have warned us. People have always been discussing on the 'WILL' of Shri Ram; but, probably we did not believe or we started feeling control and deciphered our control in terms of the domain of things within our reach, forgetting the fundamental lesson that probably nothing is in our reach.

Analyzing what has resulted according to one's expectations and considering it as blessings (Kripa) and looking into our mistakes when things do not turn our way can be a kind of thought process. But then the immediate question could be why not keep asking for what we desire and keep believing that he wants to give better than this and keep working as Shri Ram would have desired for us to work. Here, one can recall:

एकु मैं मंद मोहबस कुटिल हृदय अग्यान ।
पुनि प्रभु मोहि बिसारेउ दीनबंधु भगवान ॥

Therefore, to keep asking for what we desire and keep believing one needs to pray for benevolence and blessings because without devotion one cannot have complete trust in all that is happening as a desire of Shri Ram. This is seen as an absolute truth with utmost sincerity, because doubting God and having disbelief in his benevolence is an act of contempt and contrary to worship and leaves an individual astray making him believe he is the master of the outcomes of his desires and creator of his own destiny. One must remember that with God's kindness and generosity; an individual is inspired leading to the emergence of thoughts and answers in his mind with prayer and satsang. Our doubts are cleared by divine power generating divine resolution ultimately providing us a path to follow and act.

Further, measuring the complete process in terms of or against the benchmark of

a) What we thought for,
b) What happened externally affecting our plan and efforts,
c) How we executed everything with the perspective of outcome, and
d) Effects of those outcomes in terms of the benefits.

This may be a process of evaluation giving us a modular logic and a scientific methodological frame on the basis of theoretical evolution and theory of falsification, but, once we keep believing in what Shri Ram desires for us, we may get out of what we desire for and finally reaching a situation of rising and following Shri Ram everyday with perspective of Shanti, Dharma, Satya, Prem, Tap, Tyag, Krupa, Karuna and Kshama subsequently, believing and focusing on the path, acknowledging that we are no one to steer and in fact require being steered every moment with the understanding, that,

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि । श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि ।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि ।श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥
माता रामो मत्पिता रामचंद्र: । स्वामी रामो मत्सखा रामचंद्र: ।
सर्वस्वं में रामचंद्रो दयालु: । नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥

Does it mean we stop looking forward? Absolutely not, there is no other option. We are doing what we can to take our life forward as we should but not with the arrogance or illusion of a doer but as a devotee, who is following the path created by the Supreme Shri Ram.

हरि माया कृत दोष गुन, बिनु हरि भजन न जाहिं ।
भजिअ राम तजि काम सब, अस बिचारि मन माहिं ॥

When we repeat these words in our mind in a continuous litany, we submit to Shri Ram and his divine power, leaving everything behind and all the uncertainties and failures at his feet. This in no way warrants our inactions. Leaving everything behind is not equivalent to giving up everything. No one can remain actionless even for a moment. Our actions and deeds should be consistent and constant in pursuit of lessons cultured by the grace of divine power dwelling in oneself and within the purview of Shri Ram's blessings. One way to see it is as the enlightenment of Arjuna in Bhagavad Gita. After enlightenment, Arjuna made his choices with the awareness as he was no one to change foreordained. Every individual has to perform his obligatory duty, engage in actions free from attachment to the fruits of work, renounce one's doubts and then submit to the ultimate protector, Shri Ram. Because Shri Ram is the one who drives the living beings and the illusion, he is the one who creates the bond, the one who gives salvation. If everything is to be done by him, then believing in him is the undeniable conclusion.

AND FINALLY UNDERSTANDING and BELIEVING

The context of believing in Shri Ram has been elaborated in Shri Ram Charit Manas with reference to a Leela which Bhagwan Shankar demonstrated. It is known to all who have read and heard the same. We intend not to go in the perspective we have developed why Bhagwan created this Lila but intention here is to present a perspective on the fact that we tend to analyse retrospectively and prospectively on what we think we are able to visualize.

In the same situation, taking external factors constant, disparities in the action of two individuals can lead to different outcomes. We can interpret these events, actions and behaviour with respect to our body-mind-energy-consciousness in the form of three gunas: sattva (goodness, constructive and harmonious), rajas (passion, active, confused), and tamas (darkness, destructive, chaotic). All three gunas are present in all and the changes in

their proportions affect the nature of thoughts and actions but from where these gunas are originated (biologically not proven) and attribution of their interplay is still a mystery with scant scientific, analytical and critical evidence.

We are also able to visualize in five different ways- Words (Shabd), Apparent (Pratyaksh), Evidence (Praman), Hypothesis and Presumptions (Arthapatti) and Examples (Udharan). The first three can easily be seen directly and the fifth through patterns. The fourth word, knowledge through postulations or in other sense falsification, which is quite evident in descriptive research design, is the capacity for a theory or hypothesis to be contradicted by evidence, i.e., accepted until proven wrong once again. This theory of falsification emerges due to our perspective of critical and analytical nature which includes restricted vision, limited reasoning and the reason for reasons which have become a prominent part of our thinking that causes limitations. Once this limitation to our thoughts comes in, we tend to go deeper into the database and either rearrange the system or re-analyse the whole dataset or even revisit the associated algorithms. And if there is no answer then we tend to either categorize things in terms of unexplainable or an experience beyond normal.

Numerous trivial or significant disparities with the perspective of judgement and decision making in times of uncertainty can be seen but, beyond a certain level; trying every trick in the nook, referencing all the available subjects or clearing one's dilemma with detailed and never-ending argument, ultimately reaches to the same conclusion. Not to say, that generating argumentative perspective has no foundation or conclusion. There have been quite a number of researches done over the evolution of mankind reaching their stated conclusion and proven multiple times successfully but the ultimate end, which talks about beyond those conclusions can be beautifully summarized in the above mentioned Chaupayee.

Interestingly, as stated above, intelligentsia has different viewpoints in following the pursuit of understanding this world. Kahneman, D. (2011) reveals dual systems of the brain; system 1 (impulsive and involuntary) and system 2 (effortful mental activities including complex computations) which shapes human perception and choices. Klein, G. (2013) came up with a triple path model of insight. Rational choice theory (Smith, A., 1869), attribution theory, self-service biases and shortcuts in judgements (Robbins, S. P., & Judge, T. A., 2010), are few of the many research outputs which reflect on individual or organisational choices and judgements. For various perceptions and rationale, works of Stefan Klein, Rhonda Byrne, Stephen Hawking, Michio Kaku, Peter Drucker, Sumantra Ghoshal, C.K. Prahalad, Philip Kotler and many others can also be referred to.

After looking into the perspective shared by many such thinkers in isolation and integrated to the commonalities, they carry ONE element which comes to the fore is 'limitation of understanding'.

This is exactly we tend to explain here that either we visualize things with the perspective of understanding and a limitation to it and then convert everything into our algorithms and models and try to run and forecast and increase efficiency and effectiveness to realise the forecast productively or we tend to believe that the visualization we have with its limitations and beyond and the procedures and processes we tend to develop are actually that Shri Ram has decided and already created inculcating visions of the path while leading us.

On the way we tend to realise that a single step or whole of the path is led and governed by Shri Ram and suddenly we raise our hands, smile at our ignorance, and become thankful for the bliss of Shri Ram. This very moment he wishes us to realise that this is his Lila.

Same instance has been written in Ramayana when Mata Gauri appears in front of Shri Ram appearing as Mata Sita to understand if Raja Ram who is looking all over for Sita Mata asking one and all about her is Shri Ram whose name is enchanted by Bhagwan Ashutosh Himself. And this is the moment when Prabhu Ram calls her Mata instantaneously depicting truth.

As suggested earlier we wish to refrain from discussing our understanding of the Lila here but to suggest whichever way we look at things, say in terms of Business and Management Models, Functional Innovations, Environmental Perspective, Financial and Operational Models, Big Data Analysis, Artificial Intelligence and everything else, first thing we do is acknowledge limitations and then try to explain things not realizing that starting from the starting point 'it happens'.

This mathematical analysis in the form of almost calculative, predictive modelling or philosophical perspective of poetic inclination stops at one stage; a point beyond which there is no explanation. We may try to correlate many existing factors, prepare ourselves to face uncertainties and plan with the best of the precision; but, beyond a certain point, things will go astray due to the unforeseen effect and things we cannot visualize, making us perplexed and leaving no other explanation other than predestined path and Shri Ram's will.

For example, recently a data analyst interestingly said that we now wish to have a large number of storytellers who tend to derive meaning out of everything. Are these storytellers those people who have 'anubhuti' because meaning seems to be derived? But if we look deeper, it tends to emerge when Shri Ram lets it emerge. Remember when we keep saying

that, ‘this’ is why it happened or I don’t know why it happened and in the end we say Oh! So, this is why it happened.

We may try and deliberate retrospectively (which we usually do) with reference to all the major disciplines and several functionalities and we realise that it’s a matter of time we find out that almost all that we have understood can be falsified and the reason for anything or everything is a sequential correlation we tend to make or develop limited deduction, induction or abduction which we carry, which also gets nullified after a stage and we tend to say that circumstances and time along with its factors have changed.

The lessons here are that unpredictability may only have an explanation with reference to the context of ‘रचा हुआ’ that is established in a sequence and algorithm not known and understood by us. Arguments around finding reasons and reasons for reasons can be the methodology. Addition or deletion of factors, independence and dependence of variables, establishment of constructs and deconstruction thereof may also be methods but with limitations.

Whereas the most interesting part is that the arguments have a tendency of branching out and getting falsified in due course of time.

Branching out brings an automatic sequence of inputs and outputs, which generates fallacy of control and costs. This is like you allocate a sum to yourself and then perform a cost analysis and on that basis without acknowledging the origin or the actual right to the sum, initiate a loss and gain analysis. We must remember one thing that arguments, reasoning, and doubts deviate the focus (ध्यान तथा स्मरण). Let us remember,

मोक्ष देने वाले तथा माया के प्रेरक एक ही हैं, श्रीराम।

We suggest that someday one must go to a beautiful quiet place, say Ayodhya or Guptar Ghat and just sit quietly with devotion for a while and here will come this thought definitely at least for once: होइहि सोइ जो राम रचि राखा।

References

1. Kahneman, D. (2011). *Thinking, fast and slow*. Macmillan.
2. Klein, G. (2013). *Seeing what others don't: The remarkable ways we gain insights*. Public Affairs.
3. Robbins, S. P., & Judge, T. A. (2010). Essentials of organizational behavior 10th.
4. Smith, A. (1869). *An Inquiry into the Nature and Causes of the Wealth of Nations, volume 1* (Vol. 1). Oxford: Clarendon Press.

Ramcharitmanas: A Book of Knowledge for Managers

Sanjiva Shankar Dubey

Sanjiva Shankar Dubey is currently a Professor and head of IT Area at BIMTECH Greater Noida in India. He has been a visiting professor to several institutions. He has published 12 books on IT strategy and management. His career spanning 35 years with IBM culminated as head of Asia Pacific for IT Service Delivery responsible for 17 countries in this region. He is a regular participant to Ramayana conferences.

Like most Indian Hindu homes, reading and reciting Ramcharitmanas was a practice in my home as well. From early childhood we children used to sing along with parents and other elders. Reciting stanzas of Ramcharitmanas at different occasions, be it Ramnavami or Navaratri, was done with regularity. In my home reading complete Ramcharitmanas in nine days is an annual tradition that is still followed.

I grew and studied in a Hindi medium school where Tulsi Jayanti (birthday of Tulsidas) was an annual celebration. During these occasions, I was a regular participant in various plays based on the incidents taken from Ramcharitmanas such as Kevat Prasang, Lakshman Parasuram Samvad, and Angad Ravan Samvad etc.

In the subsequent years of my working life spanning across several leading corporations of the world, managing teams across multiple continents, I realized that many of my learnings as a manager have originated from the incidents narrated in Ramcharitmanas, consciously or unconsciously. This article is a brief summary of lessons that I have learnt from Ramcharitmanas and applied as a manager in my life.

Lesson 1. Show Presence of mind, Sense of urgency and self-less service

I am enamored by the character of Hanuman ji. Many a times I have tried to follow him through the lessons learnt from Ramcharitmanas. Hanuman ji is the central character of Ramcharitmanas without whom the later part of the Ram katha would have never completed. His devotion to his master was exceptional and he was the greatest trouble shooter for Lord Ram. Witty and intelligent to the core, his deeds are exceptional and exemplify what devoted team member must do. As a team member he went beyond the call of duty and achieved tasks irrespective whether a proper brief or resources were provided or not. Be the episode of crossing the sea and managing the sea creatures or bringing in Sanjeevanee booty from the Himalayas, all are lessons for a manger to known how to accomplish any task. The other great virtue one

receives from Hanuman ji is the selfless act and no expectations, which makes him worshipped for ages across the world.

The presence of mind shown by Hanuman ji on various occasions is memorable which we as managers must take note of. Having been captured by Ravan who chose to burn his tail instead of killing him, gave him a unique opportunity to burn the entire city of Lanka and be remembered for this unique feat forever.

Lesson 2. Take initiative, howsoever small it may be. No task is insignificant.

Corporate jobs are competitive where no one wants to help anyone unless spoken to, requested or assigned. But on many occasions, I had taken upon myself to be of help to projects and people where no one asked my help. Like a squirrel that was picking up small stones and dropping in the sea to help Prabhu Ram during the Setu construction, I would make myself available for help. In management jargon it is called "drop in the ocean" philosophy. Do your bit what you think you could to promote the cause, it may just a drop in the ocean but worth the effort. In the process you will get immense satisfaction that you were not just a bystander but a contributor albeit a small one.

Lesson 3. Defend your leader; stick your neck out, irrespective of the consequences

Many times during my career I fall back upon the approach of Lord Ram's brother Lakshman ji. A dedicated brother, who underwent many hardships, fought for his brother and never sought any reward. As an employee our job is to help our team leader, defend his position and be of support when needed. The team leader at times cannot defend his/her own action ether due to respect system or hesitation. Lakshman Parasuram samvad is another great episode where Lakshman ji defends his brother knowing fully well that he has the top cover in the form his elder brother Lord Ram.

Lesson 4. Prepare well and aim for big results

Many times my work has taken me to meet great people. While these meetings would take place for small inconsequential work which me and my team would any way preform and get paid. However in all such occasions I was reminded of the Kevat (Ferryman) episode as to how he mesmerized Prabhu by his witty talk and extracted much larger blessings. Most leaders are in a position to grant favours and are also interested in granting these provided someone presents their case in a manner that appeals to them. So whenever there was an opportunity to meet my senior leadership, I would do lot of preparation about the person whom I am meeting. I would research their unique characteristics and authority and seek their support for my work. Preparation is a great

virtue for any manager to ensure that not only do what is expected but go beyond. For this he /she may need necessary support from the leaders.

सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे । 2.100.S1

बिहसे करुनाऐन चितइ जानकी लखन तन ॥ 2.100.S2

कृपासिंधु बोले मुसुकाई । सोइ करु जेहिं तव नाव न जाई ॥ 2.101.C1

बेगि आनु जलपाय पखारू । होत बिलंबु उतारहि पारू ॥ 2.101.C2

Lesson 5. Stick to your rightful position
As a school student I was often asked to take part on plays based on incidents of Ramcharitmanas. Once such incident is that of Ravan and Angad samvad (dialogue). In this episode, Angad puts his foot down (literally!) and does not budge an inch. This was great lesson as a manager to stand firm on a rightful position as Angad even though faced with adversary.

कपि बल देखि सकल हियँ हारे । उठा आपु कपि कें परचारे ॥ 6.35.C1

गहत चरन कह बालिकुमारा । मम पद गहें न तोर उबारा ॥ 6.35.C2

गहसि न राम चरन सठ जाई । सुनत फिरा मन अति सकुचाई ॥ 6.35.C3

भयउ तेजहत श्री सब गई । मध्य दिवस जिमि ससि सोहई ॥ 6.35.C4

Lesson 6. A leader is the invisible binding force
I also consider Prabhu Ram as manager par excellence who is able to get exceptional performance from ordinary people. It was his leadership that the mighty army of Ravan Sena was defeated by monkeys and likes. A leader is one who converts the five fingers into a powerful fist. It was the motivations and guidance of Lord Ram which enabled these lesser equipped animals to fight with army of Ravan. In other context the brother Bharat ran the affairs of Ayodhya in his absence using symbolic *khadau* (sandals). The charisma of Prabhu enabled his team which included his brother Lakshman ji as a constant companion.

Lord Ram was in the avatar of a normal human being hence he has to behave like a human and undergo the similar hardship. As a manager, I referred to many such incidents and took guidance from time to time to seek the team perform beyond their normal capabilities.

Lesson 7. Remember that end result is not always under your control
Lastly, these two lines were my constant guiding force as managers to accept the end results as it comes. No outcome can be controlled by us and we have to accept the decree of God, good or bad.

होइहि सोइ जो राम रचि राखा । को करि तर्क बढ़ावै साखा ॥ 1.52.C7

and,
सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ । 2.171.D1
हानि लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु बिधि हाथ ॥ 2.171.D2

Ram Rajya and Gandhi's Vision of India

Ram Mohan Lal Mallik

Shri Ram Mohan Mallik has technology and management background and worked in the management positions in India, Middle East and U.S.A, including Director Process Technology in Fluor Corporation Houston. He has been a long-time student of Sri Ramcharitmanas. He has published articles on topics related to Indian religion and Ramayana.

Bhagavan Ram is worshipped as Maryada Purushottam and the ideal king for thousands of years. Valmiki Ramayana and Ramcharitmanas describe Ram Rajya, the kingdom of Ram. In Ram Rajya none suffered from affliction of body, or from divine or supernatural powers. Everyone loved one another and followed their righteous duties. No one was destitute, afflicted, uneducated or characterless. All were virtuous and accomplished. Lord Ram lovingly gave a discourse to the countrymen on an austere lifestyle.

Mahatma Gandhi presented his vision of Ram Rajya not as a Hindu Raj but as the kingdom of God. In his view, Ram and Rahim are one and the same. He acknowledged one God of truth and righteousness. Ram Rajya of Gandhi's dreams ensures equal rights for prince and pauper, sovereignty of people based on moral authority, a land of dharma and realm of peace, harmony and happiness of all creatures and earth itself and recognition of a shared universal consciousness. Ram Rajya of Gandhi has been a matter of debate in India over the years.

Introduction

Lord Ram is worshipped as Maryada Purushottam and an ideal king for thousands of years. Though Lord Ram lived and ruled India long time ago, his life and values are still extolled. Ram Rajya is a system where the society is run by principles of Lord Ram for austere living, according to principles of dharma. In Ram Rajya, Dharma with its four pillars (namely truth, purity-both external and internal, compassion and charity) reigned everywhere throughout the world; no one even dreamt of sin as proclaimed by Goswami Tulsidas in his Ramacharitmanas. The governance was based on equality and ensured happiness and prosperity for all and the protection of environment, birds, animals, trees and vegetation. It is a term popularized by Mahatma Gandhi who sincerely believed in its principles. Ram Rajya has been elaborately described in all versions of Ramayana and has been a matter of political discourse more since India's independence.

Ram Rajya in Ramcharitmanas of Tulsidas

Goswami Tulsidas (c.1532-1623) has given detailed description of Ramcharitmanas. His description of Ram Rajya is more elaborate and more orthodox in terms of the social system of the ideal kingdom. He says:

दैहिक दैविक भौतिक तापा । राम राज नहिं काहुहि ब्यापा ॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती । चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती ॥
चारिउ चरन धर्म जग माहीं । पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं ॥

Under the rule of Ram there was none who suffered from affliction of any kind –whether of the body or proceeding from divine or supernatural agencies or that caused by another living being. All men loved one another: each followed one's prescribed duty, conformably to the precepts of the Vedas. Dharma with its four pillars (viz., truth, purity–both external and internal, compassion and charity) reigned everywhere throughout the world; no one even dreamt of committing a sin. Men and women were devoted to Lord Ram's worship and all were qualified for final beatitude. There was no premature death nor suffering of any kind; everyone was comely and sound of body. No one was destitute, afflicted or miserable; no one was stupid or devoid of auspicious marks. All were unaffectedly good, pious and virtuous; all were clever and accomplished–both men and women. Everyone recognized the merits of others and was learned and wise; nay, everyone acknowledged the services and benefits received from others and there was no guileful prudence. During Sri Rama's reign there was not a creature in this world, animate or inanimate, that was liable to any of the sufferings attributable to time, past conduct, personal temperament and character.

Trees in the forest blossomed and bore fruit throughout the year; the elephant and the lion lived together as friends. Nay, birds and beasts of every description had forgotten their natural animosities and developed friendly relations with one another. Birds sang and beasts fearlessly moved about in the woods in distinct herds, making merry all the time. The air breathed cool, soft and fragrant; bees hummed even as they moved about laden with honey. Creepers and trees dropped honey to those who asked for it; cows yielded milk to one's heart's content. The earth was ever clothed with crops; even in the Treta age the conditions of the Satyuga prevailed. Conscious of the fact that the Ruler of the earth was no other than the Universal Spirit, the mountains brought to light their mines containing jewels of every description. Every river carried in it excellent water-cool, limpid and pleasant to the taste. The oceans kept within their bounds and scattered jewels on their shores for men to gather. Ponds were all thick with lotuses and every quarter was clear and bright. The moon flooded the earth with her rays, while the sun shone just as much as was necessary. Similarly clouds poured forth showers for the mere asking so long as Ramachandra wielded the scepter.

Ram Rajya in Valmiki Ramayana

The concept of Ram Rajya (literally, the kingdom of Ram), the all-found-land, or the land of heart's desire, is first projected at the end of Book 6 (Yuddha Kanda, Book of War Canto 128 – verse 99-106)) of the Valmiki Ramayana. Valmiki beautifully describes:

सर्वं मुदितमेवासीत्सर्वो धर्मपरोअभवत् ।
राममेवानुपश्यन्तो नाभ्यहिन्सन्परस्परम् ॥

Every creature felt pleased. Everyone was intent on virtue. Turning their eyes towards Ram alone, creatures did not kill one another.

The whole description runs as follows:

While Ram was ruling the kingdom, there were no widows to lament, nor any danger from wild animals, nor any fear born of diseases. 99

The world was bereft of thieves and robberies. No one felt worthless nor did old people perform obsequies concerning youngsters. 100

Every creature was pleased. Everyone was intent on virtue. Turning their eyes towards Rāma alone, creatures did not kill one another. 101

While Ram was ruling the kingdom, people survived for thousands of years, with thousands of their progeny, all free of illness and grief. 102

While Ram ruled the kingdom, the talks of the people centered round Rama, Ram and Rama. The world became Rama's world. 103

Trees were bearing flowers and fruits regularly, without any injury by pests and insects. The clouds were raining in time and the wind was delightful to touch. 104

All Brahmins (the priest-class), Kshatriyas (the warrior-class), Vaisyas (the class of merchants and agriculturists), and Sudras (the servant-class)] were performing their own duties, satisfied with their own work and bereft of any greed. While Ram was ruling, the people were intent on virtue and lived without telling lies. 105

All the people were endowed with excellent characteristics. All were engaged in virtue. Ram was engaged in the kingship thus for one thousand years. 106

Mahatma Gandhi's vision of Ram Rajya

Mahatma Gandhi envisioned the ideal form of governance as Ram Rajya. By Ram Rajya, Gandhiji meant a form of government which involves the empowerment of people at grassroots, equality of opportunity, decentralization of administration, cooperative participation of people, and democratic self-governance. By Ram Rajya, Gandhiji implied a state where the values of justice, equality, idealism, renunciation and sacrifice

were practiced. Writing on the subject, he clarified: “My Ram is another name for Khuda or God. I want Khuda Raj, which is the same thing as the Kingdom of God on Earth.” Mahatma Gandhi mentioned Ram Rajya for the first time in 1920 (Navajivan, 03-Nov-1920). It is in the same speech where Gandhi recalls the Hindi proverb: Ram is the strength of the weak, *Nirbal ke bal Ram*. Two years later, in 1922 Gandhi for the first time comes out with the promise of Ram Rajya, characterized by the following features: “But, at the end of this struggle, we hope to establish Ram Rajya and the poor hope to get protection, women to live in safety and the starving millions to see an end of hunger. (Navajivan 15 Jan.1922)”

Writing in ‘Young India’ (September 19, 1929), Gandhiji had said: “By Ram Rajya I do not mean Hindu Raj. I mean Ram Raj, the kingdom of God. For me, Ram and Rahim are one and the same; I acknowledge no other God than the one God of Truth and righteousness. Whether Ram of my imagination ever lived on this earth, the ancient ideal of the Ramayana is undoubtedly one of true democracy in which the meanest citizen could be sure of swift justice without an elaborate and costly procedure.” In the Amrit Bazar Patrika of August 2, 1934, he said: “Ramayana of my dreams ensures equal rights to both prince and pauper.”

Ram Rajya is a system where the society is run by principles of Lord Rama. He talks about some of the key features of this Ram Rajya:

It is a democratic system where the ruler rules with the pleasure of people.

There are equal rights for everyone.

Violence cannot be the means to achieve justice.

The justice is swift, accessible even by the poorest and at the lowest possible cost.

The rules are based on moral principles and the stress is on moral authority than realpolitik.

Government should uphold truth in its own actions and also expect the same from others.

Army doesn’t have a major role to play in governance.

Respect for all religions and faiths.

To summarize this in three words - justice, respect and non-coercion.

According to him, the ideal Ram Rajya may be politically described as ‘the land of dharma and a realm of peace, harmony and happiness for young and old, high and low, all creatures and the earth itself, in recognition of a shared universal consciousness.’

However, writing in the Harijan on June 1, 1947, just two months before Independence, Gandhiji lamented that "there can be no Ram Rajya in the present state of iniquitous inequalities in which a few roll in riches and the masses do not get even enough to eat!" Apparently, after the initial euphoria of Independence and the unexpected violence resulting from the Partition, the focus of political leaders shifted towards building India into a secular and socialistic society, taking a leaf from the ideology of Soviet Russia. Over the following decades, overzealous secular politicians tried to reduce Ram Rajya to a metaphor; while its spiritual and religious connotations were overlooked.

Comparison between the two Ramayanas and Gandhi's vision

1. Both the Ramayanas and Gandhi's vision of Ram Rajya emphasize on happiness of all the people including the common one. They all talk of a state where the values of justice, equality, idealism, renunciation and sacrifice are practiced.

2. Tulsidas did not follow the Valmiki Ramayana in every detail. Instead, he added much of his own to show what he expected from an ideal, happy life.

3. Ramcharitmanas description refers to both men and women. The latter is never separately mentioned in the Valmiki Ramayana passage.

4. Tulsidas brings in the Vedas which is not mentioned or even hinted at in the Valmiki Ramayana passage concerning Ramrajya. Tulsidas, a learned man, brought in the Veda in order to emphasize the sanctity of the varna system as it is supported by the Veda itself. The position of the Veda, which only the first three varnas were eligible to study, was above all man-made laws and hence more imposing than any other authority.

5. Mahatma Gandhi also denounced the Vedic System of discrimination on the basis of varna and caste.

6. In all probability, Tulsidas was trying to improve upon Valmiki by injecting more piety in the description of the ideal kingdom than was shown by Valmiki. Mahatma Gandhi's vision had more compassion for the downtrodden and neglected people of lower caste. The form of government will involve empowerment of people at the grassroots level.

7. Both Ramayanas mention about the trees bearing fruits and flowers in the forest and environment. Mahatma Gandhi's vision also supports this. He also gave preference to village-based economy.

Mahatma Gandhi's vision of Ram Rajya in Independent India

Mahatma Gandhi's vision of Ram Rajya has remained under discussion all the time but because of politics the idea and concept of Ram Rajya got corrupted. Even the late Rajiv Gandhi (former Prime Minister of India)

inaugurated the Congress party's 1989 election campaign from the vicinity of Ayodhya with a promise to usher in Ram Rajya. Dr. M Veerappa Moily who is also an eminent poet, writer, and thinker was awarded the Bharatiya Jnanpith's prestigious 21st Moortidevi Award for his outstanding five-volume magnum opus 'Shri Ramayana Mahanveshanam.' According to Mr. Moily, what present day India has to learn from the Ramayana is to build a nation out of many voices, many cultures and many peoples. By using the Ram Rajya slogan, Gandhiji implied an ideal Rajya (without being communal) where values of justice, equality, idealism, renunciation and sacrifice are practiced. Present Government of India has included the ideals of Mahatma Gandhi on Ram Rajya in the action plan. For example, construction of toilets in every house, health services for poor, and numerous other projects especially Swachh Bharat, Clean India movement etc. in lines with Gandhi's vision. Ram Rajya, which was Mahatma Gandhi's dream, remains the objective for all Indian people to be fulfilled soon.

Concluding Remarks

The Ram Rajya as the model form of government has been the ideal for the Indian people perhaps ever since the time of Bhagwan Ram. However, it is understood that exact details will vary based on the actual situation prevailing in the state. Hopefully, the government will work to achieve the goals of Ram Rajya, the ideal which comes basically from the famous Vedic declaration.

References

1. Ramacharitmanas of Tulsidas-Gita Press Gorakhpur

2. Valmiki Ramayana- Parimal Publications edition Delhi

3. Ramarajya in Valmiki, Tulsidas and Krittibas: A Comparative Study-Ramkrishna Bhattacharya

4. Mahatma Gandhi's Quotes- Various collections- reference noted in the text

Rāmakathā and Concept of Rāmarājya

Vijaya Sati

Dr. Vijaya Sati holds the post-graduate and PhD degree from Delhi University. She has taught Hindi in a Delhi University College for 44 years. She was also a visiting Professor of Hindi in ELTE University, Budapest, Hungary during 2011-2013. She joined as Professor of Hindi in Hankuk University of Foreign Studies, Seoul, South Korea in 2014-2015. She has presented several papers in conferences in India and abroad. Dr Sati has published two books of literary criticism, as well as several articles, book reviews, memoirs and poems.

Rāmkathā has continued to remain relevant across time. If Rāma for us is a combination of values then Rāmrājya is the establishment of these values as our governing principles. This concept of Rāmrājya was revived by Mahātmā Gādhī after India became independent. Current Indian Prime Minister Narendra Modī has also stated the need to establish Rāmrājya in the country. A better understanding of Rāmkathā and the concept of Rāmarājya offers Indians the possibility of enhancing national identity while also significantly improving the society we live in.

In this article, I want to explore Rāmkathā and the concept of Rāmrājya in Indian society in the past as well as present. The primary text on which my article is based are: the epic Rāmāyaṇa written by Vālmīki and Rāmcarit mānas written by Tulsīdāsa.

The story of Rāma or Rāmakathā has often been a creative inspiration and challenge for Indian authors and artists. Many authors have commented on the Rāmkathā, both in the years gone by as well as in more recent times. This story is retold in various forms in Indian literature – including poetry, prose and drama. There are many versions of the Rāmkathā and it has been interpreted in many ways.

This story is retold in various forms in Indian literature including poetry, prose and drama. About the vast readership of Rāmkathā outside India, I would like to quote A.K. Rāmānujan who says: “When we go outside India to Southeast Asia, we meet with a variety of tellings of the Rāma story in Tibet, Thailand, Burma, Laos, Cambodia, Malaysia, Java, and Indonesia.”

There are many versions of the Rāmkathā in India and it has been interpreted in many ways. One version of this story was written by Valmiki in Sanskrit as the epic Rāmāyaṇa. Another famous version of

the story, the work of poet Tulsīdāsa called Rāmcarit mānas was written in common man's language, a dialect called Avadhī.

Both Vālmīki and Tulsīdāsa wrote the story of Rāma in the form of an epic but subsequently Rāmkathā also turned into a drama which is staged every year for a fortnight or longer period in India during Daśharā festival. The impact of this story is so deep in Indian life that people in many parts of India greet each other with 'Rām Rām' or 'Jai Shri Rām' (praising Rāma as a form of greeting). Kuṇwar Nārāyan, a prominent Hindī poet once observed: "If you go to Ayodhyā or Vrindāvan or Vārāṇasī or for that matter any other city of India, you will realize that Rāma or Krisṇa (another Hindu deity) are still very much there. It is interesting to note here that the integration of Rāma and Krisṇa into the daily lives of several Indians is fairly unique."

The legend or the myth of Rāma

Rāma was the eldest son of the king of Ayodhyā, Daśratha. In Hindu mythology Rāma is also considered an incarnation of Lord Viṣnu. He was on Earth to show the right path to human beings and to destroy evils from the planet. Rāma is mostly portrayed as an ideal king, an ideal son, brother and husband. When King Daśratha wanted Rāma to succeed him as the king, his second wife Kaikayī asked for Rāma's exile for fourteen years because she wanted her son to be the king. King Daśratha had been cursed by the parents of a dutiful son (Śravaṇa Kumār) that he will die grieving for his son and this curse was realized after King Daśratha was forced to send Rāma in exile and he himself died remembering Rāma.

Beyond the exile and the pain of his father, Rāma's life was full of struggles. In exile his wife Sītā was taken away forcibly by Rāvaṇa, the demon king of Lānkā. As result, Rāma had to fight a battle to get Sītā back. Coming back to Ayodhyā after 14 years, when people in Ayodhyā talk negatively about his wife, Rāma decided to leave Sītā despite the deep sorrow that the separation causes him. He was not concerned with his own happiness but wanted to see everyone else happy. Thus Rāma became a symbol of tolerance. His struggles conveyed a message in the past and still continue to convey a message to us today. Rāma was a fighter - at least that is how he is depicted by the poets. Even if his struggles are imaginary, still it is very clear that the poets want kings to be like Rāma – a person who fights to protect his ideals, to save the helpless and who is sad if he is unable to live up to his ideals. The welfare of everyone in the society is most important for him. Several citizens of India would like to see similar qualities in their ideal government today.

The greatness of Rāma lies in his samanvaya bhāva - the willingness to integrate seemingly disparate things, a concept that needs to be embraced by every Indian citizen today. One can also consider Rāma's character as

an ideal for the total human development needed in the society. There are several episodes in the Rāmkathā where we see the kind and respectful manner in which he treated all people who came in contact with him – whether this was a poor boatman who takes him across the river Sarayū, or a widowed old woman Śabarī who wanted to feed Rāma with the sweetest of berries and so she herself tasted each berry before giving it to Rāma. Rāma was equally respectful towards his stepmother who sent him in exile.

One can look upon Rāma as a symbol of dedication needed by the Indian society to solve various conflicts in the present time. Across all situations in life, Rāma is very composed, he is neither very happy nor extremely sad. This balanced attitude needs to be more embraced by the modern society. This way Rāmkathā continues to remain relevant across time. Its persistence in general consciousness has proved that some human values are always relevant.

Rāma stands for human values

The character of Rāma is multi-dimensional. Rāma not only knows his rights but also his duties. When his heart is full of sorrow, he fights his tears. In today's time when people feel defeated in life every now and then, the story of Rāma gives us a message that life is a struggle and everyone has to be ready to face it. Rāma gives a new meaning to the very famous Aitreya Brāhmaṇ (7.15) mantra - Caraivetī which means - keep moving up, keep moving on! Rāmakathā gives us a message that true happiness comes within hence there is no need to seek it outside. Is this not what we need to understand today?

In Rāmkathā, the basic human instincts are touched in such a way that the story does not appear outdated. Rāma was in the past but he remains a symbol for our future. This is the reason why writers often have given contemporary touches to this old story. This is the story which was told from generation to generation and still continues to be relevant. Rāmakathā touches upon not only Rāma's strengths but also his weaknesses. He weeps like any common man for Sītā and Lakṣamaṇa. Still he inspires us to be strong. His acts inform us that we have to preserve the good and eliminate the evil. As long as this world remains the same – full of negative emotions - we need to have a Rāma. Rama is the symbolic presence of all that is good in our inner self. One has to look within, one has to know oneself.

Concept of Ramrajya (the rule of Rama)

Another dimension of Rāmkathā is the concept of Rāmrājya (The rule of Rama). Rāma for us is a combination of values and Rāmrājya is the establishment of these values as our governing principles.

The concept of Rāmrājya was revived by Mahātmā Gāndhī after India became independent. The India of Gāndhī's dream was where Rāmrājya is established. Rāmrājya is established when one wants to develop human goodness in one's own self and when the poorest of poor get justice. Gāndhījī said: "Whether Rāma of my imagination ever lived or not on this earth, the ancient ideal of Rāmarājya is undoubtedly one of true democracy in which the meanest citizen could be sure of swift justice without an elaborate and costly procedure." For him the first requisite for Rāmrājya was self-retrospection. He wrote "When we magnify our own faults a thousand fold and shut our eyes to the faults of our neighbors - that is the only way to real progress".

In today's world Rāmrājya has a symbolic value. Rāma represents positive feelings and Rāvaṇa represents negativity. This could be visualized as the need for each person to win over the Rāvaṇa residing inside us and the need to awaken the Rāma inside us. The Rāvaṇa in Rāmkathā has ten heads and we can see that there are more than ten Rāvaṇas in the modern-day world – the Rāvaṇa of selfishness, ego, violence, war, hatred and so on. We have to win over these negative elements and awaken the positivity which has fallen asleep inside human beings.

The concept of Rāmrājya maintains its relevance till today for a country like India. In a time when communal violence and caste wars are still widespread in the country, the Rāmkathā offers a solution alongside a humanitarian vision of the future.

Conclusion

In Rāmkathā we see strong human characters like Rāma, Sītā, Lakṣamaṇ and Hanumān as well as weak characters like Kaikayī and Mantharā. Through these characters, Rāmkathā provides a deep message for our daily lives. Gāndhījī's dream was to bring Rāmrājya in India. The present Indian Prime Minister Narendra Modī has also stated the need to establish Rāmrājya in the country. It is possible but the way to this destination is neither easy nor clear. Still a better understanding of the story and the concept of Rāmarājya offers Indians the possibility of enhancing our national identity while also significantly improving the society we live in. There are several aspects of this discussion that need to be covered in more detail for a comprehensive understanding of this topic.

Ramayana and Conservation of Nature

Kapil Kumar Joshi

Dr Kapil Kumar Joshi is a Post graduate in Mechanical Engineering. He joined Indian Forest Service in the year 1992. He did his PhD in Climate Change Mitigation from Indian Institute of Technology, Roorkee. At present, he has been perusing prestigious Post Doctoral Fellowship at Department of Management Studies, IIT Roorkee.

Abstract

Ramayana or Ramcharitmanas is an epic which is popularly known for its exemplary societal webinar. It spreads a rainbow of duties and responsibilities, truth and untruth, good and evil, and various other human attributes. It also consist a great spiritual context in it where otherworldliness encompasses any other human activity. Concept of "होइहि सोइ जो राम रचि राखा" leads this text to the new horizons of religiousness. It consist values, ethics, morale and an ideal Indian social structure which inherently drives it towards the nature and its conservation. This paper attempts to address this fact of Ramayana in which the issues related to environment, its conservation and management are discussed at length.

Keywords: Nature, Conservation, Management, Bio-diversity, Ramayana

Introduction

Ramayana and Ramcharitmanas is the heart and soul of majority of Indian nationals. Let it be Sri Ranganatha Ramayanam, Tamil Kamba Ramayanam or Kannada Kumudendu Ramayana, the glory of this rhythmic epic is spread throughout the length and width of this country. Not only in India but in more than a dozen Asian countries like Nepal, Sri Lanka, Burma, Malaysia, Thailand, Cambodia, and Vietnam and even in China, the magnificence and fragrance of Ramayana exists everywhere with some minor plot twists and thematic adaptations. In a rough estimate as many as over 300 versions of this epic poem are available on this earth to depict the duties of relationships, and portray idea characters as a son, father, husband, wife, servant or a king.

The manifestation of the core themes of Ramayana is far broader, which sometime become beyond the scope of understanding for a normal human being. It consist mythological as well as spiritual context. It deals with terrestrial and metaphysical subjects simultaneously. On one hand Rama is a human being with greatest virtues (Purushottam) and on the

other hand Rama is an incarnation of lord Vishnu (ultimate super natural power of the universe). The adaptability and versatility of this great epic could be clearly seen even in the mallipapattu folk lures of Muslims of Kerala and Lakshadweep. There is hardly any realm of life, which remain untouched in this “Adi Kavya” (First poem) by Rishi Valmiki or The Lake of the Deeds of Rama by Goswami Tulsi Das.

An ideal, classic, Indian, societal structure with its inherent, deep rooted ethics and values are so truly and scientifically expressed in this text that it has became an incomparable, mystical, religious asset, not only for the masses but also for the elite, intellectual community of the world.

As a worldly text a common man can sing, chant, dance, meditate or perform it but as a mystical bunch of spirituality, scholars are amazed with its otherworldly and transcendental disposition, which leads Rama from the notion of a human being to the only and ultimate super power of this universe.

Truly speaking, Ramayana is not a text, it’s not an epic, it’s not a story but it’s an ultimate truth (Param Satya) of our universe which can never be explained, taught, debated or questioned.

Can someone explain how from the 24,000 verses of Ramayana, the first letter of every 1000 verses constitute the “Gayatri Mantra”? Can we teach mathematics involved in the fact that at least one out of these four letters i.e. S.T.R.M. is present in every line of the Ramcharitmanas, where these four divine letters S.T.R.M constitute Sita and Ram? There is no scope of any hypothesis based, scientifically driven logical reasoning over this text because:

हरि अनंत हरि कथा अनंता । कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता ।। 1.140.C5

So, all that is needed is to feel it, sense it and experience it as Goswami Tulsi Das did and said very rightly:

जिन्ह कें रही भावना जैसी । प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी ।। 1.241.C4

With this pious bend of mind before reading it, a reader finds an endless canvas of nature, forest, environment, plants, wild life and its conservation in Ramayana. The interaction between man and nature is prevailing throughout the epic. The very first instance which formed the source of the epic poem is the episode of Valmiki cursing a hunter who shot down a heron bird when it was in union with the female counter part.

मानिषाद परतिषठा तवंअगमःशाशवतीसमाः । रामायण बालकाण्ड, सर्ग 2, श्लोक 15

Verse burst out from the mouth of Valimiki, which became the first verse to be composed by a man. With this Brahma gave him divine meter and grammar to compose Ramayana. At that time, great importance was given to the conservation of wildlife. None was entitled to kill any animal or bird in the vicinity of a Tapovan or even in the forest unless it is absolutely necessary.

Coming to the point of conservation of nature we all know that our environment is nothing but it is simply our surrounding. This includes non living components like air, water, soil, light and land. The living components are plants, animals and human being. All living components adjust to the nature or environment in which they are naturally born and live. A change in any component let it be living or non living may cause great discomfort and affect normal life cycle process.

To add further, our earth is blessed with innumerable renewable and non renewable resources, among renewable resources are air, water and sunshine and among major non renewable resources are coal, petroleum, natural gas and minerals. It takes millions of years to form these non renewable resources. Indiscriminate utilization of these non renewable resources leads towards its scarcity and disturbances in ecological balance, thereby making life of the entire living component miserable.

Discussion

In the light of the above mentioned guiding lines, the need of conservation of natural resources arise, the need for the proper management of the natural resources arise, the need for the prevention of its exploitation, destruction and degradation arise. There is a need to keep a balance between driving benefits from natural resources and simultaneously preventing their excessive use. While defining conservation of nature it may constitute either some or all the attributes mentioned below.

Nature’s conservation is:-

1. Managing natural resources in a sustainable manner.
2. Maintaining ecological balance for supporting life.
3. Protecting different kind of species.
4. Ensuring resources available for future.

It is worth mentioning that, all these features of conservation of nature with contemporary context are very well depicted in Ramayana.

1- Managing natural resources in a sustainable manner

Sustainable management of natural recourses is nothing but it is a type of scientific management for a sustained yield over a long period. This management may have single or multiple objectives like wild life management, commercial production, climatic amelioration or even pure

conservation. Here sustainability simply means that whatever management practice is followed, it should continue for a longer period. Primarily it has nothing to do with commercial viability, financial profitability, cost-benefit ratio or any other mathematical logic as applicable in today's business industry. Today in India we are managing different type of forests with different managerial angles depending upon the objectives. Coming to the Ramcharitmanas, it provides vast and interesting information about nature in all her variety. Mainly two terms named as "Vana" and "Aranya" is mentioned in this epic. It should be noted that these two are not used synonymously. The term "Vana" is used to denote forested area, a kind of cultivated forest where man made clustering of desirable plants, trees, shrubs, herbs, climbers and flowers exist. It is planted or cultivated for a purpose. On the other hand "Aranya" is true wilderness. It is a land of uninhabited jungle full of fearless creatures. "Vana" may also be called as royal gardens. After killing Tadka, Subahu and other demons in Dandakaranya, when Rama along with Vishwamitra went to the kingdom of raja Janak, he saw a perfectly managed piece of land in the form of royal terraces in Janakpur.

लागे बिटप मनोहर नाना । बरन बरन बर बेलि बिताना ॥ 1.227.C4

There were numerous enchanting trees along with many beautiful and colored climbers where,

चातक कोकिल कीर चकोरा । कूजत बिहग नटत कल मोरा ॥ 1.227.C6

Means birds like cuckoos, parrots, and partridges are melodiously singing and peacocks are dancing. Tulsi Das further stated that,

मध्य बाग सरु सोह सुहावा । मनि सोपान बिचित्र बनावा ॥ 1.227.C7

That is, in the middle of the garden, a beautiful pond full with fresh and clean water is situated. This shows a perfect example of systematically managing a piece of land or a natural resource in the form of a Vana.

The same context of managing a natural resource is also seen in the Sunder Kand chapter of Ramayana when Hanuman enters into the royal gardens of Ravana in Lanka, i.e. Ashok Van, where Sita was kept in captivity.

बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बापीं सोहहीं ॥ 5.3.X16

There exist beautiful forests, gardens, terraces, ponds and wells in the Ashok Vatika and its nearby areas.

"Aranya" were the real, untouched, virgin and secluded areas of wilderness which were left so, because of the survival of various other

living species like wild animals, demons, beasts and brutes. When Sita was emphasizing hard to accompany Rama during exile, he told her about such areas as,

कंदर खोह नदीं नद नारे। अगम अगाध न जाहिं निहारे॥ 2.62.C7
भालु बाघ बृक केहरि नागा। करहिं नाद सुनि धीरजु भागा॥ 2.62.C8

He further said,

ब्याल कराल बिहग बन घोरा। निसिचर निकर नारि नर चोरा॥ 2.63.C3

There exist dangerous snakes, birds, wild animals and demons in the forest. They simply kill and eat the human being.

Above areas in modern forestry context may be treated as conservation reserves, wild life parks and sanctuaries and bio sphere reserves where human interferences are either nil or highly regulated. A furthers modified version from Aranya was known as "Ashram" which were situated inside the forest but were managed for the purpose of learning, meditation, ritual, worship, penance and other spiritual works. Let it be the Ashram of sage Vishwamitra or sage Valmiki near Chitrakoot or Rama's own shelter in Panchvati, all such places were entirely managed ensuring living in absolute conformity with nature.

This way we see that in Ramayana, Various types of natural resources were being managed with different managerial angels. This management was not on a short term basis but it was for a prolonged and continued period thereby ensuring sustainability to the system.

2- Maintaining ecological balance for supporting life

Ecological balance is a state of dynamic equilibrium with in a community of organisms where ecosystem diversity remains relatively stable, subject to gradual changes through natural succession. When we talk about natural resources we literally mean all living and non living wealth available on this earth. But when we also include human being as an integrated part of this wealth, the concern for ecological balance immediately pops up in our mind. It happens primarily because of his exaggerated consumerism, extreme commercialism, excessive industrialism and typical capitalism. It is only human being who is fundamentally responsible for any ecological imbalance over this earth. There is hardly a case where any floral and faunal species has ever caused disturbances in the bionomics of the Mother Earth.

Ramayana is a perfect example of a balanced ecology for integrated life support systems on this planet. People used to take only that much from nature which was really needed for their sustenance. Soil, Air, Water, Fire and Sky were highly conducive and favorable to human

living. There were hundreds of Ashramas situated deep inside the forest which were full of sages, their disciples and devotees. They all were engaged in great sacrifices and worships, but they all lived in total conformity with the nearby ecology and really honoring the Mother Nature. Going against nature was considered highly unethical and simply disastrous by them. Even Rama spent his thirteen years of exile quite comfortably and interestingly Rama's sons Lava and Kush also lived a very harmonious life with nature in the ashram of Valmiki during their childhood.

Valmiki in Aranyakand (15.11) portrays Panchvati as an ever blossoming forested plain, a tranquil area on the banks of river Godavari with rich floral contents comprising fruit yielding trees and medicinal plants. He mentioned in verse 11-2-4 that when Rama along with Sita and Lakshman moved from Chitrakoot to Panchvati, they saw varied mountain landscapes, forests, lovely rivers, ponds covered with lotuses and thronged with water birds, dapped antelopes, rutting wild buffaloes, elephants batting the trees and bears.

It clearly shows that let it be an Van, Aranya, Ashram or even the kingdom, the then basic life support system for human being was ecologically so balanced and sustained that there was hardly any scope for malnutrition, hunger, starvation, disease or infection. We also did not witness any mention of natural disaster and natural calamity like flood, drought, tsunami, avalanche, earthquake or wildfire in Ramayana. It was primarily because of the fact that there was no natural resource crunch at that time and a perfect demand supply relationship was maintained between nature and the human beings.

The true Gandhian philosophy that "Mother Earth has enough for our need but not for our greed" is really worth mentioning here that the genesis of this philosophy is certainly driven from the fundamentals of a balanced ecology as we experience in Ramayana.

3- Protecting different kind of species (Bio-diversity)

Bio-diversity includes all faunal and floral species found on this earth. Bio-diversity is the variability among living organisms from all sources, including terrestrial, marine and aquatic ecosystems and the ecological complexes of which they constitute a part. It is only bio-diversity on the earth which entirely supports the food chain starring from produced organism such as grasses or trees and ending at apex predators like tiger, bear, or whales. Modern environmental science is full with the context of bio-diversity conservation. There is an act named as bio-diversity act of 2002 at national level as well as there exist a complete protocol under the ambit of United Nations Framework Convention on Climate Change at international level to address the issues like global warming, climate

change, conservation and protection of various rare, endangered and threatened species. Estimation by International Union for Conservation of Nature says that thousands of known plant and animal species are now extinct from this planet. It is further stated that during the last few hundred years, thousands of other species have become vulnerable, rare or threatened. Reasons are quite obvious but the effect of this over a linear but complex network of links in a natural food web is certainly not going to be a comfortable and fortunate signal for our world. Ramayana is full with context of conservation and protection of various plant and animal species. Various trees, plants, animals, mountains, rivers were symbolized as god and goddess. They were not only protected but respectfully worshiped too.

After the marriage of Parvati with Lord Shiva, king Himvan, the father of Parvati, sent back all guest like mountains, rivers and ponds most respectfully and politely.

तुरत भवन आए गिरिराई । सकल सैल सर लिए बोलाई ॥ 1.103.C1
आदर दान बिनय बहुमाना । सब कर बिदा कीन्ह हिमवाना ॥ 1.103.C2

These were various plants, and bird and animal species which were well protected and conserved in the royal gardens or Vana of king Janak at Janakpur. When Rama was wandering in this Vana, Sita was trying to look at Rama in pretence of seeing animal like deers and birds rearing in the royal garden.

देखन मिस मृग बिहग तरु फिरइ बहोरि बहोरि ॥ 1.234.D1

The concern for safe guarding the mother nature was so prominent in Ramayana that when Rama was about to lift and string the divine bow of Lord Shiva in Sita's marriage ceremony, Lakshman warned all the legends, the Varah, the Kachap and the Sheshnag to hold the earth tightly so that it should not tremble which otherwise would cause immense and enormous loss to its inhabitants

दिसिकुंजरहु कमठ अहि कोला । धरहु धरनि धरि धीर न डोला ॥ 1.260.C1

When Ravana abducted Sita, Rama ingloriously searched Sita all around the Panchvati and came across innumerous animals, birds, butterflies, and insects with whom he interacted and asked about Sita

हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी । तुम्ह देखी सीता मृगनैनी ॥ 3.30.C9

The floral diversity in Ramayana is quite evident from the episode of Hanuman bringing Sanjeevanee Booti from the Himalaya for the rescue of the Lakshman who was badly hurt by Meghnad. Occurrence of such a

divine and highly potential medicinal herb which is also narrated as "glowing herb" is certainly a result of adequate conservancy of important floral species during that time, which otherwise would have disappeared from the area.

In an example of protection of marine species, Rama accepts the sea-god's apology and orders, building of a causeway from the shallow side of the sea so that the marine eco-system is least disturbed. Conservation, preservation and safeguarding the plant and animal species is an integral part of Ramayana as they all symbolizes great ethical values all through the epic.

Sita was repeatedly being requested by her husband and mother in laws to avoid going to fourteen years of exile. She was told about the various suffering of the forest but she quite brilliantly characterized Van Devi and Van devta as her father and mother in law, who would take care of her while accompanying Rama during the exile.

बनदेबीं बनदेव उदारा। करिहहिं सासु ससुर सम सारा॥ 2.66.C1

She added that wild vegetative eatables will be in no way lesser than the pious nectar and from comfort point of view, the mountain shall be like hundreds of palaces of Ayodhya.

कंद मूल फल अमिअ अहारू। अवध सौध सत सरिस पहारू॥ 2.66.C3

It shows that there remains no argument to disagree with the fact that protection and conservation of various floral and faunal species during Ramayana was of apex order and worth copying today.

4- Ensuring resources available for future:

Preservation of the natural environment is essential for maintaining sustainability on a longer run. It includes water, energy, air, climate, land, forest and ecosystem. It is interesting to note that though natural resources are generated without the actions of human being but they are degraded or depleted only through his activities. It takes millions of years to produce various natural resources like minerals, coal, fossil fuels but it gets vanished in decades because of its exorbitant extraction. These resources if once faded from an area are impossible to replenish. Unwarranted extraction has led to various integrated issues like water contamination, air pollution, sinking seashore, disappearing forest, ozone depletion, desertification and glacier melting.

The genesis of all such problems lies in the fact that today we have become endless consumer of almost everything available on this Earth. We our self do not know that how much and in what number we need a thing. It has become an endless race of consumerism where every

individual is feeling proud of being a larger consumer as compared to other. High consumption levels have become synonyms to the development and indicate a more civilized and elite societal setup. It has become a common notion that country is much more developed because it's per capital emissions level or consumption level is much higher than the other country. Consumerism has become highly unregulated and only because of this attitude our coming generations are most likely to suffer with a great natural resource crunch in future.

Ramayana most appropriately touches the feel of sustainable production as well as sustainable consumption. It shows concept of basic consumerism governed by the fundamentals of living with bare sustenance means.

Rama along with Sita and Lakshman spent fourteen years in exile after losing his all royal softness, his brother Bharat also followed the same path in his absence, Lava and Kush, the royal progeny happily lived in the Ashram of Valmiki during their childhood, Sita, an epitome of duty and sacrifice spent almost her entire life either with Rama in exile or with rishi Valmiki in his Ashram, Lakshman voluntarily choose to be a part of Rama during his exile, even all the subjects living in Ayodhya and Janakpur lived just a basic life for fourteen years during Rama's exile. These examples clearly reflect that during Ramayana there was no room for consumerism. Subjects as well as royals were habitual of living an eco friendly life in conformity with nature. Kumbhakaran though a huge consumer, but on a year's average his consumption level was in no way much higher than any other demon, moreover the body size is also important in determining the amount consumed.

When Rama killed Ravana and won over Lanka, he could have taken away all the jewels, gems, stones, ornaments, treasures and innumerous other non renewable resources with him but he did not do so instead of the humble request made by Vibhishan. Vibhishan filled Pushpak Viman with precious gems and jewels but Rama ordered him to shower it on his subjects, which Vibhishan did cheerfully.

चढ़ि बिमान सुनु सखा बिभीषन । गगन जाइ बरषहु पट भूषन ॥ 6.117.C5
नभ पर जाइ बिभीषन तबही । बरषि दिए मनि अंबर सबही ॥ 6.117.C6

The above events clearly show that en masse, there was a great concern for ensuring resource availability for the future generations. Let it be amongst the sages, the subjects or the kings.

Conclusion

Above discussions clearly shows that Ramayana is full with example of nature and its conservation, but one has to view it from a clear lens of

wisdom, dedication and submission. Such traits could only be achieved, when human being follows august and auspicious gatherings

बिनु सतसंग बिबेक न होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई॥ 1.3.C7
सतसंगत मुद मंगल मूला। सोइ फल सिधि सब साधन फूला॥ 1.3.C8

With the touch of solemn conferences, workshops, discussions and even simply by mare participation, one can see the vast panorama of Ramayana in every part of his life and relationship. One needs to be physically and mentally present at such occasions. Presence in such gatherings is capable of bringing a glorious change in a human being.

सठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परस कुधात सुहाई॥ 1.3.C9

Acknowledgements

Most humbly, I place my highest regards for Dr. Om Gupta, who gave me this opportunity to participate in an International Conference on Ramayana. I am also thankful to Dr Vinay Sharma and Dr Rajat Agarwal (professors, Department of Management Studies, Indian Institute of Technology, Roorkee, Uttarakhand, India) who told me about this conference and gave me intuition to participate in this conference. Finally, I must admit:

कबि न होउँ नहिं चतुर कहावउँ। मति अनुरूप राम गुन गावउँ॥ 1.12.C9
कहँ रघुपति के चरित अपारा। कहँ मति मोरि निरत संसारा॥ 1.12.C10

Glory of Lord Hanuman

Ram Mohan Lal Mallik

Shri Ram Mohan Mallik has technology and management background and worked in the management positions in India, Middle East and U.S.A, including Director Process Technology in Fluor Corporation Houston. He has been a long time student of Sri Ramcharitmanas. He has published articles on topics related to Indian religion and Ramayana.

Lord Hanuman is one of the most popular deities throughout India and across the globe among Indian communities. Hanuman is also uniformly described as a man of great learning and wisdom. But he is being depicted by few as a monkey with a tail. All Ramayanas, however, agree on one point, his great strength and wisdom, his glorious achievements. And most important his closeness with Lord Ram made him one of the most fascinating and popular Hindu deities. This paper presents a brief narration and discussion on the life and adventurous glory of Lord Hanuman and his advent to expanded divinity.

Introduction

Lord Hanuman, the devotee of Lord Ram summed up his philosophy in these words: "From the body perspective, I am your servant, from that of the soul, a portion of you, from that of essential reality, I am but yourself, and this is my firm conviction."- Valmiki Ramayana quoted in Hanuman's Tale - Reference 4 page 164.

His multifaceted forms with the Himalayan peak in one hand or kneeling joint hands in front of Ram Durbar or his hand blessing the devotees granting their wishes and warding off all fears are well known and in our hearts. Lord Hanuman is present in all Ram Temples with Lord Ram, Lakshman and Sita. He is also worshipped as an independent deity in large number of Hanuman Temples all over the world. Some of them are very famous for example Hanuman Mandir in New Delhi, Sankata Mochan in Varanasi and Mahabir Sthana in Patna. One Hanuman Temple is located near Dallas Texas. This is called Karya Siddhi Hanuman. Hanuman temples in their simple form are spread all over the countryside in India and big crowds can be seen in front of them on every Tuesday.

A less-common form of Hanuman is the Panchmukhi—that which has five heads or faces. These are the monkey (Vanar), the horse (Hayagriv), the lion (Narasimh), the boar (Varah) and the eagle (Garuda). Some of these are incarnations of Vishnu. There is also an eleven headed Hanuman (ekadash-mukhi Hanuman). These two forms are the result of the popularity of the tantric cults during the medieval era. The five-headed

Hanuman may have as many pairs of arms, or just one pair. The eleven-headed Hanuman normally has ten pairs of arms.

The recitation of Lord Hanuman's glory takes away all fears and anxieties warding off all evils and undoubtedly grants all wishes. Hanuman is considered as the gate keeper of Ram Bhakti, devotion to Lord Ram. Goswami Tulsidas says in Hanuman Chalisa,

संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।। ३६ ।।

sankata katai mitai saba pīrā, jo sumirai hanumata balabīrā. 36

Whosoever remembers the brave and mighty Hanuman gets free of all adversities and gets relief from all pains.

Lord Hanuman's ever ready and can do attitude and determination is an example for everyone to follow in the daily life.

Myth of Hanuman's Vanar (Monkey) Origin

Hanuman is called Vanar presumed to mean a monkey but it actually refers to a group of people living in forests (van-forest, nara-human). Valmiki Ramayana presents them as humans with reference to their speech, clothing, habitations, funerals, consecrations etc. It also describes their monkey-like characteristics such as their leaping, hair, fur and a tail.

Earlier Ramkathas typically mention Hanuman as wise and learned person. Lord Ram himself describes a number of qualifications of Hanuman such as:

1. Knower of all Vedas and scriptures
2. Scholar in nine schools of grammars
3. Possessing great ability in faultless speech and sentence making

These certainly establish the human attributes of Lord Hanuman.

According to Jain texts, Hanuman is a human of vanara clan whose emblem is the monkey. Many scholars have argued in favor of people with perhaps monkey banner.

Scholars also infer from Ravan's reference to the kapi's tail as ornament that it is long appendage in dress worn by men of the Savara tribe. Since the women did not wear this dress Valmiki does not describe them as "vanaras" monkeys. The common depiction of Lord Hanuman is as a 'monkey' with a long tail based on the later belief. According to Philip Lutgendorf, devotionalism to Hanuman and his theological significance emerged long after the composition of the Ramayana, in the 2nd millennium CE. His prominence as a vanar grew after the arrival of Islamic rule in the Indian subcontinent.

Glorious Accomplishments of Lord Hanuman

Lord Hanuman is an icon of (1) dedication to work, (2) selfless service for the master, (3) great sense of responsibility, (4) use of knowledge, intelligence and innovative techniques to accomplish the task, (5) great human relations skill, and (6) willingness to take up any assignment. Numerous tales of Hanuman have been extensively described in various Ramayanas and other works including the Hanuman Chalisa by Tulsidas. These are well known and some are briefly mentioned below.

Meeting with Lord Ram in the forest

Hanuman meets Lord Ram during Ram's 14-year exile. With his brother Lakshman, Ram is searching for his wife Sita who had been abducted by Ravan. Their search brings them to the vicinity of the mountain Rishyamukha, where Sugriv, along with his followers and friends, are in hiding from his elder brother Bali. Hanuman facilitates friendship between Lord Ram and Sugriv. Lord Ram kills Bali and gives his kingdom to Sugriv.

Flight to Lanka

Hanuman exhibits his great strength and ability, crosses the ocean and reaches Lanka. There he meets Vibhishan and befriends him and facilitates his surrender to Lord Ram. He meets Sita to give her Ram’s message. He fights with Rakhasas and is captured. He burns Lanka and returns to Ram.

Bringing Sanjeevani Herb

When Lakshman is severely wounded during the battle against Meghanada, Hanuman fetches the Sanjivani, a powerful life-restoring herb, from Dronagiri mountain in the Himalayas.

Rescue of Rama and Lakshman from Ahiravan

In another incident during the war, Ram and Lakshman are captured by the demon Ahiravan, who held them captive in Patal. Hanuman kills Ahiravan and rescues Ram and Lakshman.

Disruption of Ravan’s sacrifice “Havan for victory”

On the very eve of his death desperate Ravana attempts one final measure to secure victory by a Tantric ritual for invoking Chamunda by 1000 recitations of a long poem in her honor. Hanuman taking the disguise of a Brahman tricks the Brahmanas to substitute a syllable in the havan mantra.

‘Jaya twanm devi Chamunde jaya bhutarti harini’

Victory to thee, Goddess Chamunda, remover of the pain of all beings.
After alteration of one letter it becomes
‘Jaya twanm devi Chamunde jaya bhutarti karini’

Victory to thee, Goddess Chamunda, cause of the pain of all beings.

Hanuman's Rise to Divinity

Hanuman had a modest birth and upbringing. His father Keshari was the ruler or local Chief of a forest kingdom who could not produce himself a child. As per the prevalent religious and social custom in the ancient time Keshari's relative Shankar was selected to produce a child from Keshari's wife Anjana to continue the progeny. As Anjana refused any physical contact with Shankar, the seed was collected in a tube and she was impregnated by artificial technique of blowing with air.

Until he met Lord Ram, his life and work were quite unknown. Because of his devotion and service to Ram, he earned Ram's affection and trust. He became Ram's top lieutenant and quickly established his reputation in his team and later rise to divinity.

Hanuman was initiated to the divine knowledge by mother Sita and Lord Ram as elaborated in Adhyatma Ramayana. One day Lord Ram tells Sita that Hanuman is now a perfect spiritual aspirant worthy to learn the truth about their real nature. Sita delivers a discourse to Hanuman. Next day Hanuman presents himself in court to reveal his full grasp of the mysteries that were imparted to him. Ram and Sita are pleased and give him their blessing.

One day Ram and Sita get into an argument over who out of two receives greater devotion from Hanuman. They ask him but he says just Sita Ram. In order to test, Sita faints and asks for water. Ram also faints from heat and asks for fan. The cleaver form changing Hanuman expands his arms fetching water with one hand and fan with another.

Finally, Hanuman becomes the "divine door keeper'' of Ram and a popular deity in his own right. Tulsidas says in Hanuman Chalisa:

You are the doorkeeper and protector of the door to Rama's court. Without your command, nobody can enter the abode of Rama.

राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥ २१ ॥

rāma duāre tuma rakhavāre, hota na āgyā binu paisāre. 21

Some Lessons from Hanuman

The most important lessons for all us accomplishing our tasks and achieving success are his (1) Work ethics and sense of responsibility (2) Use of knowledge and human relation skills and (3) Use of innovative techniques, and contingency management. First example that comes to our mind is the etiquette displayed by Hanuman going to Lanka in search of Mata Sita. The ocean king persuades him to take some rest on the way. Hanuman declines saying that without finishing the task assigned by Shri Ram, there can be no rest for him. He declares.

राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ विश्राम ॥ Manas, 5.1.D2

The second example is the episode of disruption of Ravan's havana. Hanuman impresses and endears the team of Brahmins with his knowledge and friendly nature. He convinces them to replace a syllable which brings the opposite result.

The third example is the killing of Ahiravana using innovative techniques and contingency management. Hanuman finds himself into a critical situation in Patal. To kill Ahiravana he had to simultaneously extinguish five lamps situated in different directions. Hanuman assumes his Panchamukhi form to blow the lamps, kill Ahiravana and free Ram and Lakshman.

Concluding Remarks

Hanuman is worshiped as a symbol of dedication, perseverance, strength and devotion. His exploits in the service of Lord Ram is fascinating and makes him the most popular God for the masses. Tulsidas says in Hanuman Chalisa,

और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्व सुख करई॥ ३५ ॥

aura devatā chitta na dharaī।hanumata sei sarba sukha karaī॥ 35

Even one who does not contemplate on any other Devatas in their mind and only serves Hanuman, achieves all favourable bliss in this world and the next

After his long reign on earth, Lord Ram prepares to depart for his celestial realm of Saket taking along all who are devoted to him. Before setting out on his final journey, he summons Hanuman and gives him special instructions. Hanuman is not to accompany him but is to remain on the earth to propagate Ram Katha and devotion of Lord Ram.

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।
बाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥

(Valmiki Ramayana Dhyana Sloka –Reference 7; page 144)

yatra yatra raghunāthakīrtanaṃ tatra tatra kṛta mastakāñjalim ।
bāṣpavāriparipūrṇalocanaṃ mārutiṃ namata rākṣasāntakam ॥

Bow down to Hanuman, who is the slayer of demons, and who is present with head bowed and eyes full of flowing tears wherever the fame of Ram is sung.

References

1. Ramacharitmanas
2. Valmiki Ramayana

3. Hanuman Chalisa of Tulsidas
4. Hanuman’s Tale-Philip Lutgendorf
5. Book of Hanuman- Parvez Dewan
6. Hanumān in the Rāmāyaṇa of Vālmīki and the Rāmacaritamānasa of Tulasī Dāsa- Catherine Ludvík
7. Hanumat vibhuti- page 144

Father's Order verses Brother's Desire

Atul Kumar Gupta

Atul was born in Jaipur and studied in Jaipur, Delhi and travelled the globe before settling down in Houston. He is devoted in Gaudiya Vaishnavism by performing actions that promote religiosity, spirituality. He has been deeply impacted by Indian scriptures explained by his spiritual master 'Srila Narayan Goswami Maharaj.'

It is said by many spiritual scholars that during our lifetime, we should try to read the divine Indian scripture Sri Ramcharitmanas (or The Ramayana) several times in our lifetime. While many theorize that this statement is suggested from the standpoint of merely memorizing many Sanskrit or Hindi shlokas but it actually has a much deeper benefit. At every stage of life, a person's understanding of the world is shaped by the memory of past events and the mental ability to handle the current challenges. The Indian scripture Sri Ramcharitmanas shares the moral values, inspirational activities and interesting facts about Sri Ram's character. Every single time the scripture is read with passion, devotion and humility, something new emerges in the reader's heart and mind.

One such pastime in the scripture describes the detailed events while Sri Ram is in exile in the forest of Chitrakuta and how his beloved brother leaves the comfort of his palatial hometown of Awadh to meet Sri Ram. The scene is set when Sri Ram was painfully ordered by his beloved Father to exile, when his younger brother Bharat was visiting his maternal grandfather in the city of Kakeya (his mother Kaikeyi's hometown). As soon as Sri Ram's father king Dashrath left this world becoming free from the torment of separation from his beloved (eldest) son, then both the travelling younger brothers were summoned back to Awadh. Feeling that something grave might have happened, Bharat along with his younger brother Shatrughna immediately left their mother's hometown and took the fastest possible route to return to hometown in this time of suspense. Soon, after crossing all barricades and guardsmen near the vicinity, with a very anxious heart both brothers finally reached their mother Kaikeyi's personal quarters. Seeing their mother in a somber mood, they felt more anxious and soon began asking why they have been summoned suddenly from their trip. They finally heard from her that their worst fear had come true - while they were away; their beloved father had indeed passed away! Hearing this, the land beneath both brothers' feet virtually vanished into thin air and their hearts sank into their already shaken up and empty stomach. As they started to console themselves from this grave situation, only for fraction

of time, they began hearing from their mother what is planned for Bharat's coronation as sworn in Prince of Awadh and the banishment of Sri Ram, mother Sita and brother Laxman to the Chitrakuta forest. This completely shook their core and they were not able to understand how such an abominable idea and what adverse circumstances could have led to such atrocious acts of adharma in the family. Once Bharat found that it was Manthara (the maid servant of his mother) who sow the seed of self-entitlement and self-pleasure in their mother's mind overpowering the humbleness, splendor and leadership of Sri Ram, both brothers became incessantly angry at their mother. They decided to leave for Chitrakuta forest at once with no time to spare. He declined to be the king and decided to go to the forest and persuade Sri Ram to return to Awadh and become the rightful king. Guru Vasishtha (a great sage, religious leader of Sri Ram's family-tree and royal preceptor), the three mothers (Kaushalya, Kaikeyi, and Sumitra), ministers, learned Brahmins, army men and villagers of Awadh, all accompanied him on this journey.

For Ram's coronation, assuming he will convince Sri Ram to return, he collected the sacred waters by visiting all the holy places in the Indian subcontinent in mere five days while remembering and listening to the glories of Sri Vishnu and Sri Mahadeva (Shiva). As per the Indian scriptures, it is believed that living beings are governed by presiding demi-God or predominating deity and similarly, there was a deity in control of the Chitrakuta forest where Bharat goes to meet his beloved elder brother Sri Ram. Before he embarks on the discussion, he prays to the presiding deity of the forest. He has arrived here with a lot of senior members of public, elderly men & women, farmers, priestly and kingly men of honor including King Janak (father to Sita, he was revered for his internal potency of being detached from this material world). After admiring at the humble nature, devotion and admirable character of Bharat, the presiding deity of the forest gladly gave the blessings. On the sixth day, he eagerly took bath in the early morning hours and thereafter he saw that various members of public including Brahmans (priestly class) and King Janak had gathered to begin the conversation with Sri Ram to return to their palatial city by ending the exile in the forest. Sri Ram is mentally aware about the discomfort and troubles that everyone in the procession had faced till now but he is hesitant to say that he feels today is the best day to respectfully request everyone to go back to Awadh. Sri Ram looked towards Guru Vasishtha, King Janak, brother Bharat and all members of public but immediately became hesitant to speak and tried to hide his face by staring downwards towards the green grass. Everyone revered Sri Ram by thinking that there is not a single leader like him with such humility. After seeing the demeanor of Sri Ram, Bharat finally got up slowly with caution and patience, he offered his obeisance (i.e. bowing down to Sri Ram's lotus feet and joining both palms) and began saying "You have always kept my desires close to your

heart; Due to my desire to meet you here in this forest, everyone who came with me has suffered a lot and decidedly you have suffered a lot. Now my dear brother, give me permission that I can somehow head back to Awadh (for 14 years of your exile) and that I can somehow survive there without your presence". He adds, "Oh merciful Sri Ram, with whatever method or means this servant of yours is able to serve your lotus feet again, Oh dear son of Kausalya, just for this painful period give me the knowledge that I need; Oh dear lord, without your presence in Awadh, all members of public, leaders and population are yearning for your pure love and eternally enjoyable association. If we compare this position of separation, we feel that it is better to burn in the circle of continuous life and death and it is a waste to even yearn for moksha (eternal salvation); Oh keeper of all souls, you know everything, you can read our emotions from our hearts, including my desires, hopes and aspirations so, knowing that fact we hope you will protect all the four corners of the globe (four directions) and you will protect us leading us to happiness; My humbleness and my serving mood towards you - has made me stubborn in expecting my desires to be fulfilled; So, to remove this aberration in my desires, Oh brother, please give up your hesitancy to speak and thereby, give advice to your servant!"

After listening to the selfless yearning and humble desire of his younger brother and considering the public gathering, precarious time and circumstances, Sri Ram finally broke his silence and spoke "Oh dear brother, at present our seniors including Guru Vashisht and King Janak are worried about taking care of me, my family, my home and this entire forest; When we have the blessings from our gurus, our spiritual masters like sage Vishwamitra and King Janak then we all should never have any slimmer of worry in our hearts; For me and you - our prime goal, objective, religion and path to glory should only be in that we both brothers should abide by the orders given by our father; It is in the best interest of society if the king keeps his promises and maintains his solemn pledge towards his father; A person's Guru, Father, Mother and Spiritual preachers must be obeyed if a righteous man wants to avoid stepping into a pothole even while choosing the wrong turn on the journey. So, while keeping this concept firmly in your mind and by dissolution of all other thoughts, please go back to the city of Awadh and manage the administrative affairs over there during the time of my exile, oh dear Bharat!". While preaching to everyone in the assembly, Sri Ram adds, "Only understand that the country and its finest treasures, its family's security and all other responsibilities reside in obeying the desires of the Guru so you should only follow the advice of Guru Vashisht, experienced mothers and your trusted ministers while you serve mother Earth, the public trust and lead the administrative system." Sri Ram further clarifies his statement with a simple example that a leader should be like the mouth which is one in count but maintains all

organs of the entire body. Similarly, a leader with his innate wisdom and knowledge should ensure the well-being and maintenance of all members of public. Sri Ram explained that the summary of righteous policy-making is the same ideal standard for a leader i.e. the way that the desires & aspirations of the mind are hidden deep inside, the leader should keep his own interests hidden without affecting policy-making. Even after explaining concepts clearly and concisely, Bharat at once, without any delay spoke up since his restless mind was neither satisfied nor was silenced.

Sri Ram was decidedly trapped in the crossfire flowing from his brotherly love for Bharat and on the other side, the glances by kingly men of honor, senior members of society, spiritual gurus and public. Realizing this precarious position Sri Ram became hesitant to speak again and felt perturbed by the loving emotion he has for everyone. Sri Ram begins to think he wants to give his personal Paduka (smooth footwear made from wood) to his brother as memorabilia but the presence of Gurus etc. makes him hesitant. Eventually, after enough contemplation Sri Ram finally succumbs to the love for his younger brother and he gives his Paduka to Bharat. After gracefully accepting his divine Paduka, he pays obeisance to them by happily keeping them above his forehead. Sri Ram mentions to Bharat, that "Assume my Paduka to be like the two guardsmen for the public welfare and protection for all living beings; Assume it like a beautiful box where you can keep your devotion safely inside and assume it like this is a two letter word for the human beings to constantly serve me by chanting my name; Assume this to be the two doors which will always protect the palatial city of Awadh; Assume them to be like the two elephants who act as support for performing any righteous actions; Assume them to the two eyes to suggest all future righteous actions (also known as 'Dharma')". After receiving these divine Paduka from his elder brother, Bharat was utmost satisfied and relaxed as he felt the same joy similar to the presence of Sri Ram sitting beside him.

Bharat offered his obeisance and then he requested permission to leave back with the procession to Awadh. But at that very moment, Sri Ram hugged Bharat with all joy and delight. Meanwhile, the deity Indra found this as an opportune moment to wrongfully distract the minds of everyone present in the entire public and kingly population so they don't witness this final moment of separation and create multifold uncontrollable life-draining emotional outcry. While all of the agents of the deity Indra arrived here at this time & location, they could not steal anything during the emotional exchange of Sri Ram and his beloved brother Bharat, as they hugged each other tightly. During this final moment, it was evident that in the heart of Bharat, waves of devotional attachment towards Sri Ram started to flow amplifying the passion in his

mind, body and promises. Finally, after seeing this emotional upliftment in Bharat, Sri Ram, who is the epitome of self-restraint, finally gave up his control and his heavy eyes (while witnessing his younger brother) started to weep profusely! And after witnessing this grand event, all the agents of Indra and public became very sad. All Gurus, kingly men of honor like King Janak who were considered experts in skillful art of patience and were revered as gold standard in controlling their minds, who were directly created by lord Brahma without any impurities and who are regarded as completely detached even while living in this material world – even those elevated personalities were mentally circumambulating around the divine event of witnessing Sri Ram enjoying the loving embrace by his passionate younger brother Bharat.

At this time, when the mental abilities of king Janak and Guru Vashisht were restricted – any description using any language of this divine exchange of love will seem like a major fallacy. If the world's best poet were to attempt to describe the separation and exchange of lively emotions between the two brothers, then listeners of that poem might describe the poet as a cold-hearted being. This loving scene of embrace and the moment of separation before walking back to Awadh is indescribable. Hence, that poet's melodious voice at this time after realizing the gravity of the situation would have been subdued under the immense outburst of sweet embracing emotions. After consoling Bharat in a shy mood while opening his tight embrace, Sri Ram gathered the strength to give a loving embrace to Shatrughna. After seeing Bharat slowly moving away, the ministers and leaders in public started to follow and support him. While witnessing this, everyone in public became bitterly sad and their hearts felt immense pressure of separation once again!

With heavy feet and after forcing their minds, the public finally started to prepare for the long journey back to Awadh. Before proceeding on their walk back, the two brothers took permission from Sri Ram and offered their obeisance in his lotus feet for one last time and by securing his blessings on their forehead as they embarked on the return journey. The two brothers also repeatedly offered obeisance to the presently acting leader of public, Gurus and spiritually elevated personalities before turning around. And as per family sequence, the two brothers offered their obeisance to Sri Laxman and also offering their humble obeisance to Sri Sita – the two brothers took the dust from her lotus feet on their forehead (like a tilak adorned for fortune and safety). They started walking reminiscing the sweet memories of meeting Sri Ram's Darbar (the entire assembled family) in the forest...as the wind kept blowing in all directions…

So, in many ways Sri Ram's conversations and replies to his brother while addressing the public in the Chitrakuta forest, are naturally

inspiring for readers of any country, generation, color or creed and they act as the tombstone for ideally balancing one's moral duties with the obligations towards the family and serving the public trust. The discussion that happens between the brothers (from different mothers) is juxtaposed under swaying branches of the banyan trees, melodious peacocks, rumbling of the leaves and the occasional visits by the unassuming squirrels at Sri Ram's temporary shelter – as if one can say the shade of these objects acted like the comforting shadow of their Father's command under the searing heat of the suffering that Sri Ram's entire family was enduring…

Ram Rajya Vision: An Analytical Perspective

Subhash Sharma

Dr. Subhash Sharma is a leading Indian management thinker and known in the management education world both in India and abroad. He is author of books Management in New Age: Western Windows Eastern Doors, New Mantras in Corporate Corridors and New Earth Sastra. Prof. Sharma has made significant contributions to institution building as a founding member of WISDOM at Banasthali University, founding director, Indian Institute of Plantation Management, Bangalore, and founding member IBA, Bangalore.

Ram Rajya is an ancient vision, first articulated by Sage Valmiki in his Sanskrit literature on Ramayana. During medieval times, Tulsidas in Ramcharitmanas presented his vision in Ramcharitmanas and brought it to a popular level. During recent times, Mahatma Gandhi articulated it as a global vision for the human society.

According to Valmiki, in Ram Rajya, All the people are endowed with excellent characteristics. All are engaged in virtue. Trees bear flowers and fruits regularly, without any injury by pests and insects. Clouds rain in time and the wind is delightful to the touch. Every creature is pleased. Everyone is intent on virtue. Turning their eyes towards Ram alone, creatures do not kill one another.

Valmiki's Vision of Ram Rajya

Sage Valmiki in Yuddha Kanda of Ramayana says how the Ram Rajya was in following sholkās.

न पर्यदेवन्विधवा न च व्यालकृतं भयम् ।
न व्याधिजं भयन् वापि रामे राज्यं प्रशासति ॥

While Ram was ruling the kingdom, there were no widows to lament, no danger from wild animals, nor any fear born of diseases.

सर्वं मुदितमेवासीत्सर्वो धर्मपरोअभवत् ।
राममेवानुपश्यन्तो नाभ्यहिन्सन्परस्परम् ॥

Every creature felt pleased. Everyone was intent on virtue. Turning their eyes towards Ram alone, creatures did not kill one another.

आसन्वर्षसहस्राणि तथा पुत्रसहस्रिणः ।
निरामया विशोकाश्च रामे राज्यं प्रशासति ॥

While Ram was ruling the kingdom, people survived for thousands of years, with thousands of their progeny, all free of illness and grief.

रामो रामो राम इति प्रजानामभवन् कथाः ।
रामभूतं जगाभूद्रामे राज्यं प्रशासति ॥

While Ram ruled the kingdom, the talks of the people centered round Ram, Ram and Ram. The world became Ram's world.

नित्यपुष्पा नित्यफलास्तरवः स्कन्धविस्तृताः ।
कालवर्षी च पर्जन्यः सुखस्पर्शश्च मारुतः ॥

The trees were bearing flowers and fruits regularly, without any injury by pests and insects. The clouds were raining in time and the wind was delightful to the touch.

सर्वे लक्षणसम्पन्नाः सर्वे धर्मपरायणाः ।

All the people were endowed with excellent characteristics. All were engaged in virtue."

(*Source: https://www.quora.com/What-is-Ram-Rajya*)

Tulsidas Vision of Ram Rajya

Tulsidas says in Ram Rajya, no one suffers physically, spiritually and bodily. Everyone lives in harmony with affection towards each other while performing their own duties as described in the scriptures. For our times, we can take it as per the law and ethically. All the four limbs of the Dharma – Truth, Purity, Compassion and Charity are being fulfilled, and no one does a paap or sin even in their dreams. Everyone does Bhakti of Ram and hence earn the right to Moksha or liberation from the cycle of birth and death. Here Ram may not refer to the king of Ayodhya, and it may refer to the Nirguna Ram that saint Kabir talks about.

In the following Doha, Tulsidas gives the abstract of what Ram Rajya is:

बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग । 7.20.D1
चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहि भय सोक न रोग ॥ 7.20.D2

When everyone lives according to the dharma of their Varan and Ashram or when everyone does what they are supposed to do in their work and as per their stage in life as defined in the Vedas. When there is no fear, no sorrows, and no diseases – it is the essence of Ram Rajya.

How beautifully it sums up what we need to have a state that is perfect & to be honest how simple it sounds to achieve. Just do what you are supposed to do to the best of your abilities or as prescribed. Think of it, if we all did what we are supposed to do, 99% of the world problems would be gone in an instant.

Tulsidas says in Ram Rajya, no one suffers physically, spiritually and bodily.

Everyone lives in harmony with affection towards each other while performing their own duties as described in the scriptures. For our times, we can take it as per the law and ethically.

All the four limbs of the dharma – Truth, Purity, Compassion and Charity are being fulfilled, and no one does a paap or sin even in their dreams. Everyone does bhakti of Ram and hence earn the right to Moksha or liberation from the cycle of birth and death. Here Ram may not refer to the king of Ayodhya, and it may refer to the Nirguna Ram that Kabir talks about.

No one dies young. Everyone has a beautiful body free of diseases. No one is poor, sad or pitiable. No one is a fool or without *shubh lakshana* or auspicious signs.

No one is vain. Everyone is pious and busy doing their Dharma. All men and women are smart and talented. All are knowledgeable and respect those who have knowledge. Everyone is thankful and no one engaged in the deceit of any kind.

Everyone is generous, helpful and respect the learned. All men marry only one woman and women are dedicated to their husbands in their body, mind, and spirit.

Changed Meanings

In Ram Rajya, *Dand* a staff) can only be seen in the hands of Yogis, who use it to rest their hand on it while doing their Tapasya. *Jati Bhed* (difference in different castes) can only be seen in the dictionary of dancers who use it to define the difference between different rhythms & notes. *Jeeto* (winning) only refers to the winning of hearts as there is no enemy left to be won.

Ecology in around Ayodhya

All the forests are full of flowers and fruits. Lion and elephants live together. All the birds and animals live harmoniously without the known animosity between them, with mutual affection.

Birds chirp and different animals live happily without fear. Mild, cool, fragrant wind blows and bees buzz as they collect honey from the flowers.

Vines and trees give you honey, and cows give the milk as soon as you ask for it. Fields are always full of crops. It looks like Sat Yuga in Treta Yuga. Sat Yuga preceded Treta Yuga of Ram, and it was a time when everything worked perfectly.

Mountains and hills are mines of precious stones or Mani. All rivers are full of cool, clean and sweet power that is the source of happiness.

Oceans stay within their limits, and they leave their treasures on the shore for humans. All ponds are full of lotus blooms spreading joy in all directions.

Moon sends its cool rays to earth, the sun shines only as much as needed, clouds give as much water as asked.

The Behavior of the Royal Family

Sri Ram himself performs a million Yagnas, gives Daan to the Brahmans. Sita, despite having skilled Sevak at her disposal, takes care of her home by herself including the Seva of her mothers-in-law. All brothers stay attentive for anything that they may be required to do. Sri Ram teaches them different strategies for statecraft.

Grandeur of Ayodhya

All the people of Ayodhya city are happy. All the mansions have walls full of precious stones. The city wall has colorful Kangooras or Balustrades. Ayodhya competes with Amaravati of Indra in its grandeur. The Kalash or pots on top of the buildings are competing with the shine of sun and moon. Jharokhas or windows of the mansions are lit up with Deeps or Oil lamps that have precious stone on them. Thresholds are made of coral, walls of gemstones and golden walls are embedded with emeralds. Courtyards are made of Sphatik or crystals.

Every house has a Chitrashala or paintings on its walls, depicting the Charitra or character of Sri Ram. They are so beautiful that even Sanyasi get lost in them.

Everyone has a garden full of flowers and plants that have perpetual blossom as it blossoms in Basant Ritu or Spring season. You can hear the bumbling of bees as the gentle wind blows. Even the kids have birds as pets who they play with as they fly.

Peacocks, swans, cranes, pigeons park themselves on top of houses and dance when they see their own shadows.

Kids chat with the Parrots and Mainas and talk about Sri Ram. The city has beautiful gates, streets, crossroads, and markets. Markets are full of things at no price. Cloth merchants, jewelers, traders sit in the market like Kuber – the god of wealth.

Saryu and its Banks

Saryu flows in the North with deep clean water. There are ghats along Saryu and there is not an iota of mud on its banks. At some distance horses and elephants drink its water.

All along Saryu are temples surrounded by gardens. Some sanyasi live near the banks of Saryu, who have planted Tulsi all along the banks of the river.

The city of Ayodhya looks beautiful even from a distance as it is full of forests, gardens, step wells & ponds. Later have lovely steps leading to the water. They are full of lotus and the birds invite there with their birdsongs."

(*Source: https://www.anuradhagoyal.com/what-is-ram-rajya-ramcharitmanas-tulsidas/)*

Gandhi's Vision of Ram Rajya

Writing in 'Young India' (September 19, 1929), Gandhiji had said: "By Ram Raj, I mean Ram Raj, the kingdom of God… I acknowledge no other God than the one God of Truth and righteousness. Whether Ram of my imagination ever lived on this earth, the ancient ideal of the Ramayana is undoubtedly one of true democracy in which the meanest citizen could be sure of swift justice without an elaborate and costly procedure." In the Amrit Bazar Patrika of August 2, 1934, he said: "Ramayana of my dreams ensures equal rights to both prince and pauper."

According to Gandhi, the ideal Ram Rajya may be politically described as "the land of dharma and a realm of peace, harmony and happiness for young and old, high and low, all creatures and the earth itself, in recognition of a shared universal consciousness.'

Linking Ram Rajya Vision with Contemporary Worldviews

In contemporary context there are three worldviews as three visions of human society. Sharma (1996) presents them in terms of following three types:

I. Pure Materialist/ Economistic worldview
II. Humanist- Materialist worldview
III. Transcendentalist worldview

Economistic worldview: This worldview gives primacy to Market and individual behaviour is driven by Profit, Competition and Self interest (PCS). Its focus is on Prosperity, GDP and other economic parameters. It also represents a Transactional (T1) view of human society and human beings.

Humanist – Materialist worldview: This worldview gives primacy to Society and it is driven by Justice, Rights and Duties (JRD). Is focus is on Justice, Rights and Duties. Justice in human society results not merely by focusing on Rights but by focusing both on the Rights and Duties. It

also represents a Transformational (T2) view of human society and human beings.

Transcendentalist worldview: This worldview gives primacy to Spirituality and HOPE – Higher Order Purpose of Existence. Its focus is on Self, particularly on Higher Self, According to this worldview human behaviour is driven by Love, Compassion and Devotion (LCD). Its ultimate aim is to create Peace in society. It also represents a Transcendental (T3) view of human society and human beings.

These three worldviews can also be reflected in terms of following three Isms (Idea, Spirit, Manifestation):

Economistic worldview: Capitalism rooted in T1

Humanist-Materialist worldview: Socialism rooted in T2

Transcendentalist worldview: Spiritualism rooted in T3

These three visions can be integrated through Ram Rajya Vision. This integrated framework is presented in Fig. 1.

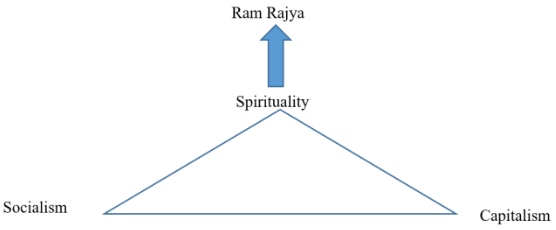

Fig.1: Ram Rajya Vision as Integral Vision

This integral vision can be represented by vision of Prosperity, Justice and Peace (PJP) as focus of Economistic vision is on Prosperity, focus of Humanist- materialist vision is on Justice and focus of Transcendentalist vision is on Peace. In Ram Rajya these three visions find an integration, hence Ram Rajya vision can be defined in terms of PJP (Prosperity, Justice and Peace).

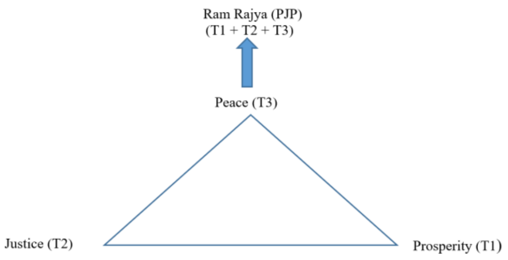

Fig. 2: A New Meaning of Ram Rajya

New meaning of Ram Rajya implies a society where there is Prosperity, Justice and Peace. This can be achieved by balancing three worldviews represented by PCS, JRD and LCD as Economistic worldview leads to Prosperity through PCS, Humanist-Materialist worldview leads to Justice through JRD and Transcendentalist worldview leads to Peace through LCD.

Ram Rajya as Sacro-Civic Society

In Ran Rajya Ram represents sacro dimension and Rajya represents civic dimension. Thus, Ram Rajya represents sacro-civic vision of human society. It is essentially Sattava-Rajas (S-R) combination in human actions and decision making. Ram Rajya represents S-R mindset/ Thought-Action on the part of Leaders. Thus, it represents Sattavik leadership model.

In Corporate context Ram Rajya implies Spiritually driven Corporations- Corporations driven by Corporate HOPE: Higher Order Purpose of Existence and corporations driven by Divine-Democratic leadership. This implies increase in synergy and reduction in conflicts and interpersonal egos that result in negergy (negative energy). Thus Ram Rajya has implications for Corporations through focus on Prosperity (Profit), Justice (Equity) and Peace (Workplace harmony).

Ram Rajya and Divine- Democratic Leadership

Ram Rajya suggests the need for Divine-Democratic leadership in society, politics and corporations. To understand this concept, we present a leadership grid in Fig. 3. In this figure x axis represents authoritarian and democratic styles of leadership and y axis represents divine and democratic styles. Thus, we arrive at four styles of leadership represented by four quadrants. These styles are Divine-Democratic, Divine-Autocratic, Demonic-Autocratic and Demonic-Democratic. In this grid Ram Rajya is represented by Divine-Democratic quadrant.

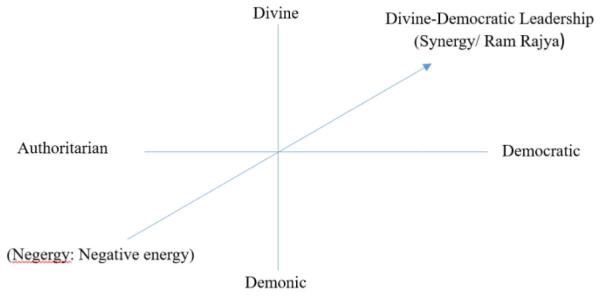

Fig. 3: Ram Rajya Leadership Grid

(Management in New Age: Western Windows Eastern Doors, Subhash Sharma, 1996, p. 176)

Essence of Ram Rajya Vision

Essence of Ram Rajya vision can be represented by following three principles articulated in Management in New Age: Western Windows Eastern Doors, Subhash Sharma, 1996, p. 209.

I. Eco-sattavik view of life represented by HOPE (Higher Order Purpose of Existence)
II. Sacro-civic view of society and organizations/ corporations and its governance. In organization context it is represented by the idea of subh-labh.
III. Divine-Democratic/Sattavik view of Leadership (Sattavik model of leadership)

When these three principles are implemented in corporations, society and politics we can actualize Ram Rajya.

Is There any Example of Ram Rajya in Modern Context?

Orccha in Madhya Pradesh is a modern day example of 'Ram Raja ki Sarkar'. It is managed under the rulership of Ram as King of the city. There is no crime and it is said that people don't lock their homes! The question is: Can this be replicated in other cities?

If a nation becomes a sacro-civic it becomes Ram Rajya nation.

In 2014, Narendra Modi, Prime Minister of India reformulated Ram Rajya vision in terms of an evocative phrase, 'Sabka Saath Sabka Vikas' (Collective energy for Collective Development) and in 2019, he added the idea of Sabka Viswas (Trust of all). Thus, 'Sabka Saath, Sabka Vikas, Saka Viswas' can be considered as a new phrase for Ram Rajya vision for the nations and the world.

References

1. Ojha S. P., Sri Ram Charit Manas, Diamond Books, New Delhi, 2003
2. Sharma, Subhash, Management in New Age: Western Windows Eastern Doors, New Age International Publishers, New Delhi, 1996
3. Sharma Subhash, Orchha Vision: An Inspiration to Sacro-Civic Society, Southern Economist, Aug. 15, 2009, pp. 7-9.
4. Wikipedia, Ramcharitmanas
5. https://www.anuradhagoyal.com/what-is-ram-rajya-ramcharitmanas-tulsidas/
6. https://www.quora.com/What-is-Ram-Rajya

Achieving Sustainability through Gandhi's RamRajya

Rajat Agrawal, Vinay Sharma

Rajat Agrawal is a member of faculty at Department of Management Studies and also associated with Centre of Excellence in Disaster Mitigation and Management and Centre for Transportation systems at IIT Roorkee. He is IPR Chair Coordinator at IIT Roorkee. He works in the area of manufacturing competitiveness, social sustainability and innovation capabilities at SMEs. He has received various awards for his scholarly publications.

Vinay Sharma is teaching Strategy, Innovation and Product and Brand Management at IIT Roorkee. He has previously worked with media, IT enabled services and social marketing. He has pursued research in the areas of spirituality for market development, low cost forest bio-residue based energy, health care provision to the rural and the poor and market opportunity development. He has lived in Ayodhya for four years and wishes to spend at least the last part of his life there only.

Global business environment is under tremendous pressure to achieve three dimensions of sustainability. People believe that achieving three dimensions at the same time is next to impossible. Mahatma Gandhi, father of nation, gave detailed concept of RamRajya. His vision of RamRajya is very broad. It is modern explanation of RamRajya of Ramcharitmanas and Ramayana. Understanding Sustainable development is not sufficient. It is more important to understand process of achieving the sustainability in current state of materialistic progress. Gandhiji, using teachings of Ramcharitmanas and Ramayana conceptualized the methodology to achieve sustainability.

Introduction

Ram Katha is such a powerful creation that it gives as many meanings as you read it. Some may consider it as history or mythology, but the concept of RamRajya is a dream for all of us.

When we talk of pearls of Ramayana, concept of RamRajya is one of the most important jewel of Ramayana. Leadership, mentorship of Jamvant, character of Hanuman, worker empowerment, involvement of everyone, are some of the important lessons of Ramayana. This paper discusses in detail concept of RamRajya given by Tulsidas Ji in Ramcharitmanas and RamRajya proposed by Gandhi Ji and RamRajya in the period of pandemic. Finally, it is argued that sustainable development

is only possible when we understand correct meaning of development i.e. development of Inanimate, Plant, Animal and Human (according to teachings of Bhagwan Devatma, founder of Deva Samaj).

RamRajya as per Manas

Goswami ji gave certain important characteristics of RamRajya which are as follows:

(a) Elimination of inequalities: During RamRajya all types of inequalities cease to exist. Differences of opinions or any other types will not be there. Following verse of Manas clearly mentions it:

राम राज बैठें त्रैलोका। हरषित भए गए सब सोका॥ 7.20.C7
बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप बिषमता खोई॥ 7.20.C8

(b) No Fear, No Sadness: RamRajya will facilitate an environment where no one will be sad, no one will have fear. All will act as per their duties and achieve satisfaction.

बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग॥7.20.D1
चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहिं भय सोक न रोग॥7.20.D2

(c) Universal Brotherhood: Goswami ji mentions three sources of sufferings. You can be in trouble due to bodily(daihik), superhuman (daivik), and physical(bhautik) issues. In RamRajya, you will not get sufferings from any of these sources. Since all people will work as per Divine knowledge, there will be universal happiness and brotherhood.

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा॥7.21.C1
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥ 7.21.C2

(d) Rule of Dharma: Goswami ji mentioned that RamRajya will have rule of religion. Truth, Hygiene, Compassion, Donation are some of the dimensions of Dharma which will be seen everywhere. All citizens will be aiming for salvation.

चारिउ चरन धर्म जग माहीं। पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं॥7.21.C3
राम भगति रत नर अरु नारी। सकल परम गति के अधिकारी॥7.21.C4

(e) Bodily, Physical, Mental beauty: In RamRajya, there will not be infant mortalities, no one will have ailments. People will have beautiful bodies and they will free from diseases. No one will be poor, no one will be sad, no one will be dupe.

अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा। सब सुंदर सब बिरुज सरीरा॥7.21.C5
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना॥7.21.C6

(f) Gender Equality: Goswami ji mentioned equality of all genders in RamRajya. This shows the progressive concept of RamRajya presented by Goswami Tulsidas. There is no feeling of supremacy in anyone.

सब निर्दंभ धर्मरत पुनी । नर अरु नारि चतुर सब गुनी ॥ 7.21.C7
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी । सब कृतग्य नहिं कपट सयानी ॥7.21.C8

(g) Material Prosperity: RamRajya is not only related to mental peace but it also talks of material prosperity.

राम राज कर सुख संपदा । बरनि न सकइ फनीस सारदा ॥7.22.C6

Land, flora- fauna will be source of all round prosperity to human.

लता बिटप मागें मधु चवहीं । मनभावतो धेनु पय स्रवहीं ॥7.23.C5

(h) No polygamy: All men and women will be faithful to their partners. There will not be any type of adultery.

एकनारि ब्रत रत सब झारी । ते मन बच क्रम पति हितकारी ॥7.22.C8

(i) Higher meanings of word "Victory": There will not be any enemy at the time of RamRajya. So there will be no question of victory. Victory is needed only on self-desires.

जीतहु मनहि सुनिअ अस रामचंद्र कें राज ॥7.22.D2

(j) No Pollution in Rivers: Even issues related to pollution in rivers were given due mentioning by Goswami ji. He mentioned that rivers will flow nirmal and aviral in RamRajya.

सरिता सकल बहहिं बर बारी । सीतल अमल स्वाद सुखकारी ॥ 7.23.C8

(k) No Natural disaster and all around prosperity: RamRajya will be free from natural disasters such as cyclone and tsunami. People will get jewels from oceans and become more prosperous. Prosperity will come from all ten directions.

सागर निज मरजादाँ रहहीं । डारहिं रत्न तटन्हि नर लहहीं ॥7.23.C9
सरसिज संकुल सकल तड़ागा । अति प्रसन्न दस दिसा बिभागा ॥7.23.C10

Sun, moon and clouds will behave in limits and will comfort to all of us.

बिधु महि पूर मयूखन्हि रबि तप जेतनेहि काज ॥7.23.D1
मागें बारिद देहिं जल रामचंद्र कें राज ॥7.23.D2

RamRajya as per Gandhiji

Mahatma Gandhi used the word "RamRajya" at the time when our society was facing different types of problems. On one hand, freedom struggle was going on and on the other many social evils were also present. Division of society on the basis of religion was everywhere. At that time, Gandhiji again used this term "RamRajya". Gandhiji did not mean rule of particular religion. Mahatma Gandhi explained his meaning of RamRajya in some of the articles published in Yong India and Amrit Bazar Patrika. He wrote in Young India (September 19, 1929) and Amrit Bazar Patrika (August2, 1934), "By RamRajya I do not mean Hindu Raj. I want to ensure equal rights to both prince and pauper." Gandhiji considered no difference between Ram and Rahim. Gandhiji emphasized self-introspection as first requisite for RamRajya. One has to magnify own faults a thousand fold and shut eyes to the faults of others. This was the path suggested by Gandhiji for real progress. Gandhiji wanted to promote true democracy and an equitable society. This should be the basic idea of sustainability.

Sustainable Development

Presently sustainability has three dimensions, namely economic, environment and society. Still we are witnessing development of a society where inequalities are increasing. Gap between rich and poor is widening day by day. A society with such skewed distribution of resources cannot be sustainable. All creatures on this earth has a common universal consciousness (amritasya putra). It is important for all of us to understand greater meaning of RamRajya and concept of sustainability must be based on concepts of RamRajya where removal of inequalities and establishing land of peace, harmony and happiness should be the basic objective.

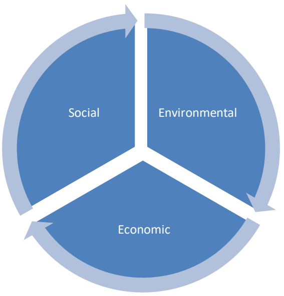

3 Dimensions of Sustainability

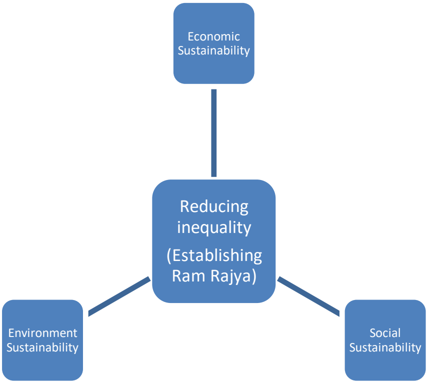

Sustainability based on RamRajya

Conclusion

Presently world is passing through one of the most of difficult times of human race as COVID-19 pandemic has emerged as one of the biggest threat to mankind. But it has also given enough time to everyone for self-introspection. This pandemic has eliminated differences between rich and poor. Can we reduce these differences permanently? RamRajya is the only answer for achieving a world where people are without pain and sufferings, people respect each other, nature always bless everyone. Hope we can see this RamRajya in our life-time.

Eight Kingdoms for Eight Princes

Saroj Bala

After retiring as an officer of the Indian Revenue Service as Member of CBDT, Saroj Bala plunged into scientific research into the historicity and antiquity of Vedas and Epics. Her first book entitled "Historicity of Vedic and Ramayan Eras: Scientific Evidences from the Depths of Oceans to the Heights of Skies" was published in 2012. Her books 'Ramayan ki Kahani, Vigyan ki Zubani' and 'Ramayan Retold with Scientific Evidence' were launched in 2018 and 2019. These books narrate the biography of Lord Ram with exact dates of important events determined using evidence from astronomy, archaeology, oceanography, remote sensing and genetic studies etc.

In Naimish Aranya during Ashwamedha Yajna, Sita Ji went to Rasatala, leaving the people of Ayodhya repentant and stupefied. Grief stricken Shri Ram completed the Yajna and took Kush and Luv to Ayodhya. Thereafter he ruled in the best interest of his people for about ten years. Sometime later, Brahmarshi Gargeya (son of Angiras) brought a message from Yudhajit, the king of Kekaya Pradesh, requesting for help in winning over territory of Gandharvas, located on both sides of Sindhu (Indus). Yudhajit had also desired that after winning over the territory, it could be merged with Koshal kingdom.

On being ordered by Shri Ram, Bharat accompanied by his two sons Taksh and Pushkal, went with his army to support Yudhajit, his maternal uncle. A fierce battle ensued which continued for seven days, killing thousands of soldiers on both sides. Finally, Bharat discharged a weapon named Samvarta, which killed hundreds of mighty Gandharvas and thus Bharat and Yudhajit, supported by valiant Taksh and Pushkal, succeeded in defeating Gandharvas. Thereafter two beautiful cities named Takshashila and Pushkalavat were developed (7/101/10-11). Gandhar kingdom was divided into two. Bharat's son Taksh was coronated as the king, with his capital in Takshashila (later known as Taxila) on the eastern side of Indus and 2nd son Pushkal was enthroned as the king, with his capital in Pushkalavat, which was on the western side of Indus. These cities were made prosperous, beautified by gardens and groves, having well planned markets and streets and also adorned with beautiful houses and temples. After helping his sons to settle down as kings for 5 years, Bharat came back to Ayodhya. He narrated all the details of war with Gandharvas and about the development of the two cities to Shri Ram. Hearing these details, Shri Ram felt happy and satisfied.

John Marshall and Cunningham had carried out limited excavations in Takshashila (Taxila). The archaeological sites excavated include Sarai Khola, Bhir, Sirkalp and Sirsukh, which should all be considered as part of Taxila. The archaeological site of Sarai Khola has supported the references in Ramayan and later of Mahabharat, revealing dates of 3200 – 2200 BC for terracotta, pottery, beads etc. Between 2200 BC and 1200 BC, Indian sub-continent went through drought like conditions, when the sea level also went down by more than eight meters. Therefore, most of the existing sites were almost abandoned and survivors tried to relocate and they established new settlements. Because of the antiquity of culture revealing thousands of years of cultural continuity and location of world's oldest university, Takshashila (Taxila) was declared as UNESCO World Heritage Site. It is the most popular tourist town located in modern day Rawalpindi district of Pakistan. The ruins of one of the world's oldest and the grandest universities can still be seen in Taxila. Figure 1 shows more than 2,000 years old University excavated in Takshashila, which has been declared as UNESCO World Heritage Site.

Figure-1 Taxila © UNESCO

(Author: Alexandra Sayn-Wittgenstein, Downloaded from list of World Heritage Sites - http://whc.unesco.org/en/list/139/gallery/)

Very limited excavations were also carried out in Pushkalavat, an ancient site situated at the confluence of Swat and Kabul rivers. It is located in Peshawar valley in Khyber Pakhtunkhwa province (formerly NWFP Province) of Pakistan. It was named Pushkalavat because it was founded by Pushkal, son of Bharat; the time was around 7000 years back. Two thousand years later and around 5000 BP, there are references to the

city in Mahabharat. Pushkalavat was again the capital of ancient kingdom Achaemenid of Gandhara from the 6th century BCE to 2nd century AD. The location was first excavated in 1902 by the then eminent archaeologist John Marshall. Subsequently, Sir Mortimer Wheeler conducted some excavations there in 1962.

After some time, Shri Ram wanted to crown Lakshman's two valiant and noble sons, Angad and Chandraketu, as kings of peace-loving areas where kings were not tormented by the ignoble and where hermitages were protected by the rulers and their ministers. High-souled Bharat suggested Karupatha region, which was beautiful as well as peaceful. Currently it forms part of Bengal, Orissa and Bihar. Shri Ram accepted this suggestion and he took this area under his direct control. Two beautiful capital cities were developed. Angad, a great archer, was made king of Karupath with **Angadia** as the capital in the western region. Chandraketu, a great wrestler, was crowned as king of Mall Desh, located towards north, with **Chandraketu** as capital (7/102).

Excavations, yielding evidence of connection of this ancient city with ancient times, were carried out in Chandraketugarh, which is located in North 24-Parganas District of West Bengal. The excavations at several sites have revealed seven periods of civilization – period I and II being Pre-Mauryan and Mauryan i.e. before 250 BCE, whereas periods III to VII are Shunga, Kushan, Gupta and post Gupta periods. The most important antiquities pertaining to pre-Mauryan era excavated include Red, grey and black pottery, copper and silver coins and exquisite terracotta figurines. A very large number of these figurines are of Yakshis and Apsaras, who are repeatedly mentioned in Ramayan. Most of these were excavated from Khan-Mihirer-Dhipi site which contained the ruins of ancient Hindu Temple. Most of the details of these excavations have been reported in Indian Archaeology - A Review (IAR) and artifacts have been preserved in Asutosh Museum of Indian Art, Kolkata (AMC). An extensive reporting has been done by Enamul Haque in his book titled “Chandraketugarh: A treasure House of Bengal Terracottas” published by The International Centre for study of Bengal Art, Dhaka, Bangladesh. Just have a sample look at images of six Yakshis out of more than six hundred listed by Shri Enamel Haque. See Figure 2.

Although most of the excavated artifacts have been dated as pertaining to first and second millennia BCE, yet considering that in last 7000 years there would have been several earthquakes, floods, draughts and wars, it would be unfair to assume that the history of these places is only that much old. In fact Angadia and Chandraketugarh have been mentioned in Mahabharat also, the archaeo-astronomical dates of Mahabharat have been determined as belonging to 3rd millennia BCE as per latest articles on the subject.

Figure-2: Plates C-50 and C-51, AMC (bejeweled Yakshis) Plates; C-100,C-101,C-103,C-104, AMC (Dancing apsaras); http://www.caluniv.ac.in/museum/museum.html . Courtesy: B R Mani

Excavations carried out in Champa and Oriup in Anga, which have been referred to as Angadia in Ramayan, have also revealed similar kind of antiquity of cultural development. Archaeological evidence has led us to conclude that the political principality was well established during the second millennium BCE, though the settlements must have started much earlier.

Lakshman stayed with Angad for one year and Bharat stayed with Chandraketu for more than a year so that they were fully trained in running their kingdoms, ensuring its security and ruling in the best interest of the people. Thereafter both came back and reported to Shri Ram. They were deeply attached to him; they did not want to live separated from him, longer than what was essential. Thereafter, Shri Ram, assisted by Bharat and Lakshman, made his kingdom happy and prosperous for approximately ten more years (V.R.7/102/16).

After some time, while Shri Ram remained engaged in virtuous deeds, death in the form of an ascetic appeared at the royal gate. Due to the events which followed Shri Ram had to desert Lakshman, who immediately thereafter went to the banks of Saryu River. Performing ablutions, restraining his senses and holding his breath, Lakshman entered the Saryu and thus left for his heavenly abode. Having deserted Lakshman, feeling deeply anguished, Shri Ram spoke to the sages, courtiers and citizens, "I shall consecrate Bharat as the emperor of Ayodhya, and depart for the forest. I shall tread the path that Lakshman has adopted this very day."

However, Bharat refused to accept the kingship and did not wish to live separate from Shri Ram. He suggested that let Kush be coronated as the king of South Koshal and let Luv be crowned as the king of North Koshal. Let fast-moving messengers be sent to Shatrughan for conveying the news and entire sequence of the events. Sage Vasishth endorsed these suggestions of Bharat.

Anticipating the end of his life as a human being on earth, Shri Ram crowned Kush and Luv as kings in their respective kingdoms. Kush was crowned as the king of South Koshal and was sent to its beautiful capital Kushavati, at the foot of Vindhya Mountain. Luv was made the king of North Koshal and sent to its capital Shravasti (7/108). Having placed them in his lap, embracing them with affection, Shri Ram gave them a lot of wealth and precious stones. He also divided the army between them and gave very large number of chariots, elephants, horses, soldiers and weapons to them. He then sent them with the army and other representatives to settle them in their new respective kingdoms.

The limited excavations carried out in Ayodhya, Shravasti, Lahuradeva and Siswania, which formed part of ancient Koshal kingdom, have revealed that these were well established colonies during the second millennium BCE, though the settlements at many of these sites had started much earlier. The antiquity of sites like Ayodhya, Shravasti, Jhussi and Lahuradeva goes back to more than 4000 years back. The latest archaeological evidences have revealed that Vedic Janas had come into existence before the third millennium BCE; these were transformed into Janapadas and Mahajanapadas towards the end of the second millennium BCE, much before their normally accepted period of the sixth century BCE.

In fact a large number of Hindus had adopted Buddhism as well as Jainism during 6th century BC to 3rd century AD. Consequently, at most of the developed places or temple sites, Stupas, Buddha Viharas, Buddha Statues and Buddha carvings had come into existence. Most of the archaeologists, being ignorant of the contents of Valmiki Ramayan, were not able to explore and throw light upon the pre-Buddha links of these excavated sites.

In Lahuradeva, which formed part of the ancient Koshal kingdom, painted pot-sherds, dish on stand, copper arrow, copper hook and steatite beads etc. have been excavated. The carbon dating of these has related to 5000 BCE. The cultivation of rice, barley, wheat, lentils, green-grams, peas, sesame, anwala and grapes etc. was being done 7000 years back in this area (Tewari et al. 2001-2002, 2007-2008, Puratattva). All these artifacts and crops have been repeatedly referred to in Ramayan (V.R.1/27/7-13, V.R.2/15/7-10, V.R.7/91/19-20 etc.)

Simultaneously, messengers were also sent to Shatrughan and they narrated to him the entire sequence of events. They told him about desertion of Lakshman, crowning of Luv and Kush and decision of Shri Ram and Bharat to go to Saket Dham. Hearing this extremely saddening account of the events, Shatrughan divided his kingdom into two parts; he coronated his son Subahu as the king of Madhurapuri (Mathura) and 2nd son Shatrughati was made the king of Vidisha (7/108).

After sending Sita to Valmiki Ashram, Shri Ram had sent Shatrughan to kill Lavanasur and thereafter develop these two kingdoms and rule in the best interest of inhabitants. Maharshi Valmiki has very clearly mentioned that the beautiful city of Mathura was established as the territory of Surasenas, literally meaning army of brave men, which had accompanied Shatrughan (7/70). This beautiful city, shaped like crescent moon, was developed on the banks of Yamuna. The importance of Mathura has been maintained for thousands of years, through Mahabharat, Buddha, Maurya and Gupta eras.

Archaeo-astronomical evidence, read with genetic studies, has left no doubt that Vedas are the compilation of knowledge of the early current Holocene period (7000 BCE – 2000 BCE), whereas Ramayan and Mahabharat have recorded the history of that period. It is very interesting that some silver punch-marked coins of Mathura, clearly establishing their connection with Surasena, have been kept in British Museum as well as in Mathura Museum. Even the most conservative date estimates relate these to pre-Mauryan era i.e to 2nd and 1st millennium BCE. Obviously the coins are not of Ramayan era and are not dated as 7000 years old, but these abundantly make clear that culture and civilization revealed as exiting 7000 years back through Ramayan has continued through many millennia later; in fact till date in the Indian sub-continent.

No less amazing have been the conclusions from excavations in and around Vidisha. There has been a rich collection of punch-marked coins, some of which have been preserved in British Museum as well as in Bhopal Museum. Pictures of some such coins presented by Shri J P Jain, Numismatist, Archaeology and Museums, Bhopal, alongside a picture of silver punch marked coin of Drachm of Agathoclese showing Vasudev Krishna holding chakra on one side and Balram holding plough on the other side, has also been given hereunder, reported in Gupta’s article referred to supra.

Coins of Vidisha by Shri J P Jain, Bhopal

Drachm of Agathocles: Krishna with chakra
(Courtesy: Dr B R Mani)

It is thus clear that these two cities of Mathura and Vidisha have gone through repeated cycles of development - decay – destruction - reconstruction. We could also describe it as cycle of prosperity, destruction, and reconstruction again; but these cities could not be erased from the public memory nor could these be erased from the map of India.

Shatrughan himself left Mathura alone in his chariot for Ayodhya immediately. Reaching Ayodhya and bowing before Shri Ram, Shatrughan submitted that after crowning his two sons, he has come determined to follow him. At that time, Sugriva also reached there and submitted to Shri Ram that after consecrating Angad as the king of Kishkindha, he has also come determined to follow Shri Ram.

Shri Ram expressed his desire to leave for his heavenly abode. Bharat and Shatrughan decided to go with him. Sugriva, many monkey warriors and many citizens of Ayodhya did not want to stay on earth without Shri Ram and decided to follow him. The next morning Shri Ram requested the chief priest to perform the Agnihotra (oblation unto the fire god) and prepare them for their final journey. The effulgent Vasishth performed all the rites. Then donning fine garments, reciting mantras, taking Kusha grass in hand, Shri Ram went to Saryu. Bharat and Shatrughan, accompanied by the ladies of the gynaeceum, followed him together with the Agnihotra. Praying to Brahma, holding his breath, Shri Ram entered the waters of Saryu along with his brothers. They all went to Param Dham and got united into the form of Lord Vishnu (V.R.7/110).

One look at the Map depicting modern day location of some important Ramayan places authenticates the facts stated in this chapter, particularly about the eight capital cities, which Shri Ram had got developed for eight princes and recent excavations proved their existence.

Capitals of kingdoms divided amongst 8 grandsons of King Dashrath All 8 capital cities were developed as new cities
1. Takshshila (Gandharva) – Belonged to Taksh, son of Bharat. Ref: VR/7/101/11
2. Pushkalavat (Gandhar) – Belonged to Pushkal, son of Bharat. Ref: VR/7/101/11
3. Chandrakanta (Mall Desh) – Belonged to Chandraketu, son of Lakshman. Ref: VR/7/102/8
4. Angadiya (Karupath) – Belonged to Angad, son of Lakshman. Ref: VR/7/102/8
5. Shravasti (North Kosal) – Belonged to Luv, son of Ram. Ref: VR/7/108/5
6. Kushavati (South Kosal) – Belonged to Kush, son of Ram. Ref: VR/7/108/5
7. Mathura (near Yamuna) – Belonged to Subahu, son of Shatrughan. Ref: VR/7/108/10
8. Vidisha – Belonged to Shatrughati, son of Shatrughan. Ref: VR/7/108/10

Map depicts eight capital cities, developed by Shri Ram for the eight princes. These have been shown in blue color with their modern-day locations, plotted using GPS. Limited Excavations have been carried out at all these eight places.

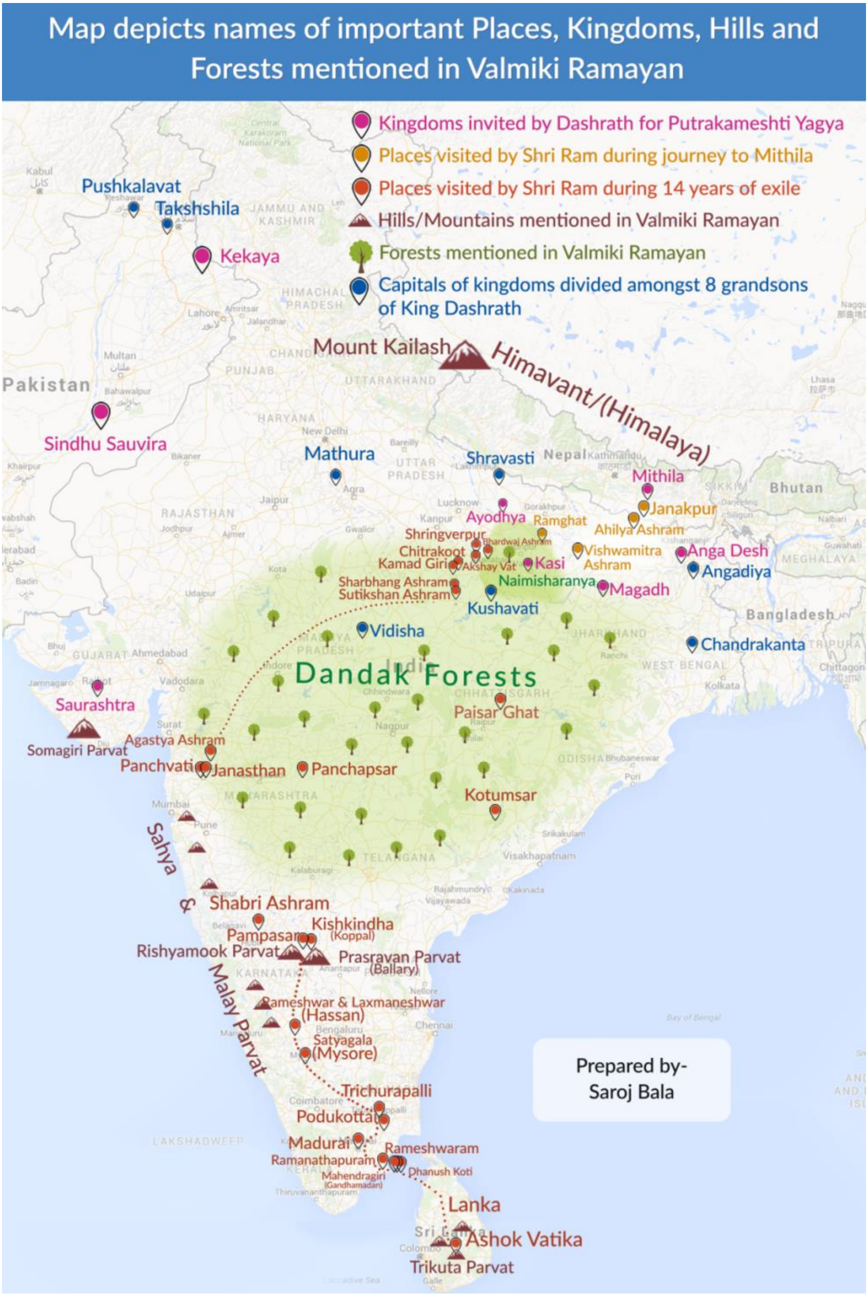
Map depicts names of important Places, Kingdoms, Hills and Forests mentioned in Valmiki Ramayan
Kingdoms invited by Dashrath for Putrakameshti Yagya
Places visited by Shri Ram during journey to Mithila
Places visited by Shri Ram during 14 years of exile
Hills/Mountains mentioned in Valmiki Ramayan
Forests mentioned in Valmiki Ramayan
Capitals of kingdoms divided amongst 8 grandsons of King Dashrath
Pushkalavat
Takshshila
Kekaya
Pakistan
Sindhu Sauvira
Mount Kailash
Himavant/(Himalaya)
Mathura
Shravasti
Nepal
Mithila
Bhutan
Janakpur
Ayodhya
Ramghat
Ahilya Ashram
Shringverpur
Bhardwaj Ashram
Chitrakoot
Kamad Giri
Akshay Vat
Kasi
Vishwamitra Ashram
Anga Desh
Angadiya
Naimisharanya
Magadh
Sharbhang Ashram
Sutikshan Ashram
Kushavati
Bangladesh
Vidisha
Chandrakanta
Dandak Forests
Saurashtra
Paisar Ghat
Somagiri Parvat
Agastya Ashram
Panchvati
Janasthan
Panchapsar
Kotumsar
Sahya & Malay Parvat
Shabri Ashram
Kishkindha (Koppal)
Pampasar
Rishyamook Parvat
Prasravan Parvat (Ballary)
Rameshwar & Laxmaneshwar (Hassan)
Satyagala (Mysore)
Trichurapalli
Podukottai
Madurai
Rameshwaram
Ramanathapuram
Dhanush Koti
Mahendragiri (Gandhamadan)
Lanka
Ashok Vatika
Trikuta Parvat
Prepared by-
Saroj Bala

Relevance of Ramayana in Modern Times

Vijay Kumar Mehta

Dr Vijay Kumar Mehta is currently a Professor of English and Dean, Arts and Humanities at Arni University, Himachal Pradesh. He completed his doctorate from APS University, Madhya Pradesh. His research interests are Creative Writing, Phonetics, Oriental & Feminist studies. He has fifty research papers and four books to his credit. The most popular book was Jean Sasson, A New Orientalist. He is a widely travelled scholar, delivering lectures at Salzburg, Austria, Hartford CT and Washington DC, USA.

Abstract

Even in the modern times for the people of all ages, Lord Rama is the superb role model, since He embodies the qualities of a fearless leader, a faithful husband, a devoted son & a brother, a noble soul and a fierce warrior. The Polity of Lord Rama is the rarest and ever new for all generations. George Kelley's C-P-C cycle- the Circumspection, Preemption and Control and Russian scholar, Mikhail Bakhtin' Dialogism find echoes in the Ramayana. The world, today, is experiencing a period where relationships based on economy, individualism, and greed is at the peak and the Ramayana is the nectar for all evils with pragmatic messages.

Introduction

In modern times, the old epics like The Mahabharata and The Ramayana have the unflinching relevance to transform the computerized life of the modern people. Our life is wrapped in the fulfillment of individual desires and our looks never go beyond our individual goals. Here we need the guidelines of the great people like Lord Ram or Lord Krishna. Lord Rama is the great role model for the present generation lost in the whirlwinds of materialism leading to chaos and confusions, illusions and delusions.

Concept of Maryada Purushottama

"Sacrifice is the great note in the songs of the Rishis. And this sacrifice is the two-fold, (i) Sacrifice of the Manas, i. e., the restraint or the sacrifice of the lower mind - the faculty of calculation and prudence; (ii) Sacrifice of the psychic nature or the desire principle. This two-fold sacrifice means the sacrifice of the "egoism", the sacrifice of "personality". Behind all personality stands the Super Purusha. The Light of Lord Rama, the Krishna Light, the Christ light, shines in glory, when the veils of "ego" are withdrawn."

Lord Rama's personality is circumscribed by the line of the Maryada Purushottama in propriety of His conduct, the peerless among men. His is the personality of elevated physical powers, great mental equilibrium, embedded with spiritual powers above the line of mankind to be the role model for every man in whirls of time and desires for the best in mankind.

Lord Rama made progress on all the three levels. His three-tier personality includes the circular, linear and spiral progress to stand as a colossus man in the tormented and suffering humanity. There is elevation on all the levels in lord Rama- elevation of physical prowess, mental elevation on ethical lines to serve the family norms with devotion and sincerity as a son, as a brother, as a husband, as a ruler to fight out evil in all its kind to make the society full of bliss and happiness. He is complete embodiment of circular, linear and spiral progress of the individual, the family and the society at large.

George Kelley's C-P-C Cycle and the Ramayana

When we see in depth, it is realized that George Kelly's C-P-C cycle is somewhat similar to some concepts in The Ramayana. 'George Kelley's C-P-C cycle- circumspection, pre-emption and control- cycle'2 have decidedly a similarity with certain decisions taken in The Ramayana. In truth, the same theory has been prevalent in this holy epic. In the battle-field on the sands of the Indian Ocean , the Palk Straits, against the King Ravana, Lakshmana got defeated again and again in the face of the Prince Meghnad or Indrajit.

In Ramayana, Indrajit was able to hit Lakshmana by his special weapon named Shakti. Due to this Lakshmana went very near to death. Now Lord Hanuman went to the Himalaya & brought Sanjivani. This way Lakshmana was saved. Secondly, there is one occasion where Indrajit fatally wounded Lakshmana, but that's an occasion where he fatally wounded both Rama and Lakshmana. As described in the Yuddha Kanda of the Ramayana, early on in the war, Sugriva's nephew Angada defeated Indrajit in battle, so Indrajit turned invisible and then launched numerous Nagastras (Naagpash weapons) at Rama and Lakshmana, which put them in a state very close to death.

Here, Lord Rama advises his brother, Lakshmana how to win the battle and that was this formula- the latter should circumscribe in all directions, pre-empt what can happen and then control his mind to set the target of his enemy, the Prince Indrajit/Meghnad. Following this advice of Lord Rama, Lakshmana fought with Indrajiit.

Indrajit fired a Yamastra (weapon of Yama god of death), but Lakshmana destroyed it with a Kuberastra (weapon of Kubera god of wealth). Then Lakshmana launched a Varunastra (weapon of Varuna the

ocean god), but Indrajit destroyed it with a Raudrastra (weapon of Shiva). Then Indrajit fired an Agneyastra (weapon of Agni the fire god), but Lakshmana destroyed it with a Saurenastra (weapon of Surya the sun god). Then Indrajit launched an Asurastra (weapon of the demons), but Lakshmana destroyed it with a Maheshwarastra (another weapon of Shiva). Finally, controlling his mind and looking at the target, Lakshmana realized that Indrajit is helpless and swiftly hit Indrajit with an Indrastra (weapon of Indra king of the gods), killed him. This was the result of Lord Rama's advice –circumscribe, preempt and control the mind to defeat the enemy. Hence, Lakshmana finally established his victory over the Prince Indrajit.

Theory of Dialogism and the Ramayana

The Theory of Dialogism by Bakhtin also finds its echo in The Ramayana. Mikhail Bakhtin is famous due to the concepts of dialogue and dialogism. 'Dialogue is primarily the basic model of language as discursive communication. A sequence of utterances is a dialogue of speaking subjects or voices that respond to former utterances and anticipate the future ones. On the other hand the dialogue doesn't determine the utterance only externally, but reaches also inside. There are three factors determining an utterance. First, there is the content with its objects and meaning (a theme being objective factor and an authorial concept a subjective factor). The second factor – constitutive for an utterance – is the expressiveness, the emotional-axiological relation of the speaker towards the content that could never be neutral – while, of course, always being appropriated form other socially specific utterances.'3 Bakhtin speaks mainly of the intonation and accent. On one hand, there is the expressiveness of an utterance as a function of an individual author that struggles with alien expressions on the same subject; therefore we could speak of a micro-dialogue within a single word (as an utterance). But on the other hand, we have to consider the typical expressions and intonations connected to particular types or groups of utterances (speech genres), which make them social, not individual. It is apparent that the utterance is dialogic, i.e. it is actually a dialogue of different voices confronting one another. It is not important whether an utterance is monologic or polyphonic – it is fundamentally dialogic. The third factor determining an utterance concerns the relationship of the speaker with the other and his utterances, the existing and the anticipated ones. An utterance transgresses its borders into past linguistic (semiotic, ideologic) formulations as their understanding, but also into the future ones by speaking to them; it tries to anticipate them – in a particular form and considering a particular addressee (who is not just an empty form of the structuralist ideal reader).

The Ramayana is the ancient Indian epic which echoes before us the Theory of Dialogism before when the two parties come into physical

combat. When Lord Rama approached Ravana's Kingdom Sri Lanka to bring back his wife, Sita from Ravana's possession, the former made use of the Theory of Dialogism.

Lord Rama sent his messengers- Lord Hanuman, the embodiment of knowledge and discipline. He has quite control on his mind and language. He exhibits his acumen of speech when he comes into contact with King Ravana.

Secondly, the Prince Angada goes to Lanka to have a dialogue with the King Ravana. The Two messengers of Lord Rama had a proper dialogue to convince the King Ravana to return Lady Sita honorably. This sets an example in the world how to proceed with the enemy and so is Theory of Dialogism in the great Epic Ramayana.

Polity of Lord Rama (Karma Theory, Strategy and Planning)

The colossus personality of Lord Rama overshadows all the characters in The Ramayana. Hanuman is the symbol of Evolution of Faith in The Ramayana. "When Lord Rama asks Hanuman, 'how do you look upon me?' The great monkey gives a three part answer, 'When I believe I am the body, then I am your faithful servant. When I know I am the soul, I know to be a spark of your eternal Light. And when I have the vision of truth, you and I, my Lord, are one and the same'.

With this answer he shows us three states we flow through in our spiritual quest. Many times we identify with the person, the body-mind-ego we think we are. At those times we can realize that we are here to do God's work, to serve that higher Self in us and in everything. This is the foundation of Karma Yoga, the yoga of the service."

Above all when we realize we are not separate from divine intelligence as we thought, that there is a higher knowing and presence working through us. We sense we are not separate from other beings and that our existence is an expression of the indescribable presence of God in us. This is where Bhakti and Raja Yoga open us further.

The most dramatic shift in our perception occurs when all veils lift and we have the vision of truth. Then we know that we are all that exists. We are the source; we are One. The Gyana yoga aims at this direct perception. What allows Hanuman to have this complete vision? It is faith which is the origin of five essential levels of spiritual practice. Hanuman is therefore the manifestation of faith that grants us strength, which transforms our memory and leads us through Samadhi (meditation) to perfect wisdom. Hence, The Ramayana at all levels-discipline & devotion(Shrada Yoga), evolution of Faith (Bhakti Yoga), service of the higher self (Karma yoga), the Gyana Yoga, the vision of truth and through all personages related to Lord Rama presents us the

right path in the dark world. This asserts the relevance of The Ramayana in the modern times.

References

1. Sadhu Vaswani, 'Science of Man-Culture' in East and West Series. Pune: April, 2018. p.16.
2. Kelley, George A- 'The Psychology of Personal Contructs', Vol. One. London: Routledge, 1991.
3. Bakhtin, Mikhail: Contemporary Vitalism. Trans. Charles Byrd. In: Burwick, Fredrick & Douglass, Paul (ed.): The crisis in modernism: Bergson and the vitalist controversy. Cambridge University Press, Cambridge, 1992; p. 76-97.

Mahatma and Rama – The Global Icons

K. Meena Rani

Ms. K. Meena Rani is a faculty of Sanskrit in the Department of Languages at Bharatiya Vidya Bhavan, Bhavan's Vivekananda College, Secunderabad. She has tremendous interest in Rigveda, Ramayana, Mahabharata and Bhagvadgita. She has also published several articles in international and national journals. Her unique way of analysing the concepts in different perspectives fetched her `Best paper award' in many conferences. She is routinely invited in talk shows conducted by Doordarshan channel on the occasion of festivals like Dussehara and Ramnavami.

Dedication and devotion towards the work makes people famous, ideal and global icons of the society. One such icon is Mahatma Gandhi. He grew up following the path of truth. Ahimsa (non-violence) was his most powerful weapon which he carried throughout his life. He did not like discrimination shown to his people by other countrymen. He fought for equal rights and respect for Indians. It is clearly evident from his patience, righteousness, truthfulness and love for people that he was greatly influenced by Lord Rama. Both Rama and Gandhi believed in self-sacrifice and satyagraha. They left their family and royal comforts for well-being of their people.

Keywords: Ahimsa, Satyagraha, patience, sacrifice, righteousness, truthfulness

Raajendram satya sandham, dasaratha tanayam syamalam santamurtim|
vande lokhabhi ramam raghukula tilakam, raghavam ravanaharim ||

Indian culture and heritage are depicted in Ramayana which is a true image of our society. It is not mere a story of great kings, sages, queens and rakshas (demons) but is also known as the aadikavayam, which is considered as the foremost epic for moral and ethical values. It also identifies and mentions duties of being a social one. It paves the path way for - *`Satyam vada, dharmam chara, aacharan maa pramadah, prajatantuhu maa vyavachetsihi'.*

`Ramavat vartitavyam na ravanavat' (to be like a Rama, not Ravana)

Rama always strived for a comfortable atmosphere even at the times of distress. He never created any inconvenience to the people he was surrounded with. Satyam, nyayam and sadacharam were his weapons. The base of the trivargaas - Dharamam, artham and kaamam is dharma. Any one going against dharma will face difficulties in their life, has been proved in many circumstances through-out Ramayana. One such

example is of Kaikeyi, who wished to seek throne for her son – Bharata, was robbed away with all the prosperity. Ravana to fulfil his lust, went against dharma, abducted Sita, could not keep up his royal and scholarly position, lost all his kingdom, wealth and family members. On the other hand, Rama followed the dharma, with his pleasing qualities and patience brought himself success and people closer to him. Hence it is proved that Rama was a symbol of truth and wellbeing. *`Rama vigrahavan dharmah', dharmo rakshati rakshitah'.* India is a land of such great purshottamas and sages. In due course of time such persons were regarded as God.

The weapons of great leaders of India are Sampradayam, shanti, sahanam, tyagam, manavata and satsheelata (Culture, peace, patience, sacrifice, humanity and truthfulness). These qualities were evident in Sri Krishna in the Dwapara Yuga, in Sri Rama in Treat Tioga and Mahatma Gandhi in kaliyuga. Dharmam is the daiva gunam and adharma is considered as the rakshasa guna. There is always a tug of war between dharma and adharma, daiva and asura. If our knowledge is used to follow the path of dharma then people will be designated as daivas and if the knowledge paves towards adharma then people become asuras. When the evil thoughts are in rise then the harmony is at stake. Mahapurushas with these weapons win over the people in the society. In Bhavadgita too we come across many such instances. *`Yada yada hi dharmasya glanirbhavati bharata, abhyuddhanam adharmasya tadatmanam srujamyaham'*. Such words motivate people with different attitudes. Our great epics have proved that humanity and selfless service will take us to greater heights. It is not limited to one caste, creed or community. Every human being who possess these desirable qualities and one who follow them at all times will definitely / undoubtedly considered as mahatma. Lord Rama and Mohandas Karmachand Gandhi are par excellence following these qualities.

Rama as an obedient son followed the father's principles, to fulfil his mothers' desire, without any hesitation or foreword went to exile. He took utmost care of his wife who followed him to vanavaasa leaving away the royal comforts. He proved to be a good brother when he gave princely advice and taught rajadharma to Bharata.

In kaliyuga we have come across people who possessed many evil qualities and with their ill behaviour created discomfort to the society with their selfish motto. On the other hand, we see people like Bapu, who proved himself to be a shantiduta and strived for India's freedom. In this process he was also designated as raashtrapita, father of the nation. Gandhi is undoubtedly influenced by the qualities of Sri Rama and many similarities can be listed between them.

When we go through the life history of mahatma, we see that he is like an open book, each page can be considered precious which are filled with his experiences. He never behaved as a ruler or a dictator, in turn his friendly nature and his good deeds / behaviour towards the common man made him mahatma. The positive qualities of prema, shanti and sahanam made mahatma designate as a great leader. Gandhi always wanted RamaRajya. He also believed that if the villages are developed then country too would progress. His motto was *`grama rajyam hi rama rajyam'*. He spread this message through-out the country where ever he travelled. If we observe closely, we can say that he followed Rama by all means. *`Raghupati Raghava raja ram, patita pavana sita ram, eeshwar allah tero naam, sabko sanmati de bhagvan'*. Following the concept of `Ram naam satya hai' he inspired the society. Gandhi's struggle for freedom of India is comparable to that of Rama's struggle for righteous path. The major incidents in the life of Lord Rama and Gandhi are summarized below:

- With mother's wish and father's order Rama kept all the luxuries aside and walked to the woods as a common man. He gained experiences and could meet learned people and well-wishers, he could free Ahilya from her curse. In this regard he became a maryadapurshotama.
- Mahatma while going abroad promised his mother to stay away from wine, woman and meat. When he returned home as a Barrister, he could not bare the sight of India being in the clutches of the Britishers.
- Sita's abduction by Ravana made Rama restless and when he set in search of Sita he met Hanuman, Sugriva, Shabari who indirectly gave him moral strength to kill Ravana and fred Sita.
- For Gandhi Britishers ruling India was painful sight. He followed the shanti marga and with the suggestions received from Nehru, Sardar Vallabh Bhai Patel, Sastry and Tilak could free India.
- Both sacrificed their life to free Bharata mata and Sita mata.
- Gandhi followed the path of Ahimsa.
- *`The essence of all religions is Ahimsa'*, these words are inscribed on the sculpture of Mahatma Gandhi in New Belgrade, Serbia.
- Having faith in God and believing that, *`God is the ultimate truth'* and through the path of ahimsa one can reach God, Gandhi motivated the residents of Sabarmati ashram on 13th March, 1927.
- Rama was born in a royal family, but he left the pleasures and luxuries to maintain harmony, brotherhood, nyaya, shanti, dharma wore the valkal outfits and preferred to sleep on the floor. He walked bare foot in search of Sita. He never thought that the vanaras were weak in any manner. He never had a second thought that they would fail to construct the bridge and cross the ocean. His mental strength

was moving towards victory. The same spirit can be observed in Gandhi.

- After Gandhi returned to India, the sufferings of common man were very evident. He motivated his wife to support him at every juncture and he went across India from place to place canvasing about cleanliness, to maintain peace and march towards victory over the Britishers.
- The year 1918, was the turning point in the life of the Indians. Untouchability which was prevailing in those days was minimised with the efforts of educating people by Gandhi.
- In the year 1919, when Gandhi saw the people of India fighting against the Rowlatt Act and killing Britishers, he very clearly passed the statement against the Indians and did not hesitate to say that himsa should not be followed for himsa. The problems should be tackled through ahimsa.
- In the year 1921, he became the leader for Indian national congress. He came to Andhra Pradesh and motivated the people not to accept foreign education and discouraged the honours given to him.
- An incidence of Chauri chaura (year 1922), where Gandhi spent two years in jail proves that a positive quality of a leader guides his followers towards victory. The trouble faced during the due course makes him stronger and finds place for his peoples' safety. This very feeling made Gandhi surrender to the Britishers.
- Having come to know about Sri Rama's exile, Bharata went with his family, court men and pleaded him to come back to Ayodhya. Rama successfully took control of Bharata's emotions and taught him the Rajadharma. He was even successful in removing the ill feeling towards his mother.
- Vibhishana was the brother of his very enemy Ravana. When Vibhishana came to Rama for shelter he took him to his arms with great love and affection. He made him believe that even while dealing with enemies one could follow the path of shanti and ahimsa.
- On 21st March 1930, Gandhi started his pada yatra from Sabarmati to Dandi. He reached Dandi on 6th of April 1930. He walked a distance of 388 kms with ease for satyagraha.

✓ The special mention here is the love and affection towards siblings and respect towards parents and elders made Rama and Gandhi distinguish from the rest.
✓ Family relations and the bondage made them gain moral support which in turn gave them strength to fight for the good / noble cause.
✓ The belief / faith in themselves made people attract towards them.

- ✓ They were successful in getting people close to them in spite of their caste and creed. The love and affection showered on them made them their followers.

Conclusion

The life of Lord Sri Rama and Mahatma Gandhi gives us strength to follow the path of righteousness, ahimsa, truthfulness and patience. Having known the facts of life and the hardships in the life of common people, Indians tried to follow the path of dharma. If we are successful in inculcating the good behaviour of Rama, the braveness that of Sita and the path of ahimsa said by Gandhi then India will surely make a place in the world.

Bibliography

1. Srimad Valmikiya Ramayanam – Geeta Press
2. 100 faces of Gandhiji – Bhavans publication
3. Gandhiji's concept of value-based living – K. S. Narayanaswamy
4. Gandhi – for 21st century service before self – Bharatiya Vidya Bhavan
5. The Ramayana Polity – P. C. Dharma

Jatayu and His Lessons on Selfless Service

Balakrishnan Muniapan

Dr. Balakrishnan Muniapan is an international award winning lecturer in HRM. He is currently an Assoc. Prof in HRM at Wawasan Open University, Penang, Malaysia & a Senior HR Consultant with Praxis Skills Training & Consultancy in Malaysia. He has been a Visiting Professor in HRM & an external examiner for PhD thesis for universities within Asia and Africa. Dr Bala has presented on HRM at various conferences. He has vast experience in facilitating HR and leadership training for hundreds of organizations within Asia.

There are many lessons in all aspects of life that can be learnt from the many characters from the Ramayana apart from Lord Rama, Sita, Lakshmana, Bharatha, Satrughana, Dasaratha, Sumitra, Guha, Sugriva, Hanuman, Angada, Sabari and even from characters such as Ravana, Mandodhari, Kumbhakarna, Vibhisheena, Soorpanaka, Manthara and also Marecha. All these lessons deal with the different paths these characters have taken, either from the path of dharma or adharma and the consequences of taken such paths in their life.

One of the least commented characters in the Ramayana, who have played a significant role, is Jatayu. Jatayu was a very old bird, but he was not an ordinary bird, he was like a sage, fully acquainted with the rules of dharma. The Valmiki Ramayana (Aranya Kanda, Chapter 14) describes his origin.

Vinita, the wife of Kashyapa had two sons, Garuda and Aruna. Garuda became the vehicle of Lord Vishnu, while Aruna became the charioteer of Surya (the sun God). Aruna, also called Anuuru, for he is a thigh-less being, is the charioteer of seven-horse chariot. The seven horses of Sun's chariot are the seven colors as in a rainbow. Aruna had two sons, namely Sampati and Jatayu.

Once in their childhood, Sampati and Jatayu decided to reach to the sun. So they began to fly higher and higher. But very soon, Jatayu was not able to tolerate the heat of the sun and was falling down. Hence, his elder brother Sampati spread his wings over to protect the younger Jatayu. Sampati did save his younger brother but got his own wings burnt by the heat and he fell at the seashore. Later Jatayu came to stay in Panchavati, and when King Dasharatha came to the forest for hunting, he met Jatayu and made friends with Jatayu.

When Lord Rama, Sita and Lakshmana were in Panchavati, they came into contact with Jatayu. When Lord Rama questions about his identity,

Jatayu narrates the creation of animal species along with humans, and informs Lord Rama that he is a friend of King Dasharatha and would like to help Lord Rama in exile (Ref: Valmiki Ramayana, Aranya Kanda, Chapter 14).

After the Soorpanaka incident, the elimination of Trishira, Dhushana and Khara, and the lure of the golden deer (Marecha), Ravana came to abduct Sita. When Jatayu saw Ravana abducting Sita, he decided to help Sita and fight with Ravana. He saw that Sita was in trouble and she was calling for help, and no one else was around to help Sita. Jatayu did not hesitate a moment to provide assistance, Jatayu knows very well that he will not be able to defeat Ravana; yet Jatayu fought with Ravana and gave him a good run for his money.

Jatayu was not afraid of Ravana's strength and obstructed the path of Ravana and he made it so difficult for Ravana for a while. Jatayu decided to save Sita from the clutches of Ravana at any cost, he attacked Ravana with his sharp claws and hooked beak. His sharp nails and the beak tore flesh from the body of Ravana. Ravana, taking up a sword, chopped and chopped and somehow severed the wings and limbs of Jatayu and defeated Jatayu.

As Lord Rama and Lakshamana met the dying Jatayu in their search for Sita, Jatayu was holding his breath, and informed them of the fight between him and Ravana and told them that Ravana had gone towards the southern direction. Jatayu also told Lord Rama and Lakshamana that he could not render assistance to the best of his ability. But based on his knowledge of scriptures, the time in which Sita was abducted by Ravana was an auspicious time. Therefore, whatever lost in that time, will be gained (In which spell of time Ravana has gone taking away Sita, that spell is named as Vinda, if any riches are lost during that spell, the original possessor of those riches will repossess them very quickly, oh, Kakutstha, he that Ravana is unmindful of that fact and stole Sita only to lose her – Ref: Valmiki Ramayana, Aranya Kanda, Chapter 68, Verse 12). Ravana, even though was an astrologer, and though he is said to have written an astrological treatise called Ravana Samhita (a compilation of secrets and rules revealed by Lord Siva himself to Ravana), he did not care or bother about it. Jatayu, even in that condition tried to serve Lord Rama by uttering sweet words to pacify Lord Rama.

This heroic service of Jatayu brought tears to the eyes of the Lord Rama; the Lord cried with tears of gratitude seeing this act of pure, selfless devotion of Jatayu, a mere bird. Jatayu gave up his life in the loving embrace and had the rare honor of dying on the lap of Lord Rama, and the Lord considered Jatayu as equal to his father, and performed the last rites of Jatayu, while Lord’s own father Dasharata was not favored with this blessing.

Jatayu had actually won. He was victorious because it is not the result of the endeavor (or fruit) but his beautiful effort (Ref: Bhagavad Gita, 2.47). He had all the disqualifications to combat Ravana, yet with all the disqualifications, he rendered service and tried your best for dharma to win. Thus Jatayu was a great hero who fought for the purpose of dharma till his last breath.

In Indonesia, a country where the Ramayana influence in their tradition and culture is (still) sustaining; the service of Jatayu is recognized. Jatayu Airlines (Jatayu Gelang Sejahtera) was an airline based in Indonesia (closed in 2007). Jatayu's brother Sampati was also recognized for his services as Sempati Air was also operating and was closed in 1998 after the fall of Suharto regime. At present Garuda (also served Lord Rama) is the airline operating in Indonesia.

Just like the example shown by Jatayu, the truest kind of leadership demands service, sacrifice, and selflessness. Selfless service can be defined as service which is performed without any expectation of result or award for the person performing it. Selfless service was rendered by Jatayu to Lord Rama to the extent of sacrificing his own life. Such services can be performed to benefit other living beings including human beings, society and country. Serving others is considered an essential practice of karma yoga indirectly serving God and living a divine life that is a benefit to others.

Selfless service is not thinking less of our self, but thinking of our self-less. To truly perform selfless service, we must act without any desire for a reward or recognition. It is to be performed freely, motivated by an innate desire to help another living being. At the time of performing it, we have to forget our own needs and wants, to help someone else. By serving selflessly, we expand our hearts from our own self to our family, to the community, our country, the world, and ultimately, the cosmos. Selfless service comes from an understanding that we are all members of one large family - Vasudhaiva Kutumbakam.

Selfless service is said to be the pinnacle of leadership, the ultimate trait of great leadership. No other act will inspire followership like total devotion and selfless service to people and organizations. It simply means, to lead is to serve; nothing more, nothing less. It was a great lesson taught to all of us on selfless service by Jatayu.

Pearls of Ramayana
रामायण के मोती

प्रभु श्री राम, रामायण के अन्य पात्रों व विविध प्रसंगों पर आधारित 28 आलेखों का संग्रह है – 'Pearls of Ramayana रामायण के मोती'। महर्षि वाल्मीकि ने सर्वप्रथम राम कथा को काव्य रूप में लिखा जो 'रामायण' के नाम से विश्व का आदिकाव्य बना। रामायण से प्रेरित होकर अनगिनत विद्वानों ने अपनी-अपनी मति अनुसार राम कथा का वर्णन किया है। 'Pearls of Ramayana रामायण के मोती' 5 देशों (भारत, यूनाइटेड किंगडम, यू.ए.ई., मलेशिया और यू.एस.ए.) में बसे विद्वतगण द्वारा राम कथा के वर्णन का एक छोटा-सा प्रयास है। इससे यह बात तो सिद्ध होती है कि रामायण मात्र भारत की ही नहीं अपितु विश्वव्यापी है।

इस संग्रह में 28 आलेख हैं, जिनका चयन सम्पादक मण्डल ने बड़ी सावधानी और विवेक के साथ किया है। इन में 16 हिन्दी में और 12 अंग्रेजी में हैं। इन आलेखों के चयन और संकलन की प्रक्रिया में जिस श्रद्धा, भक्ति तथा आनंद के भाव की जो अनुभूति हमें हुई है, आशा है कि वही भाव पुस्तक पढ़ने के बाद पाठकों में भी स्पंदित होंगे। 'Pearls of Ramayana रामायण के मोती' आपके हाथ में सौंपते हुए अपार हर्ष के साथ हम आशा करते हैं कि सुधीगण अपने विचारों से हमें अवगत कराएँगे।

US $10.00

ISBN 978-1-7362088-1-6
9 781736 208816 >